राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

मार्च - 2024

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

बिल गेट्स को कीस मानवतावादी पुरस्कार 2023

विश्व स्तर पर जीवन को बेहतर बनाने के उनके असाधारण प्रयासों का जश्न है जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए अधिक न्यायसंगत ...

चंदे के धंधे पर सुप्रीम कोट की रोक

कॉरपोरेट घरानों का धंधा, राजनीतिक दलों को चंदा

पी.एम.मोदी के सचिव डॉ. पी.के. मिश्र का कीट-कीस दौरा

जहां उन्होंने छात्रों के साथ एक इंटरैक्टिव सत्र किया जिसमें २०४७ तक प्रधानमंत्री के विकसित भारत के दृष्टिकोण को प्राप्त करने में शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया गया।

स्वच्छ तन, स्वच्छ मन से बनता - स्वच्छ समाज।

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

• वर्ष : 8 • अंकः 12 • मुंबई • मार्च-2024

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक

नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक

मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक

भाग्यश्री कानडे, तोषिर शुक्ला, संतोष मिश्रा, जेदवी आनंद

ब्यूरो चीफ

ओडिशाः अशोक पाण्डेय

उत्तर प्रदेशः विजय दूबे

पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा

ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट

राजेश अय्यर,शैफाली,

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in, mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को. ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

बॉम्बे HC: लोगों का तांत्रिकों के पास जाना दुर्भाग्यपूर्ण	05
Electoral Bonds: कॉरपोरेट घरानों का धंधा,राजनीतिक दलों को चंदा	06
११४ मार्च का 'किसान महापंचायत' ४०० से अधिक किसान संघ लेंगे भाग	16
पीएम चुनने के लिए पाकिस्तान ने खर्च किए १००० करोड़!	18
पकवान	20
शतरंज के अद्भुत सच...	23
राशिफल	24
मिनी गोवा और मध्य प्रदेश के स्विट्जरलैंड कहे जाने वाला	26
सिनेमा	28
बिल गेट्स को प्रदान किया गया सम्मानजनक कीस मानवतावादी पुरस्कार...	30
'विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण': पी के मिश्र...	32
सांस्कृतिक, धार्मिक और पारंपरिक त्योहार होली...	34
मानपत्र	40
नसीब का लिखा... (कथा सागर)	51
मसालों की रानी इलाइची	56

सुविचारः

संकोच युवाओं के लिए एक आभूषण है, लेकिन बड़ी उम्र के लोगों के लिए धिक्कार.

संपादकीय

'भारत रत्न' की राजनीति

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस वर्ष अब तक पांच महान हस्तियों को 'भारत रत्न' से सम्मानित करने की घोषणा कर चुके हैं। पीएम मोदी ने सबसे पहले बिहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देने का ऐलान किया था, उसके बाद चार और नाम इस लिस्ट में जुड़ गए। इनमें मोदी के राजनीतिक गुरु लालकृष्ण आडवाणी के साथ-साथ पूर्व प्रधानमंत्रियों और नरसिम्हा राव के भी नाम हैं। वहीं, कृषि क्षेत्र में क्रांति के नायक रहे वैज्ञानिक को भी भारत से नवाजे जाने का ऐलान किया गया है। लोकसभा चुनावों के माहौल में भारत रत्न के लिए इन शख्सियतों के चुनाव के पीछे की वजहें भी खंगाली जाने लगी है। सच भी है कि सियासत में अक्सर हर कदम बहुत दूर की सोचकर उठाया जाता है। विभिन्न राजनीतिक पृष्ठभूमि और क्षेत्रों के नेताओं और व्यक्तित्वों को सम्मानित करके, मोदी सरकार ने समाज के विभिन्न वर्गों में अपनी अपील को और व्यापक आधार देने की कोशिश की है। मोदी सरकार यह जता रही है कि उसे इन नेताओं के योगदान का महत्व समझ आता है जिन्होंने भारत की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। निश्चित रूप से मोदी सरकार का यह रवैया मतदाताओं को दिलों को छूएगा।

भाजपा इन घोषणाओं से लोकसभा चुनाव प्रचार के दौरान यह दंभ भरेगी कि वह राष्ट्र के नायकों को सम्मान देने में तेरा-मेरा की राजनीति नहीं करती है बल्कि इससे ऊपर उठकर वह सबको उचित सम्मान देती है। भाजपा नेता जमकर प्रचार करेंगे कि राष्ट्र का भला करने वाल बीजेपी विरोधी ही क्यों नहीं हों, उनके योगदान को स्वीकार करने की माद्दा उसमें है। इससे भाजपा राष्ट्रवाद के अपने एजेंडे को और मजबूती दे सकती है। भारत की हरित क्रांति के जनक एमएस स्वामीनाथन को शामिल करके सरकार कृषि विकास और खाद्य सुरक्षा के महत्व पर अपनी नैरेटिव को मजबूत करेगी। ये मुद्दे भारतीय आबादी के एक बड़े हिस्से की आजीविका के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भारत रत्न की घोषणाओं से उत्तर और दक्षिण भारत के बीच दरार डालने की कोशिशों पर भी पानी फेरा है। उन्होंने लालकृष्ण आडवाणी, कर्पूरी ठाकुर और चौधरी चरण सिंह के जरिए उत्तर भारत को साधा है तो दो महान शख्सियतों नरसिम्हा राव और एमएस स्वामीनाथन के जरिए दक्षिण को भी बड़ा और स्पष्ट संदेश दिया है। पिछड़ा वर्ग बिहार के मतदाताओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अनुमान है कि वे राज्य की आबादी का ४५% से अधिक हैं। जननायक कर्पूरी ठाकुर देश में पहली बार पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण की व्यवस्था करके सामाजिक न्याय को नई दिशा दी थी।

सीएम नीतीश कुमार के फिर से एनडीए में आने और कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न दिए जाने के संयुक्त प्रभाव का आकलन करें तो ऐसा लगता है कि लोकसभा चुनाव में बीजेपी ने बिहार में एक बड़े मतदाताद वर्ग पर पासा फेंक दिया है। जाट हालांकि कुछ क्षेत्रों में विशेष रूप से प्रभावशाली हैं, बड़े कृषि समुदाय का हिस्सा हैं जिनकी उत्तर प्रदेश के मतदाताओं में बड़ी भागीदारी है। जाटों सहित किसान, यूपी में एक महत्वपूर्ण वोटर बेस हैं, खासकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश की लोकसभा सीटों पर ये जीत-हार का निर्णय करने की स्थिति में हैं। तेलंगाना (१७), आंध्र प्रदेश (२५)प्रभावित समूह/जातिः विभिन्न समुदायों में व्यापक अपीलमतदाता वर्गः राव के आर्थिक सुधारों और नेतृत्व की पूरे देश में अपील है, लेकिन उनका प्रत्यक्ष प्रभाव किसी विशिष्ट जाति या समुदाय पर ध्यान केंद्रित किए बिना तेलंगाना और आंध्र प्रदेश में सबसे अधिक गहराई से महसूस किया जाता है। उनकी विरासत सीधे तौर पर किसी विशेष जाति या समुदाय को प्रभावित नहीं कर सकती है, लेकिन आर्थिक सुधारों और अच्छे शासन-प्रशासन की चाह रखने वाले मतदाताओं के व्यापक स्पेक्ट्रम को आकर्षित कर सकती है।

विभिन्न राज्यों में जिनमें तमिलनाडु (३९), पंजाब (१३), और हरियाणा (१०) उल्लेखनीय हैं। किसान और कृषि समुदायमतदाता वर्गः पंजाब, हरियाणा और तमिलनाडु जैसे राज्यों में मतदाताओं का एक बड़ा हिस्सा किसान हैं, हालांकि उनकी हिस्सेदारी के प्रतिशत अलग-अलग हैं। हरित क्रांति के पुरोधा स्वामीनाथन को भारत रत्न देने के फैसले का देशभर के किसान स्वागत करेंगे और भाजपा यह दावा कर सकेगी कि उसकी सरकार का किसानों की जीवन में सुधार के लिए प्रतिबद्ध है। आडवाणी का असर पूरे भारत में है, क्योंकि वो बीजेपी और सरकार में राष्ट्रीय स्तर के नेता रहे हैं। आडवाणी को भारत रत्न देने का असर किसी खास जाति या समुदाय के मुकाबले राष्ट्रवाद और हिंदुत्व में यकीन रखने वाले बड़े वर्ग पर पड़ेगा। इससे बीजेपी के पुराने समर्थकों की नाराजगी भी दूर होगी जिन्हें लगता है कि मोदी-शाह की बीजेपी ने आडवाणी को नजरअंदाज कर दिया गया है।

इन महान विभूतियों को भारत रत्न देना ऐसा मास्टर स्ट्रोक है जिससे बीजेपी को दोहरा लाभ पहुंचाएगा। एक तो वह खुद के उदार हृदय होने का ढिंढोरा पीटेगी ही, विपक्ष भी बीजेपी के इस कदम की तारीफ भले नहीं करे, कम से कम वो विरोध तो नहीं ही कर पाएगा। खासकर नरसिम्हा राव को भारत रत्न देने के फैसले से कांग्रेस के लिए बड़ी उलझन की स्थिति पैदा हो गई। गांधी परिवार का नरसिम्हा राव से छत्तीस का आंकड़ा रहा लेकिन आज की बदली परिस्थितियों में वह राव पर बचाव की मुद्रा में आ गई है। आडवाणी के जरिए राष्ट्रवाद और हिंदुत्व को साधा है तो एमएस स्वामीनाथन और चौधरी चरण सिंह के जरिए किसानों पर डोरे डाले हैं। वहीं कर्पूरी ठाकुर के जरिए देश के एक बड़े मतदाता वर्ग ओबीसी को बीजेपी के पाले में बनाए रखने की कवायद की गई है। नरिसम्हा राव को भारत रत्न देने के पीछे बीजेपी का मकसद दक्षिण के दुर्ग को साधना तो है ही, कांग्रेस पार्टी की फजीहत बढ़ाना भी है। ■

बॉम्बे HC: लोगों का तांत्रिकों के पास जाना दुर्भाग्यपूर्ण

४५ साल के तांत्रिक ने इलाज के नाम पर दिमागी रूप से कमजोर ६ लड़कियों के साथ यौन शोषण किया था। साथ ही उनके माता-पिता से १.३० करोड़ रुपए लिए थे।

मुंबई. यह हमारे समय की एक दुर्भाग्यपूर्ण सच्चाई है कि लोग अपनी समस्याओं के समाधान के लिए तांत्रिकों/बाबाओं के दरवाजे खटखटाते हैं. मानसिक रूप से विक्षिप्त छह लड़कियों के यौन उत्पीड़न के लिए एक व्यक्ति की सजा को बरकरार रखते हुए बॉम्बे हाईकोर्ट ने यह बात कही. उच्च न्यायालय ने यह आदेश पिछले महीने दिया था, लेकिन शनिवार को उपलब्ध कराए गए अपने फैसले में, हाईकोर्ट ने तांत्रिक होने का दावा करने वाले ४५ वर्षीय व्यक्ति को दी गई आजीवन कारावास की सजा को भी बरकरार रखा.

न्यायमूर्ति रेवती मोहिते डेरे और न्यायमूर्ति मंजूषा देशपांडे की खंडपीठ ने कहा कि यह 'अंधविश्वास का एक विचित्र मामला' है और

आरोपी किसी भी तरह की नरमी का हकदार नहीं है. अभियोजन पक्ष का केस यह है कि आरोपी, जो एक तांत्रिक/बाबा होने का दावा करता है, ने छह मानसिक रूप से विक्षिप्त लड़कियों को ठीक करने के बहाने उनका यौन शोषण किया. आरोपी ने कथित तौर पर लड़कियों के माता-पिता का आर्थिक रूप से शोषण किया और नाबालिगों को ठीक करने की आड़ में उनसे १.३० करोड़ रुपये लिए.

इस संबंध में पहली सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) २०१० में दर्ज की गई थी. एक सत्र अदालत ने २०१६ में उस व्यक्ति को दोषी ठहराया और उसे शेष जीवन के लिए आजीवन कारावास की सजा सुनाई. व्यक्ति ने सत्र अदालत के आदेश को चुनौती देते हुए उच्च न्यायालय में अपील दायर की. उच्च न्यायालय ने यह देखते हुए कि यह ऐसा मामला नहीं है जहां सजा कम की जानी चाहिए, आरोपी की अपील खारिज कर दी और दोषसिद्धि और सजा को बरकरार रखा.हाईकोर्ट ने कहा, 'सबूत ठोस हैं और पीड़ित भी ज्यादा हैं, और ऐसे में सजा उनके अपराधों के अनुरूप होनी चाहिए.' हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा, 'यह अंधविश्वास का एक विचित्र मामला है. यह हमारे समय की एक दुर्भाग्यपूर्ण वास्तविकता है कि लोग अपनी समस्याओं के समाधान के लिए कभी-कभी तथाकथित तांत्रिकों/बाबाओं के दरवाजे खटखटाते हैं और ये तथाकथित तांत्रिक/बाबा लोगों की असुरक्षा और अंधविश्वास का फायदा उठाते हैं. ये लोग और उनका शोषण करते हैं.' इसमें कहा गया है कि तथाकथित तांत्रिक/बाबा न केवल उनसे पैसे ऐंठकर उनकी कमजोरियों का फायदा उठाते हैं, बल्कि कई बार समाधान देने की आड़ में पीड़ितों का यौन उत्पीड़न भी करते हैं. पीठ ने अपने आदेश में कहा कि अभियोजन पक्ष ने पीड़ितों और उनके माता-पिता के साक्ष्य के माध्यम से पीड़ितों पर यौन हमले में आरोपियों की संलिप्तता को विधिवत साबित कर दिया है.

Electoral Bonds:
कॉरपोरेट घरानों का धंधा, राजनीतिक दलों को चंदा

SBI ने चुनावी बॉन्ड की जानकारी देने के लिए ३० जून तक मांगा समय

पांच साल पहले जिस चुनावी बांड को चुनावी फंडिंग में पारदर्शिता लाने और चुनावों में कालाधन के इस्तेमाल पर रोक लगाने के लिए लाया गया था, देश की सबसे बड़ी अदालत ने उसे असंवैधानिक घोषित करते हुए उस पर रोक लगा दी है। दरअसल चुनावी बांड के विरोधियों को उसे लेकर सबसे बड़ी आपत्ति यह थी कि बांड के जरिए राजनीतिक दलों को दान देने वाले लोगों के नाम का खुलासा नहीं हो रहा था। चुनावी बांड की अधिसूचना इसके लिए दानदाता को अपनी गोपनीयता की सहूलियत देती थी। चुनावी बांड देने वाले का नाम सूचना के अधिकार के दायरे से भी बाहर था। ऐसे में आरोप लगता था कि चुनावी बांड के जरिए राजनीतिक दलों को चंदा देने वाले दरअसल बांड के रूप में रिश्वत दे रहे हैं और अपने कारोबारी या औद्योगिक हितों के लिहाज से बदले में सत्ताधारी दल से पसंदीदा नीतियां बनवा रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट के रोक लगाने के बाद चुनावी बांड विरोधियों का यह कहना कि अब पता चल पाएगा कि बांड के जरिए दान देने वाले लोग सचमुच दान दे रहे थे या फिर अपने हितों की रक्षा की भी मांग कर रहे थे। गांधीजी ने स्वाधीनता आंदोलन के दौरान आम लोगों से चंदा लेने की शुरूआत की। हालांकि उस दौर में भी बिड़ला और बजाज जैसे औद्योगिक घराने कांग्रेस के बड़े दानदाता थे। लेकिन आम लोगों से चंदा लेने के पीछे भावना यह थी कि लोग इसके जरिए आंदोलन से तो जुड़ेंगे ही, उनका नैतिक दबाव आंदोलन कर रही कांग्रेस पर भी रहेगा। इसलिए वह लोकविरोधी फैसले नहीं ले पाएगी। आजादी के बाद के दिनों में चाहे समाजवादी धारा के दल हों या जनसंघ या फिर वामपंथी, सब क्राउड फंडिंग या आम लोगों के जरिए ही धन जुटाते थे। लेकिन जैसे-जैसे भारत में औद्योगीकरण बढ़ता गया, औद्योगिक घराने भी चुनावी चंदा देने में आगे रहने लगे। निश्चित तौर पर इसका सबसे ज्यादा फायदा सत्ताधारी दलों को ही हुआ। एक दौर तक देश और राज्यों की सत्ता के लिए अपरिहार्य बनी रही कांग्रेस को इसीलिए सबसे ज्यादा चुनावी चंदा मिलता रहा।

चुनावी बांड को लेकर जारी घमासान के बीच पता चला है कि इसके जरिए सबसे ज्यादा दान भारतीय जनता पार्टी को मिला है। भाजपा को सबसे ज्यादा धन मिलना आजादी के बाद से ही जारी परिपाटी का विस्तार कहा जा सकता है। 'एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स' के मुताबिक विगत पांच वर्षों में चुनावी बांड के जरिए सबसे ज्यादा ६,५६६ करोड़ का दान भारतीय जनता पार्टी को मिला है। दूसरे नंबर पर कांग्रेस है, जिसे १,१२३ करोड़ रुपए का दान मिला। तीसरे नंबर तृणमूल कांग्रेस है, जिसे १०९३ करोड़ रुपए की रकम मिली। ७७४ करोड़ रुपए के दान के साथ इस सूची में बीजू जनता दल तीसरे नंबर पर है। जबकि चौथे नंबर पर डीएमके है, जिसे ६१७ करोड़ रुपए मिले हैं। जाहिर है कि जिसके पास जितनी सत्ता है, उसी अनुपात में उसे चंदा मिला है। इसमें दो

राय नहीं है कि मौजूदा चुनावी परिदृश्य में राजनीति शाहखर्ची का पेशा हो गया है।

अकूत धन के बिना चुनाव लड़ना और राजनीतिक दल चलाना आसान नहीं है। शायद इसीलिए अब

चुनावी प्रचार अभियान के लिए मीडिया ने कारपोरेट बमबारी का विशेषण दिया है। जाहिर है कि यह खर्च कारोबारी और औद्योगिक घरानों से ही आ सकता है। आम जनता से मिलने वाले चंदे या दान से राजनीति करना आज के दौर में मुश्किल है। यही वजह है कि चुनावों में काला धन का इस्तेमाल बढ़ा है। चुनाव आयोग की तमाम सख्ती के बावजूद अब भी चुनावों में काले धन का भरपूर इस्तेमाल होता है। जाहिर है कि जो चुनावी चंदा देगा, वह अपने हित की बात तो करेगा ही। चुनावी बांड को खारिज किए जाने के बाद गैर भाजपा दलों ने भाजपा को कटघरे में खड़े करने की कोशिश जरूर की है। राहुल गांधी ने भी ट्वीट करके हमला बोला है लेकिन सवाल यह है कि क्या उनके हाथ पाकसाफ है? सवाल यह भी है कि क्या वे अगर भाजपा की तरह प्रभावी होते और सत्ता में उनकी हनक होती तो क्या वे आम लोगों के चंदे के आधार पर ही अपनी राजनीति करते? निश्चित तौर पर इसका जवाब ना में है।

बेशक चुनाव बांड को सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया है, लेकिन यह भी सच है कि जिस तरह की राजनीति आज के दौर में हो रही है, जिस तरह से अर्थ तंत्र का बोलबाला बढ़ा है, चुनावी बांड ना सही किसी और रूप में धन तो राजनीति की दुनिया में आएगा ही।

क्या होता है चुनावी बांड? सबसे पहले जानते हैं कि आखिर क्या होता है चुनावी बांड? चुनावी बांड साल में चार बार यानी जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्टूबर में जारी किए जाते हैं। इसे जारी करने का अधिकार देश के सार्वजनिक क्षेत्र के सबसे बड़े बैंक स्टेट बैंक ऑफ इंडिया को ही है। स्टेट बैंक अपनी चुनी हुई २९ शाखाओं के जरिए इसे जारी करता है जिनमें दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, गांधीनगर, पटना, रांची, भोपाल, जयपुर और बेंगलुरू स्थित शाखाओं में ही जाकर इसे खरीदा जा सकता है। चुनावी बांड ऑनलाइन भी खरीदा जा सकता है। चुनावी बांड को खरीदने का अधिकार लोक प्रतिनिधित्व कानून १९५१ की धारा २९ ए के तहत रजिस्टर्ड राजनीतिक दलों को ही है। चुनावी बांड खरीदने के लिए राजनीतिक दलों के लिए एक और शर्त है। वह शर्त है कि उन्हें पिछले लोकसभा या विधानसभा चुनाव के दौरान कम से कम एक फीसद वोट हासिल किए हों। यह बांड खास तरह से काम करता है। चुनावी बांड जिन महीनों में जारी होता है, उसके जारी होने के दस दिनों के भीतर कोई कॉरपोरेट, व्यक्ति या व्यक्तियों का समूह इसे खरीद सकता है। इन बांड की वैधता पंद्रह दिनों की होती है। ये बांड एक हजार, दस हजार, एक लाख, दस लाख और एक करोड़ मूल्य के होते हैं। बांड को नगद नहीं खरीदा जा सकता। इसके लिए खरीदने वाले को अपना केवाईसी भी कराना होता है। कालेधन के खिलाफ आया था चुनावी बांड अक्सर चुनावों की फंडिंग में अवैध धन के इस्तेमाल का आरोप लगता रहा है। इसे ही सफेद बनाने के लिए साल २०१७ में मोदी सरकार ने चुनावी बांड जारी करने का फैसला किया था। लेकिन इस योजना को १४ सितंबर २०१७ को सुप्रीम कोर्ट में चुनाव सुधारों की दिशा में काम करने वाले संगठन 'एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स' (एडीआर) ने चुनौती दी थी। एडीआर की इस याचिका पर तीन अक्टूबर २०१७ को देश की सबसे बड़ी अदालत ने चुनाव आयोग और केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया। इसी दिन जया ठाकुर और सीपीआई एम ने भी इस याचिका में खुद को शामिल करने की अर्जी लगाई। इस बीच २ जनवरी २०१८ को केंद्र सरकार ने इस योजना को अधिसूचित करके लागू कर दिया। शुरू में बांड की बिक्री के लिए ७० दिनों की मियाद रखी गई थी, जिसे ७ नवंबर २०२२ को बढ़ाकर ८५ दिन कर दिया गया। इस बीच १६ अक्टूबर २०२३ को मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने इस याचिका को पांच सदस्यीय संविधान पीठ को सुनवाई के लिए भेजा। इसके पंद्रह दिन बाद पीठ

ने याचिका पर सुनवाई की। लगातार तीन दिनों की सुनवाई के बाद दो नवंबर २०२३ को पीठ ने अपना फैसला सुरक्षित रख लिया और १५ फरवरी २०१४ को अपना फैसला सुनाया। फैसले में चुनावी बांड को सर्वोच्च अदालत ने असंवैधानिक घोषित करते हुए उस पर रोक लगा दी है।

चुनाव आयोग ने भी इस योजना की खामियों को गिनवाते हुए कहा है कि इस योजना के जरिए राजनीति और धन के बीच सांठगांठ को बढ़ावा मिलता है। देखने की बात यह है कि आर्थिक उदारीकरण के दौर में जिस तरह जीवन के हर क्षेत्र पर पैसे का बोलबाला बढ़ा है, उसकी वजह से पैसे के राजनीतिक इस्तेमाल और राजनीति पर पैसे का प्रभाव जरूरी बुराई बन चुका है। अमेरिका के राष्ट्रपति चुनावों को देखिए। वहां ताकतवर उम्मीदवार वही माना जाता है, जिसे सबसे ज्यादा चंदा मिलता है।

चंदा वहां आम वोटर और समर्थक भी देते हैं, लेकिन चंदे का बड़ा हिस्सा कारपोरेट घराने ही देते हैं। जिसे ज्यादा पैसा मिलता है, उसे ही चुनावी दौड़ में आगे माना जाता है। इसके उलट इस प्रक्रिया को इस तरह भी समझ सकते हैं कि जो जीत रहा होता है, उसे ही सबसे ज्यादा दान मिलता है। भारत ने अमेरिका-ब्रिटेन का पूंजीवादी उदारीकरण अपना लिया तो वहां के राजनीतिक दलों को मिलने वाली दान संस्कृति भारत में प्रभाव क्यों नहीं जमाती? चुनावी बांड पर सर्वोच्च न्यायालय भले ही रोक लगा दे, गैर भाजपा दल भाजपा की चाहे जितनी भी आलोचना कर लें, लेकिन यह तय है कि चुनावी रण के खर्च के लिए धन जुटाने की कोई और राह जरूर खोज ली जाएगी।

Electoral Bonds: १६,००० करोड़ रुपये की राजनीतिक फंडिंग का बड़ा हिस्सा रहा BJP के नाम, जानें अन्य दलों का हाल?

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को एक ऐतिहासिक फैसले में विवादास्पद चुनावी बॉन्ड को असंवैधानिक करार दिया। यह बॉन्ड भारत में राजनीतिक दलों के लिए धन का एक प्रमुख स्रोत बन गया था। इस योजना ने २०१८ से राजनीतिक दलों के खजाने में १६,००० करोड़ रुपये से अधिक का योगदान दिया है। लाभार्थियों में, सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) पहले नंबर पर रही है। जिसे लगभग ५५ फीसदी का बड़ा हिस्सा प्राप्त हुआ है। यह लगभग ६,५६५ करोड़ रुपये आंकी गई है। चुनाव आयोग और एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) के आंकड़ों में यह जानकारी दी गई है। यह बॉन्ड, गुमनाम दान की अनुमति देते हैं। राजनीतिक फंडिंग का एक प्रमुख घटक रहे हैं। कुछ क्षेत्रीय दल वित्तीय सहायता के लिए इन पर बहुत अधिक निर्भर हैं। बीजेपी के लिए, चुनावी बॉन्ड उसकी कुल आय का आधे से अधिक हिस्सा है, जो राजनीतिक अभियानों को बनाए रखने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका का संकेत देता है।

कोर्ट ने योजना को असंवैधानिक घोषित किया हालांकि, सुप्रीम कोर्ट के हालिया फैसले ने इस तरह की फंडिंग के भविष्य को अनिश्चितता में डाल दिया है। कोर्ट ने राजनीतिक फंडिंग में पारदर्शिता और जवाबदेही के बारे में चिंताओं का हवाला देते हुए इस योजना को असंवैधानिक घोषित कर दिया। भारत के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने मौलिक अधिकारों को बनाए रखने के महत्व पर प्रकाश डाला और राजनीति में तथाकथित काले धन पर अंकुश लगाने में चुनावी बांड की प्रभावकारिता के बारे में आपत्ति व्यक्त की। चुनावी बांड बिक्री के २८वें चरण में तेलंगाना का हैदराबाद रहा अव्वल, ३७७ करोड़ की हुई बिक्री राजनीतिक दलों को कितना मिला? चुनावी बांड की शुरुआत के बाद से, बीजेपी की आय में वृद्धि हुई है और यह अपने प्रतिद्वंद्वी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को पछाड़कर भारत की सबसे धनी पार्टी बन गई है। जिसकी किस्मत में कुछ सालों को छोड़कर गिरावट देखी गई है। वित्त वर्ष २०१८-१९ में चुनावी बॉन्ड आने के बाद बीजेपी की आय दोगुनी से भी ज्यादा बढ़कर १,०२७ करोड़ रुपये से २,४१० करोड़ रुपये हो गई, जबकि कांग्रेस की आय भी १९९ करोड़ रुपये से बढ़कर ९१८ करोड़ रुपये हो गई। वित्त वर्ष २०२१-२२ में बीजेपी को चुनावी बॉन्ड के जरिए मिलने वाला फंड बढ़कर १,०३३ करोड़ रुपये हो गया, जबकि कांग्रेस को मिलने वाला फंड २३६ करोड़ रुपये से घट गया। वित्तीय वर्ष २०२२-२३ के दौरान, बीजेपी की कुल आय २,३६० करोड़ रुपये थी, जिसमें लगभग १,३०० करोड़ रुपये चुनावी बांड से आए थे। इसके विपरीत, कांग्रेस की कुल आय घटकर ४५२ करोड़ रुपये हो गई, जिसमें चुनावी बांड से १७१ करोड़ रुपये शामिल थे। पिछले वित्तीय वर्ष में अन्य दलों को चुनावी बांड के माध्यम से अलग-अलग राशि प्राप्त हुई। टीएमसी को ३२५ करोड़ रुपये, बीआरएस को ५२९ करोड़ रुपये, डीएमके को १८५ करोड़ रुपये, बीजेडी को १५२ करोड़ रुपये और टीडीपी को ३४ करोड़ रुपये मिले। हालांकि, इस अवधि के दौरान समाजवादी पार्टी और शिरोमणि अकाली दल को चुनावी बांड के माध्यम से कोई योगदान नहीं मिला। चुनावी बांड में लगभग ५० फीसदी धनराशि कॉरपोरेट्स से आती है, जबकि बाकी 'अन्य स्रोतों' से आती है।

चुनावी बांड बिक्री के २८वें चरण में तेलंगाना का हैदराबाद रहा अव्वल, ३७७ करोड़ की हुई बिक्री

तेलंगाना में विधानसभा चुनाव के लिए मतदान ३० नवंबर को होगा वहीं राज्य में चुनावी बांड बिक्री के २८वें चरण की १० दिनों की अवधि के दौरान २,०१२ चुनावी बांड बेचे गए। जिनकी कुल कीमत १,१४८.३८ करोड़ थी। बता दें २९ सितंबर को केंद्र सररकार ने चुनावी बांड की २८ वीं किश्त को जारी करने की परमीशन दी थी। जिसे ४ से १३ अक्टूबर के बीच १० दिनों की अवधि के लिए खोला गया। ऐसे ही राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और मिजोरम में इसी महीने होने वाले विधानसभा चुनावों से ठीक पहले ये कवायद की गई है। इन १० दिनों में तेलंगाना के हैदराबाद में सबसे अधिक ३७७ करोड़ रुपये के चुनावी बांड की बिक्री हुई और बांड बिक्री के बारे में हैदराबाद ने बाजी मार ली। वहीं राष्ट्रीय आंकड़ों के अनुसार बीते १० दिन के दौरान देश भर में कुल २,०१२ चुनावी बांड बेचे गए, जिनकी कुल राशि १,१४८.३८ रुपये करोड़ थी गौरतलब है कि २८वें चरण की बिक्री के दौरान ब्रांच के अनुसारऔर प्राइज कैटेगरी के अनुसार चुनावी बांड बेचे गए आरटीआई क्वेरी के आंकड़ों के अनुसार हैदराबाद ४०४ बांडों की बिक्री के लिस्ट में नवंर वन पर है, जिसकी धनराशि ३७७ करोड़ रुपये है, जिसका उच्चतम मूल्य १ करोड़ रुपये है। मजेदार बात ये है कि तेलंगाना समेत अन्य तीन चुनावी राज्य राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश में १,००० और १०,००० रुपये के बांड को कोई लेने वाला नहीं था। एसबीआई की हैदराबाद मेन ब्रांच, जो बांड की बिक्री हुई जिसमें १ लाख प्राइज के तेरह बांड बेचे गए, १० लाख रूपये मूल्यवर्ग के १५ बांड, और १ करोड़ मूल्य के ३७६ बांड बेचे गए। ३७७ करोड़ रुपये की कुल बिक्री में से ३७६ करोड़ रुपये अंतिम कैटेगरी से आए। हैदराबाद ब्रांच में नकदीकरण की संख्या कम देखी गई, केवल ८३.६३ करोड़ रुपये के १८२ बांड भुनाए गए।

SBI ने सुप्रीम कोर्ट से मांगा समय

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया ने सुप्रीम कोर्ट से चुनावी बॉन्ड की जानकारी देने के लिए ३० जून तक का समय मांगा है. सुप्रीम कोर्ट ने पिछले दिनों चुनावी बॉन्ड स्कीम को रद्द कर दिया था. साथ ही कोर्ट ने एसबीआई को चुनावी बॉन्ड की जानकारी चुनाव आयोग को देने को कहा था. दरअसल, एसबीआई ही चुनावी बॉन्ड जारी करता था. सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ की बेंच ने १५ फरवरी २०२४ को चुनावी बॉन्ड स्कीम को असंवैधानिक और RTI का उल्लंघन करार देते हुए तत्काल प्रभाव से रोक लगा दी थी. सीजेआई की अध्यक्षता वाली ५ जजों की बेंच ने एसबीआई को अप्रैल २०१९ से अब तक मिले चंदे की जानकारी ६ मार्च तक चुनाव आयोग को देने के लिए कहा था. कोर्ट ने चुनाव आयोग से १३ मार्च तक यह जानकारी अपनी वेबसाइट पर अपलोड करने के लिए कहा था.

लाइव लॉ की रिपोर्ट के मुताबिक, SBI ने अपने आवेदन में कोर्ट से कह कि १२ अप्रैल २०१९ से १५ फरवरी २०२४ तक विभिन्न पार्टियों को चंदे के लिए २२२१७ चुनाव बॉन्ड जारी किए गए हैं. भुनाए गए बांड को प्रत्येक चरण के आखिरी में अधिकृत शाखाओं द्वारा सीलबंद लिफाफे में मुंबई मुख्य शाखा में जमा किए गए थे. एसबीआई ने कहा कि दोनों सूचना साइलो की जानकारी इकट्ठा करने के लिए ४४,४३४ सेटों को डिकोड करना होगा. ऐसे में सुप्रीम कोर्ट द्वारा तय ३ हफ्ते का समय पूरी प्रोसेस के लिए पर्याप्त नहीं है.

SBI में मिलते थे चुनावी बॉन्ड

मोदी सरकार ने २०१८ में चुनावी बॉन्ड स्कीम की शुरुआत की थी. चुनावी बॉन्ड स्कीम के जरिए चंदा ऐसे राजीनीतिक दल हासिल कर सकते थे, जो लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम १९५१ की धारा २९ए के तहत रजिस्टर्ड हैं और जिन्हें पिछले लोकसभा या विधानसभा चुनाव में एक प्रतिशत से अधिक वोट मिले हों. इसके तहत कोई भी नागरिक, कंपनी या संस्था किसी पार्टी को चंदा दे सकती थी. ये बॉन्ड १०००, १० हजार, १ लाख और १ करोड़ रुपये तक के हो सकते थे. खास बात ये है कि बॉन्ड में चंदा देने वाले को अपना नाम नहीं लिखना पड़ता था.ये चुनावी बॉन्ड एसबीआई की २९ ब्रांचों में मिलते थे. यह बॉन्ड साल में चार बार यानी जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्टूबर में जारी किए जाते थे. इसे ग्राहक बैंक की शाखा में या उसकी वेबसाइट पर ऑनलाइन खरीद सकता था.

चुनावी बॉन्ड

चुनावी चंदे के धंधे पर रोक लगा कर सुप्रीम कोर्ट ने लोकतंत्र को मजबूत किया है

याचिकाकर्ताओं एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) सहित अन्य ने केंद्र सरकार की चुनावी बॉन्ड योजना को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देते हुये इन सभी ने इस योजना को लागू करने के लिए फाइनेंस एक्ट २०१७ और फाइनेंस एक्ट २०१६ में किए गए कई संशोधन को गलत बताया था।

सुप्रीम कोर्ट ने एक बड़ा फैसला देते हुए राजनीतिक दलों के लिए चंदा जुटाने की पुरानी इलेक्टोरल बांड स्कीम को अवैध करार देते हुए इसके जरिए चंदा लेने पर तत्काल रोक लगा दी है। सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि इलेक्टोरल बांड की गोपनीयता बनाए रखना असंवैधानिक है। यह स्कीम सूचना के अधिकार का उल्लंघन करती है। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ के नेतृत्व में गठित पांच जजों की बेंच ने सर्वसम्मति

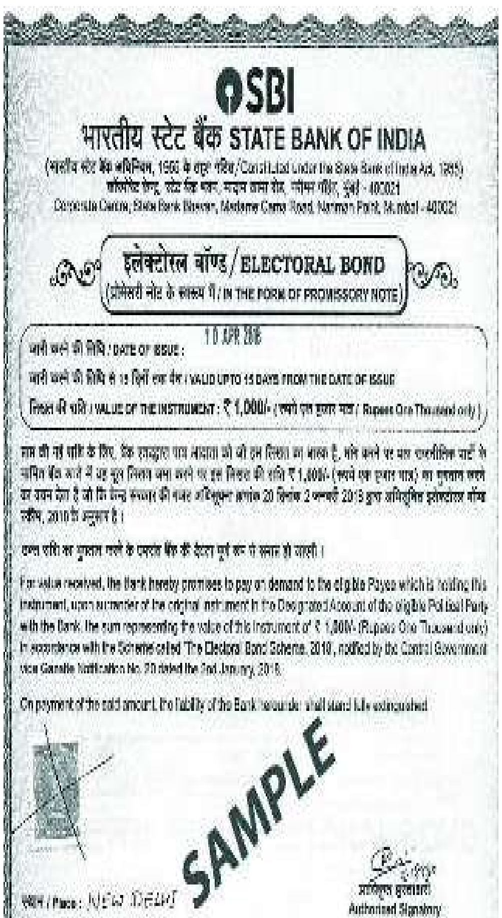

SBI
भारतीय स्टेट बैंक STATE BANK OF INDIA
Corporate Centre, State Bank Bhavan, Madame Cama Road, Nariman Point, Mumbai - 400021

इलेक्टोरल बॉण्ड / ELECTORAL BOND
(IN THE FORM OF PROMISSORY NOTE)

DATE OF ISSUE : 10 APR 2018
VALID UPTO 15 DAYS FROM THE DATE OF ISSUE
VALUE OF THE INSTRUMENT : ₹ 1,000/- (Rupees One Thousand only)

For value received, the Bank hereby promises to pay on demand to the eligible Payee which is holding this instrument, upon surrender of the original instrument in the Designated Account of the eligible Political Party with the Bank, the sum representing the value of this instrument of ₹ 1,000/- (Rupees One Thousand only) in accordance with the Scheme called "The Electoral Bond Scheme, 2018", notified by the Central Government vide Gazette Notification No. 20 dated the 2nd January, 2018.

On payment of the said amount, the liability of the Bank hereunder shall stand fully extinguished.

SAMPLE

स्थान / Place : NEW DELHI

प्राधिकृत हस्ताक्षरी
Authorised Signatory

से फैसला सुनाया है। बेंच में जस्टिस संजीव खन्ना, जस्टिस बीआर गवई, जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस मनोज मिश्रा शामिल हैं।

अपने फैसले में चीफ जस्टिस ने कहा है कि पॉलिटिकल प्रोसेस में राजनीतिक दल अहम यूनिट होते हैं। पॉलिटिकल फंडिंग की जानकारी वह प्रक्रिया है जिससे मतदाता को वोट डालने के लिए सही चॉइस मिलती है। वोटर्स को चुनावी फंडिंग के बारे में जानने का अधिकार है। जिससे मतदान के लिए सही चयन होता है। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पांच जजों की बेंच ने तीन दिनों तक लगातार सुनवाई करने के बाद २ नवंबर २०२३ को इस मामले में अपना फैसला सुरक्षित रख लिया था।

याचिकाकर्ताओं एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) सहित अन्य ने केंद्र सरकार की चुनावी बॉन्ड योजना को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देते हुये इन सभी ने इस योजना को लागू करने के लिए फाइनेंस एक्ट २०१७ और फाइनेंस एक्ट २०१६ में किए गए कई संशोधन को गलत बताया था। याचिकाकर्ताओं का दावा है कि इससे राजनीतिक दलों को बिना जांच और टैक्स भरे फंडिंग मिल रही है। तत्कालीन वित्त मंत्री अरुण जेटली ने २०१७ के बजट में चुनावी इलेक्टोरल बांड स्कीम को पेश किया था। जिसे २ जनवरी २०१८ को केंद्र सरकार ने नोटिफाई किया था। इस योजना को उसी समय चुनौती दी गई थी। लेकिन सुनवाई २०१९ में शुरू हुई। १२ अप्रैल २०१९ को सुप्रीम कोर्ट ने सभी राजनीतिक दलों को निर्देश दिया था कि वह ३० मई २०१९ तक एक लिफाफे में चुनावी बांड से जुड़ी सभी जानकारी चुनाव आयोग को दें। हालांकि कोर्ट ने उस समय इस योजना पर रोक नहीं लगाई थी।

बाद में दिसंबर २०१९ में याचिकाकर्ता एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स ने इस योजना पर रोक लगाने के लिए सुप्रीम कोर्ट में एक आवेदन दिया था। इसमें मीडिया रिपोर्ट्स के हवाले से बताया गया था कि किस तरह चुनावी बांड योजना पर चुनाव आयोग, रिजर्व बैंक की चिताओं को केंद्र सरकार ने दरकिनार कर दिया था। इस पर चुनाव आयोग ने

चुनाव आयोग ने भी अपनी नकारात्मक राय दी थी। चुनाव आयोग का मानना था कि चंदा देने वालों के नाम गुमनाम रखने से पता लगाना संभव नहीं होगा कि राजनीतिक दल ने धारा २९(बी) का उल्लंघन कर चंदा लिया है या नहीं। विदेशी चंदा लेने वाला कानून भी बेकार हो जाएगा। वहीं भारतीय रिजर्व बैंक का मानना था कि इलेक्टोरल बांड मनी लॉन्ड्रिंग को बढ़ावा देगा। इसके जरिए ब्लैक मनी को व्हाइट करना संभव होगा। चुनाव आयोग व रिजर्व बैंक की आपत्ति के बाद सुप्रीम कोर्ट का फैसला अपने आप में ऐतिहासिक माना जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के पहले केंद्र सरकार ने ५ फरवरी को लोकसभा को बताया था कि भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के माध्यम से ३० किश्तों में १६,५१८ करोड़ रुपये के चुनावी बांड बेचे गए हैं। कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी द्वारा लोकसभा में पूछे गए एक सवाल के जवाब में वित्त राज्य

मंत्री पंकज चौधरी ने कहा था कि भारतीय स्टेट बैंक से खरीदे गए चुनावी बांड (चरण ०१ से चरण ३०) का कुल मूल्य लगभग १६,५१८ करोड़ रुपये है। चौधरी ने कहा था कि केंद्र ने पहले २५ चरणों के लिए चुनावी बांड जारी करने और भुनाने के लिए एसबीआई को ८.५७ करोड़ रुपये का कमीशन दिया है। इसके अलावा इसने अब तक सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल) को १.९० करोड़ रुपये का भुगतान किया है।

भी अपनी नकारात्मक राय दी थी। चुनाव आयोग का मानना था कि चंदा देने वालों के नाम गुमनाम रखने से पता लगाना संभव नहीं होगा कि राजनीतिक दल ने धारा २९(बी) का उल्लंघन कर चंदा लिया है या नहीं। विदेशी चंदा लेने वाला कानून भी बेकार हो जाएगा। वहीं भारतीय रिजर्व बैंक का मानना था कि इलेक्टोरल बांड मनी लॉन्ड्रिंग को बढ़ावा देगा। इसके जरिए ब्लैक मनी को व्हाइट करना संभव होगा। चुनाव आयोग व रिजर्व बैंक की आपत्ति के बाद सुप्रीम कोर्ट का फैसला अपने आप में ऐतिहासिक माना जा सकता है।

सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले के पहले केंद्र सरकार ने ५ फरवरी को लोकसभा को बताया था कि भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) के माध्यम से ३० किश्तों में १६,५१८ करोड़ रुपये के चुनावी बांड बेचे गए हैं।

कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी द्वारा लोकसभा में पूछे गए एक सवाल के जवाब में वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने कहा था कि भारतीय स्टेट बैंक से खरीदे गए चुनावी बांड (चरण ०१ से चरण ३०) का कुल मूल्य लगभग १६,५१८ करोड़ रुपये है। चौधरी ने कहा था कि केंद्र ने पहले २५ चरणों के लिए चुनावी बांड जारी करने और भुनाने के लिए एसबीआई को ८.५७ करोड़ रुपये का कमीशन दिया है। इसके अलावा इसने अब तक सिक्योरिटी प्रिंटिंग एंड मिंटिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (एसपीएमसीआईएल) को १.९० करोड़ रुपये का भुगतान किया है।

चौधरी ने बताया था कि केंद्र सरकार ने २ जनवरी २०१८ को चुनावी बॉन्ड योजना को अधिसूचित किया था। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि स्वच्छ कर भुगतान किया गया पैसा उचित बैंकिंग चैनल के माध्यम से राजनीतिक फंडिंग की प्रणाली में आये। हालांकि दानदाताओं के नाम गुमनाम रहे और सूचना के अधिकार के दायरे से बाहर रहे। ये बांड विशेष रूप से राजनीतिक दलों को धन के योगदान के लिए जारी किए गए थे और इन्हें केवल भारतीय स्टेट बैंक की शाखाओं में ही खरीदा जा सकता था। इलक्टोरल बॉन्ड से उसी पार्टी को चंदा लेने का अधिकार था जो जनप्रतिनिधित्व कानून-१९५१ रिपर्जेंटेशन आफ द पिपुल्स एक्ट की धारा २९ के तहत रजिस्टर्ड हो। जिसे लोकसभा या विधानसभा चुनाव में कम से कम १ प्रतिशत वोट मिला हो।

२०१८ से २०२२ तक भाजपा को ६३५९.३८ करोड़ रुपये व कांग्रेस को १११८.०७ करोड़ रुपये मिले थे। पश्चिम बंगाल में सत्तारुढ़ तृणमूल कांग्रेस सहित अन्य क्षेत्रीय दलों को भी इस योजना में बड़ी मात्रा में चंदा मिला है। इलेक्टोरल बांड स्कीम से देश के सभी राजनीतिक दलों को चंदा मिला है। सभी दलों ने चंदे कि बहती गंगा में हाथ धोया है। अब यदि कोई राजनीतिक दल खुद को पाक साफ़ दिखने के लिए अन्य दलों पर कीचड़ उछाले तो वही बात होगी सौ चूहे खाकर बिल्ली हज करने चली। चुनाव में पानी की तरह बेहिसाब पैसा बहाकर सत्ता में आनेवाला कोई भी राजनीतिक दल कभी लोक कल्याणकारी नीतियों को प्रोत्साहन देने वाला नहीं हो सकता है। अतः राजनैतिक दलों की वित्तीय अनियमितताें को दूर करना आज वक्त की जरूरत बन चुकी है।

भारत में चुनाव आयोग के समक्ष करीबन १९०० पार्टियाँ पंजीकृत हैं। इनमें सैंकड़ों ऐसी पार्टियाँ हैं जिन्होंने कभी चुनाव ही नहीं लड़ा है। इससे यह साफ हो जाता है कि कुछ तो गड़बड़ जरूर है। देश के पंजीकृत राजनीतिक दलों को आयकर अधिनियम, १९६१ की धारा १३ ए के तहत आयकर से छूट मिलती है। उनके लिये दान या चंदा लेने की कोई अधिकतम सीमा तय नहीं है। उनको सिर्फ उस लेन-देन का ब्योरा चुनाव आयोग के समक्ष पेश करना होता है जो २० हजार या उससे ज्यादा हो। इससे कम की रकम का कोई हिसाब उसे नहीं देना होता है। इसी का लाभ उठाकर तमाम राजनीतिक दलों पर कालेधन को सफेद करने और चुनावों में बेहिसाब कालाधन खर्च करने के आरोप लगते रहे हैं। यहीं कारण है कि सैंकड़ों दल चुनाव नहीं लड़ते लेकिन राजनैतिक दल के तौर पंजीकृत हैं।

इलेक्टोरल बॉन्ड स्कीम का सबसे अधिक फायदा केन्द्र में सत्तरूढ़ भाजपा व मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस को ही मिला है। चुनाव आयोग के अनुसार २०१८-१९ में भाजपा को १४५० करोड़ रुपये व कांग्रेस को ३८३ करोड़ रूपये का चंदा इलेक्टोरल बॉन्ड के जरिये मिला था। वहीं २०१९-२० में भाजपा को २५५५ करोड़ रुपये व कांग्रेस को ३१८ करोड़ रुपये मिले थे। २०२०-२१ के कोरोना काल में भी भाजपा को २२.३८ करोड़ व कांग्रेस को १०.०७ करोड़ रुपये मिले थे। २०२१-२२ में भाजपा को १०३२ करोड़ रुपये व कांग्रेस को २३६ करोड़ रुपये चंदे में मिले। २०२२-२३ में भाजपा को १३०० करोड़ रुपये व कांग्रेस को १७१ करोड़ रुपये चंदे में मिले। इस तरह २०१८ से २०२२ तक भाजपा को ६३५९.३८ करोड़ रुपये व कांग्रेस को १११८.०७ करोड़ रुपये मिले थे। पश्चिम बंगाल में सत्तारुढ़ तृणमूल कांग्रेस सहित अन्य क्षेत्रीय दलों को भी इस योजना में बड़ी मात्रा में चंदा मिला है। इलेक्टोरल बांड स्कीम से देश के सभी राजनीतिक दलों को चंदा मिला है। सभी दलों ने चंदे कि बहती गंगा में हाथ धोया है। अब यदि कोई राजनीतिक दल खुद को पाक साफ़ दिखने के लिए अन्य दलों पर कीचड़ उछाले तो वही बात होगी सौ चूहे खाकर बिल्ली हज करने चली।

चुनाव में पानी की तरह बेहिसाब पैसा बहाकर सत्ता में आनेवाला कोई भी राजनीतिक दल कभी लोक कल्याणकारी नीतियों को प्रोत्साहन देने वाला नहीं हो सकता है। अतः राजनैतिक दलों की वित्तीय अनियमितताें को दूर करना आज वक्त की जरूरत बन चुकी है। हालांकि इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता है कि इस संबंध में अब तक जितने भी प्रयास हुए हैं नाकाफी ही साबित हुए हैं। इस दिशा में सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से राजनीति में चल रहे चंदे के गंदे धंधे पर रोक तो जरूर लगेगी जो राजनीतिक सुचिता की दिशा में एक नयी पहल होगी।

मल्लिकार्जुन खड़गे ने चुनावी बांड योजना को अपारदर्शी और अलोकतांत्रिक बताया

चुनावी बांड विवरण का खुलासा करने के लिए अधिक समय की मांग करने वाली भारतीय स्टेट बैंक की सुप्रीम कोर्ट में याचिका पर प्रतिक्रिया करते हुए कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे ने मंगलवार को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार पर अपने कथित संदिग्ध लेनदेन को छिपाने के लिए बैंक का उपयोग करने का आरोप लगाया। मल्लिकार्जुन खड़गे ने चुनावी बांड योजना को अपारदर्शी और अलोकतांत्रिक बताया। उन्होंने कहा कि बीजेपी सरकार बैंक को ढाल की तरह इस्तेमाल कर रही है। चुनावी बांड विवरण का खुलासा करने के लिए अधिक समय की मांग करने वाली भारतीय स्टेट बैंक की सुप्रीम कोर्ट में याचिका पर प्रतिक्रिया करते हुए कांग्रेस प्रमुख मल्लिकार्जुन खड़गे ने मंगलवार को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार पर अपने कथित संदिग्ध लेनदेन को छिपाने के लिए बैंक का उपयोग करने का आरोप लगाया।

सुप्रीम कोर्ट में स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (सीबीआई) की ओर से अर्जी दाखिल कर रहा गया है कि इलेक्ट्रोरल बॉण्ड के मामले में जानकारी देने के लिए उन्हें ३० जून तक का वक्त दिया जाए। सुप्रीम कोर्ट ने १५ फरवरी को इलेक्टोरल बॉण्ड स्कीम को खारिज कर दिया था और एसबीआई को निर्देश दिया था कि वो इसके बारे में जानकारी ६ मार्च तक चुनाव आयोग के सामने पेश करें। एसबीआई ने अर्जी में कहा कि बॉण्ड देने वालों की पहचान गुप्त रखी जाए इसके लिए कड़े कदम उठाए गए थे। इस वजह से चुनावी बॉण्ड को डिकोड करना और दान देने वालों के दान का मिलान करना एक जटिल प्रक्रिया होगी। कोई सेंट्रल डेटाबेस नहीं रखा गया था। ऐसा तय करने के लिए किया गया था कि डोनर की पहचान को गुप्त रखा जा सके। आवेदन में कहा गया है कि १२ अप्रैल २०१९ से लेकर १५ फरवरी २०२४ के बीच २२,२१७ इलेक्टोरल बॉण्ड जारी किए गए हैं। यह वॉण्ड अलग-अलग राजनीतिक पार्टियों को डोनेशन के लिए जारी हुए हैं। इन्हें मुंबई स्थित शाखा में डिपॉजिट किया गया था। उसे डिकोड और तैयार करना है। इस तरह ४४,४३४ सेट की जानकारी चाहिए।

कांग्रेस सांसद मनीष तिवारी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट को एसबीआई को चुनावी बांड पर अपनी चालाकी से बच निकलने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। आम चुनाव से पहले लोगों को पता होना चाहिए कि किसने किससे क्या प्राप्त किया और क्या इसमें प्रथम दृष्ट्या कोई बदले की भावना शामिल थी? एक्स पर एक पोस्ट में राहुल गांधी ने कहा था कि नरेंद्र मोदी ने 'चंदा कारोबार' को छुपाने के लिए पूरी ताकत लगा दी है। जब सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि चुनावी बांड के बारे में सच्चाई जानना देश के लोगों का अधिकार है, तो फिर एसबीआई क्यों नहीं चाहता कि यह जानकारी चुनाव से पहले सार्वजनिक की जाए?

सम्मान

Bharat Ratna: इस साल पांच हस्तियों को भारत रत्न, जानें अब तक कितनों को यह सम्मान

भारत सरकार ने हाल ही में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री रहे जननायक कर्पूरी ठाकुर, पूर्व प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवानी के बाद, अब चौधरी चरण सिंह, पीवी नरसिंहा राव और वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भी भारत रत्न देने का एलान किया। ऐसे में आइए जानते हैं अब तक किन हस्तियों को यह सम्मान मिल चुका है।

भारत सरकार ने जनवरी में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जननायक कर्पूरी ठाकुर को भारत रत्न देने का एलान किया था। हाल ही में पूर्व प्रधानमंत्री लाल कृष्ण आडवानी को भी भारत रत्न देने की घोषणा की गई थी। इसके बाद, अब केंद्र सरकार ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और पीवी नरसिंहा राव, वैज्ञानिक

भारत रत्न देश का सर्वोच्च नागरिक सम्मान है जो किसी क्षेत्र में असाधारण और सर्वोच्च सेवा को मान्यता देने के लिये दिया जाता है. भारत रत्न सम्मान राजनीति, कला, साहित्य, विज्ञान के क्षेत्र में किसी विचारक, वैज्ञानिक, उद्योगपति, लेखक और समाजसेवी को दिया जाता है. 'भारत रत्न' सम्मान की शुरूआत तत्कालीन राष्ट्रपति डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद ने दो जनवरी १९५४ को की थी. स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी, पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन और वैज्ञानिक डॉक्टर चंद्रशेखर वेंकट रमन को १९५४ में पहली बार इस सम्मान से नवाजा गया था.

Smt. Madurai Shanmukhavadivu Subbalakshmi

Dr. Avul Pakir Jainulabdeen Abdul Kalam

Shri Gulzari Lal Nanda (Posthumous)

Smt. Aruna Asaf Ali (Posthumous)

Maulana Abul Kalam Azad (Posthumous)

Shri Jehangir Ratanji Dadabhai Tata

Shri Satyajit Ray (Posthumous)

Sardar Vallabhbhai Patel (Posthumous)

Shri Morarji Ranchhodji Desai

Shri Rajiv Gandhi (Posthumous)

Dr. Bhimrao Ramji Ambedkar (Posthumous)

Dr. Nelson Rolihlahla Mandela

Shri Marudur Gopalan Ramachandran (posthumous)

Khan Abdul Ghaffar Khan

Acharya Vinoba Bhave (Posthumous)

एमएस स्वामीनाथन को भी सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' देने का एलान किया है। इसकी जानकारी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 'एक्स' पर एक पोस्ट करके दी है। जननायक कर्पूरी ठाकुर, पूर्व प्रधानमंत्री लाल कृष्ण आडवानी, चौधरी चरण सिंह, पीवी नरसिम्हा राव और वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को मिलाकर अबतक कुल ५३ लोगों को भारत रत्न से सम्मानित किया जा चुका है। ऐसे में आइए जानते हैं कि वो कौन हस्तियां हैं, जिन्हे भारत रत्न मिल चुका है।

यहां देखें भारत रत्न से सम्मानित हस्तियों की लिस्ट

पहली बार साल १९५४ में पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली डॉक्टर राधाकृष्णन, डॉक्टर चंद्रशेखर वेंकट रमन,और स्वतंत्र भारत के पहले गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी को भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। इसके बाद साल १९५५ में मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया, भारत के पूर्व प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू और डॉ. भगवान दास को भारत रत्न सम्मान दिया गया था। इसके बाद साल १९५७ में पंडित गोविंद वल्लभ पंत को यह सम्मान दिया गया था। इसके बाद साल १९५८ में डॉ. धोंडो केशव कर्वे को यह सम्मान दिया गया था।

१९६१ में पुरुर्षोत्तम दास टंडन, बिधान चंद्र रॉय को यह सम्मान दिया गया था।

१९६२ में पूर्व राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद को यह सम्मान दिया गया था।

१९६३ में पूर्व राष्ट्रपति डॉ जाकिर हुसैन को भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

१९६३ में डॉ. पांडुरंग वामन काणे को भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

१९६६ में पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री को मरणोपरांत भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९७१ में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९७५ में वीवी गिरी को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९७६ में के.कामराज को मरणोपरांत भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९८० में सामाजिक कार्यकर्ता मदर टेरेसा को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९८३ में आचार्य विनोवा भावे को मरणोपरांत भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९८७ में खान अब्दुल गफ्फार खान को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९८८ में मनिदुर गोपालन रामचन्द्रन को मरणोपरांत भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९९० में दक्षिण अफ्रीका के डॉ. नेल्सन रोल िहलाहला मंडेला, डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर (मरणोपरांत) को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९९१ में पूर्व प्रधानंत्री राजीव गांधी (मरणोपरांत) ,मोरारजी रणछोड़जी देसाई , सरदार वल्लभभाई पटेल (मरणोपरांत) को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९९२ में सत्यजीत रे को मरणोपरांत, जहांगीर रतनजी दादाभाई टाटा, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (मरणोपरांत) को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९९७ में अरुणा आसफ अली (मरणोपरांत), गुलजारी लाल नंदा (मरणोपरांत) और पूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम आजाद को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९९८ में मदुरै शन्मुखवदिवु सुब्बालक्ष्मी , चिदम्बरम सुब्रमण्यम, गोपीनाथ बोरदोलोई (मरणोपरांत) को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

१९९९ में जयप्रकाश नारायण (मरणोपरांत), प्रो अमर्त्य सेन,पंडित रविशंकर को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

२००१ में उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, सुश्री ल ता दीनानाथ मंगेशकर को भारत रत्न सम्मान दिया गया था। २००९ में पंडित भीमसेन गुरुराज जोशी को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

२०१४ में भारतीय क्रिकेट के स्टार बल्लेबाज सचिन रमेश तेंदुलकर, प्रोफेसर चिंतामणि नागेसा रामचन्द्र राव को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

२०१५ में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई, पंडित मदन मोहन मालवीय (मरणोपरांत) को भारत रत्न सम्मान दिया गया था।

२०१९ में भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी, डॉ. भूपेन्द्र कुमार हजारिका (मरणोपरांत), नानाजी देशमुख (मरणोपरांत) को भारत रत्न सम्मान दिया गया था। वहीं, २०२४ में बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री रहे जननायक कर्पूरी ठाकुर, लालकृष्ण आडवानी, पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह और पीवी नरसिंहा राव, वैज्ञानिक एमएस स्वामीनाथन को भारत रत्न से सम्मानित किया जाएगा।

विरोध प्रदर्शन

१४ मार्च का 'किसान महापंचायत'

४०० से अधिक किसान संघ लेंगे भाग

संयुक्त किसान मोर्चा (एसकेएम) ने शनिवार को कहा कि फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) सहित अन्य मांगों को लेकर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) नीत केंद्र सरकार पर दबाव बनाने के लिए १४ मार्च को दिल्ली में 'किसान महापंचायत' में ४०० से अधिक किसान संघ भाग लेंगे। एसकेएम ने कहा कि उसने संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा (केएमएम) को एक प्रस्ताव भेजा है जिसमें सभी किसान संघों और संगठनों के बीच मुद्दा-आधारित एकता की अपील की गई है।

इस बीच, किसान नेता बलदेव सिंह सिरसा ने कहा कि किसान अपनी मांगों को लेकर प्रदर्शन जारी रखेंगे। एसकेएम ने २०२०-२१ में केंद्र के तीन कृषि कानूनों के खिलाफ आंदोलन का नेतृत्व किया था। यह एमएसपी की कानूनी गारंटी, कृषि ऋण माफ करने सहित विभिन्न मांगों को लेकर विरोध प्रदर्शन का भी नेतृत्व कर रहा है। एसकेएम में शामिल ३७ किसान संघों ने दिल्ली के रामलीला मैदान में अपनी प्रस्तावित 'महापंचायत' को लेकर शनिवार को एक बैठक की।

भारती किसान यूनियन (लखोवाल) के महासचिव हरिंदर सिंह लखोवाल ने संवाददाताओं से कहा कि किसान अपनी मांगों को लेकर लगातार संघर्ष कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि संघर्ष जारी रखते हुए यह निर्णय लिया गया कि १४ मार्च को राष्ट्रीय राजधानी में एक 'महापंचायत' आयोजित की जाएगी। किसान नेताओं ने कहा कि देश भर से ४०० से अधिक किसान संघ 'महापंचायत' में हिस्सा लेंगे। उन्होंने बताया कि किसान प्रतिनिधि ट्रैक्टर ट्रॉली से नहीं, बल्कि बसों और रेलगाड़ियों से दिल्ली जाएंगे।

उन्होंने कहा कि वे सभी फसलों के लिए एमएसपी पर कानूनी गारंटी और २०२०-२१ के आंदोलन के दौरान किसानों के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी रद्द करने सहित अपनी विभिन्न मांगों को लेकर केंद्र के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे हैं। एसकेएम ने २२ फरवरी को घोषणा की थी कि वह दिल्ली में 'महापंचायत' आयोजित करेगी। इस बीच, किसान नेताओं ने शुभकरण सिंह की मौत के मामले में पंजाब पुलिस द्वारा दर्ज की गई 'जीरो' प्राथमिकी को भी खारिज कर दिया।

भारती किसान यूनियन (लखोवाल) के महासचिव हरिंदर सिंह लखोवाल ने संवाददाताओं से कहा कि किसान अपनी मांगों को लेकर लगातार संघर्ष कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि संघर्ष जारी रखते हुए यह निर्णय लिया गया कि १४ मार्च को राष्ट्रीय राजधानी में एक 'महापंचायत' आयोजित की जाएगी। किसान नेताओं ने कहा कि देश भर से ४०० से अधिक किसान संघ 'महापंचायत' में हिस्सा लेंगे। उन्होंने बताया कि किसान प्रतिनिधि ट्रैक्टर ट्रॉली से नहीं, बल्कि बसों और रेलगाड़ियों से दिल्ली जाएंगे।

पंजाब और हरियाणा के बीच खनौरी सीमा पर २१ फरवरी को हुई झड़प में शुभकरण सिंह की मौत हो गई थी और लगभग १२ पुलिसकर्मी घायल हो गए।

सिरसा (८२) ने कहा कि किसान अपनी मांगों के समर्थन में शांतिपूर्ण विरोध प्रदर्शन जारी रखेंगे। उन्होंने कहा कि सरकार कब तक सड़कों को बंद रखेगी, अंततः उन्हें इस मुद्दे को समाधान करना होगा।

सिरसा ने कहा, "क्या ऐसा कुछ है जिसका कोई समाधान नहीं है? जिन मांगों को लेकर हम आंदोलन कर रहे हैं वे पुरानी हैं।" उन्होंने कहा, सरकार को फसलों के लिए एमएसपी की कानूनी गारंटी देनी चाहिए। किसान नेता ने सवाल किया, "अगर किसानों को उनकी उपज के लिए एमएसपी नहीं मिलेगा, तो वे कहां जाएंगे?" उन्होंने कहा, "अगर उद्योगों के हजारों करोड़ रुपये के ऋण माफ किए जा सकते हैं, तो किसानों और खेत मजदूरों के क्यों नहीं?"

सिरसा ने कहा कि किसान पिछले कई दिनों से पंजाब-हरियाणा की शंभू और खनौरी सीमा पर शांतिपूर्ण तरीके से विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने संवाददाताओं से कहा, "हम उनमें से नहीं हैं जिन्होंने सड़कें अवरूद्ध की हैं। अगर हरियाणा सरकार ने हमारे 'दिल्ली चलो' मार्च को रोकने के लिए अवरोधक लगाए हैं, तो हम भी शांतिपूर्वक बैठे हुए हैं और अपना आंदोलन जारी रखे हुए हैं।" एसकेएम ने शनिवार को जारी एक बयान में कहा कि २२ फरवरी, २०२२ को चंडीगढ़ में किसान संगठन की एक आम बैठक में गठित छह सदस्यीय समिति द्वारा अनुमोदित आठ सूत्री प्रस्ताव को एक मार्च को एसकेएम (गैर-राजनीतिक) और केएमएम के प्रतिनिधियों को सौंपा गया था।

एकनाथ शिंदे ने अस्वीकार किया शरद पवार के रात्रिभोज का निमंत्रण, पूर्व नियोजित कार्यक्रमों का दिया हवाला

शरद पवार ने कहा, 'मुझे पता है कि आप २ मार्च को एक सरकारी कार्यक्रम के लिए बारामती आ रहे हैं। सांसद होने के नाते, मेरी बेटी और मैं चाहते हैं कि कार्यक्रम में भाग लें।' उनकी ओर से लिखा गया है कि राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद, मुख्यमंत्री पहली बार बारामती आ रहे हैं और बारामती में नमो महारोजगार कार्यक्रम में भाग लेने के लिए उनकी यात्रा को लेकर मैं बहुत खुश हूं। इसलिए मैं कार्यक्रम के बाद उनके अन्य कैबिनेट सहयोगियों को अपने आवास पर भोजन के लिए निमंत्रण देना चाहूंगा।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने शुक्रवार (१ मार्च) को लोकसभा चुनाव से पहले एनसीपी (शरदचंद्र पवार) प्रमुख शरद पवार द्वारा दिए गए रात्रिभोज के निमंत्रण को अस्वीकार कर दिया। मुख्यमंत्री ने इस कार्यक्रम में शामिल न हो पाने के पीछे 'पूर्व नियोजित कार्यक्रमों' के कारण अपने व्यस्त कार्यक्रम का हवाला दिया है। विशेष रूप से, शरद पवार ने शिंदे, भतीजे अजीत पवार और देवेंद्र फडणवीस को बारामती में अपने आवास पर रात्रिभोज के लिए आमंत्रित किया था, जब तीनों विभिन्न विकासात्मक परियोजनाओं को लॉन्च करने के लिए २ मार्च को शहर का दौरा करेंगे।

शरद पवार की बेटी और मौजूदा सांसद सुप्रिया सुले के खिलाफ अजित पवार द्वारा अपनी पत्नी को बारामती से मैदान में उतारने की अटकलों के बीच पवार ने यह कदम उठाया है। इससे पहले मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उनके डिप्टी देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार को संबोधित एक पत्र में, शरद पवार ने कहा, 'मुझे पता है कि आप २ मार्च को एक सरकारी कार्यक्रम के लिए बारामती आ रहे हैं। सांसद होने के नाते, मेरी बेटी और मैं चाहते हैं कि कार्यक्रम में भाग लें।' उनकी ओर से लिखा गया है कि राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद, मुख्यमंत्री पहली बार बारामती आ रहे हैं और बारामती में नमो महारोजगार कार्यक्रम में भाग लेने के लिए उनकी यात्रा को लेकर मैं बहुत खुश हूं। इसलिए मैं कार्यक्रम के बाद उनके अन्य कैबिनेट सहयोगियों को अपने आवास पर भोजन के लिए निमंत्रण देना चाहूंगा। शरद पवार

२ मार्च को बारामती में महारोज़गार मेला कार्यक्रम में आमंत्रित लोगों में से नहीं हैं। वरिष्ठ नेता ने मुख्यमंत्री और उनके विधायकों को अपने आवास गोविंद बाग में रात्रिभोज के लिए भी आमंत्रित किया। रात्रि भोज का निमंत्रण ऐसे समय आया है जब अजित पवार की पत्नी सुनेत्रा पवार ने इस चर्चा के बीच बारामती के मतदाताओं के बीच अपनी पहुंच बढ़ा दी है कि उन्हें सुप्रिया सुले के मुकाबले के लिए मैदान में उतारा जा सकता है।

बारामती लोकसभा सीट १९९६ से शरद पवार और सुप्रिया सुले का निर्विवाद गढ़ बनी हुई है। जहां शरद पवार चार बार चुने गए हैं, वहीं सुप्रिया सुले तीन बार लोकसभा के लिए चुनी गई हैं। जुलाई २०२३ में, अजित पवार ने अपने चाचा शरद पवार के खिलाफ विद्रोह कर दिया और महाराष्ट्र में सत्तारूढ़ भाजपा-शिवसेना सरकार में शामिल हो गए, जिससे एनसीपी में विभाजन हो गया। इस महीने की शुरुआत में, चुनाव आयोग ने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अजित पवार के नेतृत्व वाले गुट को 'असली' एनसीपी घोषित किया और पार्टी का नाम और प्रतीक उनके गुट को सौंप दिया। शरद पवार के नेतृत्व वाला गुट अब 'एनसीपी-शरदचंद्र पवार' के नाम से जाना जाता है।

पीएम चुनने के लिए पाकिस्तान ने खर्च किए १००० करोड़!

भारत की तरह पाकिस्तान भी एक संसदीय लोकतंत्र है. यहां भी संसद में दो सदन होते हैं. लेकिन यहां सत्ता पर बैठी पाक आर्मी ने आजतक किसी प्रधानमंत्री को ५ साल का कार्यकाल पूरा नहीं करने दिया. पाकिस्तान में सामाजिक और राजनीतिक स्थिति कितनी बदहाल है, इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि नेशनल असेंबली चुनाव से एक हफ्ते पहले देश की सबसे लोकप्रिय पार्टी के मुखिया को २४ साल जेल की सजा सुना दी जाती है. साथ ही उनकी पार्टी का चुनाव चिन्ह भी रद्द कर दिया जाता है.

पाकिस्तान में अब तक का सबसे महंगा चुनाव

पाकिस्तान में इस बार अब तक का सबसे महंगा चुनाव हुआ है. रिपोर्ट के अनुसार, करीब एक हजार करोड़ रुपये खर्च हुआ है. ये पिछले चुनाव से २८ गुना ज्यादा खर्चा है. चुनाव में सुरक्षा के लिए ७ लाख जवान तैनात किए गए. १ लाख ३३ हजार जवान तो सिर्फ सिंध में तैनात किए गए. उम्मीदवारों की संख्या भी इस बार ज्यादा है. जहां पिछले २०१८ चुनाव में ११,७०० उम्मीदवार मैदान में थे. इस बार १८,०५९ उम्मीदवार चुनाव लड़े. इनमें निर्दलीय उम्मीदवारों की संख्या ११,७८५ है. इमरान खान की पार्टी PTI से चुनाव चिन्ह छिनने की वजह से निर्दलीय उम्मीदवारों की संख्या पिछली बार से २१ फीसदी ज्यादा है.

चुनाव से पहले तय हो जाता है कौन जीतेगा!

रिटायर्ड रक्षा विशेषज्ञ कर्नल शैलेंद्र ने एक निजी से कहा, पाकिस्तान में चुनाव से पहले तय हो जाता है कि कौन जीतेगा. पाकिस्तान में वहां की आर्मी के सामने किसी की नहीं चलती. यहां तक कि बैलेट बोक्स भी आर्मी के कंट्रोल में रहता है. आतंकवाद पहले ही अपनी चरम सीमा पर है. ये आतंकवादी भी सेना की कटपुतली हैं. यहां होगा वही जो आर्मी चाहेगी.

पाकिस्तान प्रधानमंत्री की कितनी ताकत

यहां के संविधान के अनुसार, पाकिस्तान का प्रधानमंत्री सरकार का प्रमुख होता है और कार्यकारी शक्ति के लिए जिम्मेदार होता है. पाकिस्तान में संसदीय व्यवस्था है, इसलिए आमतौर पर प्रधानमंत्री उस राजनीतिक पार्टी या गठबंधन का नेता होता है जिसके पास नेशनल असेंबली में बहुमत है. किसी भी अन्य मंत्री की तरह प्रधानमंत्री के लिए संसद का सदस्य होना अनिवार्य है. प्रधानमंत्री ही सरकार के प्रमुख काम और मंत्रालयों की देखरेख के लिए मंत्रियों की नियुक्ति करत है. इसके अलावा कुछ दूसरे अहम पदों पर भी प्रधानमंत्री नियुक्ति करता है. जैसे- राष्ट्रमंडल सचिव, स्थानीय मुख्य सचिव, पाकिस्तानी सशस्त्र बलों के प्रमुख प्रशासनिक और सैन्य कर्मी, एनएचए, पीआईए और पीएनएससी जैसी कंपनियों के अध्यक्ष आदि. इतना ही नहीं, संघीय आयोग, सार्वजनिक निकायों के अध्यक्ष, अन्य देशों के राजदूत और उच्चायुक्त जैसे कई खास मंत्रालय आमतौर पर प्रधानमंत्री को सौंपे जाते हैं. देश के परमाणु हथियार पर भी प्रधानमंत्री को कमान और अधिकार दिया गया है. विदेशों में होने वाली बड़ी कॉन्फ्रेंस में पाकिस्तान से प्रधानमंत्री की उपस्थिति आवश्यक होती है. प्रधानमंत्री ही अपने देश का प्रतिनिधित्व करता है.

पाकिस्तान का प्रधानमंत्री बनने के लिए क्या योग्यता होनी चाहिए?

पाकिस्तान के संविधान के अनुसार, प्राधनमंत्री पद का उम्मीदवार पाकिस्तान का नागरिक होना चाहिए. मुसलमान होना चाहिए कम से कम २५ साल की उम्र होनी चाहिए. इसके अलावा इस्लामी शिक्षाओं का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए. इस्लाम द्वारा निर्धारित दायित्वों का पालन करना चाहिए और गंभीर अपराधों में शामिल नहीं होना चाहिए.सबसे खास ये है कि उम्मीदवार को नेक चरित्र का होना चाहिए और आमतौर पर इस्लामी निषेधों का उल्लंघन करने के लिए नहीं जाना जाता हो. प्रधानमंत्री को पाकिस्तान की स्थापना के बाद से राष्ट्रीय एकता के खिलाफ कभी कार्य न किया हो या पाकिस्तान की विचारधारा का विरोध नहीं किया हो.

प्रधानमंत्री पर मुकदमा चलाने का क्या है नियम

पाकिस्तान के संविधान के तहत, प्रधानमंत्री को कार्यकाल के दौरान आपराधिक और नागरिक कार्रवाई से छूट है. इसका मतलब है कि पद पर रहते उनके खिलाफ कोई भी कानूनी कार्रवाई शुरू या जारी नहीं रखी जा सकती है. हालांकि, कार्यकाल समाप्त होने के बाद उनके खिलाफ कार्रवाई की जा सकती है.

हालांकि यह छूट पूरी तरह से नहीं है. उदाहरण के लिए, प्रधानमंत्री को महाभियोग का सामना करना पड़ सकता है और उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डालने या संविधान का उल्लंघन करने जैसे गंभीर अपराधों के लिए मुकदमा चलाया जा सकता है.

संविधान की धारा ६२ के तहत प्रधानमंत्री के लिए कुछ योग्यताएं निर्धारित की गई हैं. यदि प्रधानमंत्री इन योग्यताओं को पूरा नहीं करता है, तो उसे अयोग्य घोषित किया जा सकता है. उदाहरण के लिए २०१७ में पनामा पेपर मामले में नाम आने के बाद पाकिस्तान की सुप्रीम कोर्ट ने उस वक्त के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को अयोग्य घोषित कर दिया था.

ऐसा दावा किया जाता है कि आजादी के बाद से आजतक पूरा मुल्क पाकिस्तान की सेना के साए में चल रहा है. पाकिस्तान में अब तक कोई भी प्रधानमंत्री अपना ५ साल का कार्यकाल पूरा नहीं कर पाया है. यानी कि कोई सरकार पूरे पांच साल नहीं चली. १९४७ से अबतक कुल ३२ प्रधानमंत्री रहें. इनमें से ८ प्रधानमंत्री केयर टेकर रहे, लेकिन कोई भी पांच साल नहीं टिका. इसकी सबसे बड़ी वजह है सेना का सत्ता में दखल. सेना ने जिसको चाहा पीएम बनाया जिसको चाहा पीएम पद से हटाया.

दुनिया की सबसे ताकतवर सेना कौन-से देश की?

दुनियाभर की सैन्य शक्तियों पर नजर रखने वाली वेबसाइट ग्लोबल फायरपॉवर (Global Firepower) ने आखिरी रैंकिंग २०२३ में जारी की थी. ग्लोबल फायरपॉवर ने मारक क्षमता को मापने वाले ६० कारकों के आधार पर १४५ देशों को रेटिंग दी है. इन कारकों में किसी भी देश की सेना में सैनिकों की संख्या, हथियारों की संख्या, उसकी क्षमताएं, रणनैतिक और आर्थिक स्थिति भी देखी जाती है.

इस लिस्ट में सबसे पहला नाम अमेरिका का है. इसके बाद दूसरे नंबर पर रूस, तीसरे पर चीन और चौथे नंबर पर अपना देश भारत है. दुनिया की सबसे ताकतवर सेना के मामले में भारत के बाद यूके, साउथ कोरिया, पाकिस्तान, जापान, फ्रांस, इटली का नाम आता है.

इतनी आसानी से नहीं छूटेगा अब्दुल करीम टुंडा! फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देगी CBI

अजमेर की टाडा कोर्ट ने १९९३ के सीरियल बम ब्लास्ट मामले में गुरुवार को अब्दुल करीम टुंडा को बरी कर दिया था। लेकिन आज शुक्रवार को ही उसे फिर से जेल में डालने की तैयारी शुरू हो गई है। हिन्दुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट के मुताबिक केंद्रीय जांच ब्यूरो (CBI) १९९३ सीरियल बम धमाकों से जुड़े मामले के मुख्य आरोपी अब्दुल करीम टुंडा को बरी किए जाने के खिलाफ याचिका दाखिल करेगी। जानकारी के मुताबिक CBI ये अपील सुप्रीम कोर्ट में दायर करेगी। अब्दुल करीम टुंडा को सबूतों की कमी के आधार पर बरी कर दिया गया था।

अयोध्या में बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद १९९३ में कोटा, लखनऊ, कानपुर, हैदराबाद, सूरत और मुंबई की ट्रेनों में सीरियल बम ब्लास्ट हुए थे और टुंडा इन्हीं मामलों में आरोपी था। टाडा कोर्ट ने टुंडा को बरी कर दिया और दो आतंकवादियों इरफान और हमीदुद्दीन को दोषी करार दिया गया। इरफान और हमीदुद्दीन को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

लेकिन CBI टुंडा को इतनी आसानी से छूटने नहीं देना चाहती है। इसकी वजह है कि एजेंसी ने अब्दुल करीब टुंडा को ही इन धमाकों का मास्टर माइंड माना था। टुंडा की २०१३ में नेपाल बॉर्डर के पास गिरफ्तारी हुई थी। टुंडा पर देश के विभिन्न स्थानों पर आतंकवाद के मामले चल रहे हैं।

टुंडा पर आरोप है कि उसने युवाओं को भारत में आतंकवादी गतिविधियां करने के लिए प्रशिक्षित किया था। एक पाकिस्तानी नागरिक जुनैद के साथ उसने कथित रूप से १९९८ में गणेश उत्सव के दौरान आतंकवादी हमला करने की योजना बनाई थी।

१९९३ सीरियल ब्लास्ट (१९९३ Serial Bomb Blast) के आरोपी अब्दुल करीम टुंडा (Abdul Karim Tunda) को अजमेर की टाडा कोर्ट ने सबूतों के अभाव में बरी कर दिया है. आतंकवादी दाऊद इब्राहिम के करीबी माने जाने वाले टुंडा को बम बनाने के कौशल के लिए 'डॉ बम' के रूप में जाना जाता है. कोर्ट ने दो अन्य आरोपियों इरफान और हमीदुद्दीन को इस मामले में उम्रकैद की सजा सुनाई है. याचिकाकर्ता के वकील शफकत सुल्तानी ने अजमेर में बताया कि अब्दुल करीम टुंडा को सभी आरोपों से बरी कर दिया गया है. अभियोजन पक्ष आरोपों को साबित करने के लिए पर्याप्त सबूत पेश नहीं कर सका.

अब्दुल करीम उर्फ टुंडा के कुछ रिश्तेदार १९८५ के भिवंडी के दंगों में मारे गए थे। टुंडा पर आरोप है कि उसने इसका बदला लेने के लिए आतंकवाद की राह पकड़ ली थी। वह लश्कर जैसे कुख्यात संगठन संग जुड़ा हुआ था। अब्दुल करीम का नाम टुंडा एक हादसे के बाद पड़ा था। टुंडा एक मस्जिद में कुछ युवाओं को पाइप गन चलाकर दिखा रहा था। तभी उसकी गन फट गई, जिसमें उसके एक हाथ का पंजा उड़ गया। इसके कारण उसका नाम टुंडा पड़ गया था।

पकवान

सामग्री-

१/२ उड़द दाल
२ बड़े चम्मच चना दाल (चना दाल के चिप्स)
२ कप चावल
१/२ छोटा चम्मच मेथी दाना
१/४ कप पोहा (ऑप्शनल)
१/२ सेंधा नमक
१/४ कप छाछ
१-२ कप पानी
३ बड़े चम्मच मक्खन
१ बड़ा प्याज
१ मीडियम टमाटर
१/४ गाजर बारीक कटी हुई
२ बारीक कटी हरी मिर्च
१/४ कप हरा धनिया, बारीक कटा

इसे भी पढ़ें: साउथ इंडियन फूड के हैं शौकीन, तो एक बैटर से बनाएं ४ अलग-अलग डिश

बनाने का तरीका-

सबसे पहले उड़द दाल, चना दाल और मेथी को अच्छी तरह धोकर कम से कम ४-५ घंटे के लिए भिगोएं।

अब एक दूसरे कटोरे में चावल को भी धोकर भिगो लें। आप चाहें तो इसमें पोहा भी डाल सकती हैं, लेकिन उसे १५ मिनट पहले ही भिगोएं।

निर्धारित समय बाद, पानी निकालकर दोनों चीजों को अलग-अलग ग्राइंड कर लें। इसमें पानी डालकर दाल और चावल के बैटर की कंसिस्टेंसी को ठीक करें। अब दाल के बैटर में चावल का बैटर डालने के साथ सेंधा नमक डालकर मिलाएं। इसमें छाछ डाल कर तब तक मिलाएं, जब तक कि बैटर फ्रॉथी न हो जाए। अब इस तैयार बैटर को रात भर ढककर गर्म जगह रख दें। एक प्लेट में सारी सब्जियों को काटकर रख लें। अब एक तवे को गर्म करें और ठंडे पानी के छींटों से तापमान सेट करें। उसमें मक्खन डालकर ग्रीस करें। अब एक करछी बैटर लेकर फैला लें। इसमें बारीक कटी सब्जियां डालकर इसे दोनों तरफ से सेक लें। मीडियम आंच पर उत्तपम को अच्छी तरह से सेक लें और फिर सांभर, हरी चटनी और नारियल की चटनी के साथ सर्व करें।

सामग्री:

मसूर दाल आटा-१ कप,
बेसन-१ चम्मच,
चावल का आटा-१/२ चम्मच,
हींग- १ चुटकी,
काली मिर्च पाउडर-१/३ चमच,
नमक-स्वादानुसार,
तेल-तलने के लिए,
हल्दी-१ चम्मच,
चाट मसाला-१/२ चम्मच

विधि: मसूर दाल पापड़ बनाने के लिए सबसे पहले एक बाउल में मसूर दाल आटा, चावल का आटा और बेसन को डालकर अच्छे से फेंट लें। अब इस मिश्रण में काली मिर्च, नमक, हल्दी हींग, चाट मसाला और नमक को डालकर अच्छे से मिक्स कर लें। अब ज़रूरत के हिसाब से मिश्रण में पानी को डालकर आटे की तरह गूंथ लें। मिश्रण गूथने के बाद लगभग १५ मिनट के लिए अलग रख दें ताकि मिश्रण सेट कर जाए। १० मिनट बाद मिश्रण में से लेकर छोटी-छोटी लोइयां बनाकर गोल बेल लें और १-२ दिन के लिए धूप में रख दें। अब एक पैन में तेल को डालकर गर्म करें और मसूर दाल के पापड़ को अच्छे से फ्राई कर लें।

पपीता शेक

सामग्री:

ताजा पपीता - ५०० ग्राम
चीनी - ७-८ छोटी चम्मच
दूध - ४०० ग्राम
बर्फ के क्यूब्स - १ गिलास

विधि: पपीता को धोइये और छील कर टुकड़े में काट लीजिये, बीज निकाल कर अलग कर दीजिये. पपीता के टुकड़े और चीनी मिक्सर जार में डाल कर बारीक पीस लीजिये. दूध और बर्फ के क्यूब्स डालिये और मिक्सर चला कर अच्छी तरह मिला दीजिये. आपका पपीता मिल्क शेक तैयार है। ठंडा ठंडा पपीता मिल्क शेक पीजिये।

पकवान

कद्दू की सब्जी

सामग्रीः
कद्दू- १ किलो
चीनी या गुड़ - ५० ग्राम
टमाटर-१
हरी मिर्च - ४ - ५
हल्दी पाउडर -१/२ - चम्मच
लाल मिर्च पाउडर - १ - चम्मच
धनिया पाउडर - २ चम्मच
हींग -१चुटकी
जीरा - १/२ चम्मच
मेथी दाना - १/२ चम्मच
सूखी लाल मिर्च -२
गरम मसाला -१ चम्मच
काला नमक - १/२
नमक - स्वादानुसार
तेल -आवश्यक्तानुसार

विधिः

कद्दू को छोटे टुकड़ों में काट लें इसके साथ टमाटर और हरी मिर्च को भी बारीक काट लें। एक कड़ाही में तेल डालकर गर्म करें और सूखी लाल मिर्च, जीरा, मेथी दाना और हींग डाल कर भून लें। खड़े मसाले भुन जाने के बाद इसमें बारीक कटे टमाटर, हरी मिर्च और अदरक डालें। इसके साथ सभी सूखे मसाले और नमक डालकर अच्छी तरह से भूनें। जब मसाले से तेल अलग होने लगे तब इसमें चीनी या गुड़ डाल कर कुछ देर और पकने दें। चीनी घुलने के बाद इसमें कद्दू डालकर सभी मसालों में मिक्स कर दें। सब्जी को ढककर पकाएं, भंडारे वाली कद्दू की सब्जी तैयार है इसका मजा उठाएं।

हक्का नूडल्स

सामग्री
दो लोग तोस
१/२ पैकेट हक्का नूडल्स
१ लीटर पानी
१ कप पत्ता गोभी
२ गाजर लम्बाई मे कटी हुई
२ शिमला मिर्च लम्बाई मे कटी हुई
२ प्याज लम्बाई मे कटी हुई
हरा प्याज दो डनडी महीन कटी
तेल
टोमेटो केचप
सोया श्वास
चिली सवास
अजीनो मोटो
नमक
सफेद कालीमिर्च

विधिः सबसे पहले पानी को नमक और तेल डाल कर उबलते पानी मे नूडल्स डाल कर पका ले। फिर छलनी की सहायता से नूडल्स को छान ले। गैस पर कढाई गर्म होने पर तेल डालकर। उसमे प्याज को हल्का साटे कर ले

फिर गाजर और शिमला मिर्च पत्ता गोभी को भी साटे कर ले। नूडल्स डालकर उसमे नमक कालीमिर्च और सभी सासॅ मिलाकर तेज आचॅ पर चलाए। ऊपर सै कटे हुए हरे प्याज से गारनिश करे। प्लेट में निकाल कर गर्मा गर्म हक्का नूडल्स सर्व करें।

झुणका

सामग्रीः
बेसन- 1 कप
कटे प्याज- 1 कप
धनिया पत्ता- 4 चम्मच
जीरा- 1 चम्मच
हल्दी- 1 चम्मच
राई- 1 चम्मच
हरी मिर्च- 2 चम्मच
नमक स्वादानुसार

विधिः इसे बनाने के लिए सबसे पहले एक बॉउल में बेसन लें। इसमें पानी डालकर इसका बैटर बनाएं। अब एक पैन में तेल गर्म करें। इसमें राई के दाने, जीरा, हरी मिर्च डालकर भूनें। इसके बाद इसमें प्याज डालकर पका लें। इसके बाद इसमें तैयार बैटर डालें। इसे चलाते रहें और थोड़ा पानी मिलाएं। इसमें हल्दी, नमक डालकर मिलाएं। इसे 10 मिनट तक पका लें। इसे धनिया पत्ता से सजाकर सर्व करें। तैयार है झुणका।

SOFAS

Comfortable seating you can share!

FROM ₹9,500

Wholesale Furniture Market
Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार

फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर

एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

रोज करें खास योगासन...

खराब जीवनशैली या तनाव के कारण त्वचा पर समय से पहले झुरियां नजर आने लगती हैं. अस्वस्थ आहार, धूम्रपान, शराब का सेवन जैसी आदतें भी त्वचा की चमक को कम करती हैं. त्वचा की एक और आम समस्या मुंहासे **(Pimples)** हैं. ये कभी शरीर में होने वाले हार्मोनल बदलावों के कारण विकसित होते हैं, तो कभी खराब पाचन का परिणाम होते हैं. कारण जो भी हो, लेकिन त्वचा से जुड़ी समस्याओं से छुटकारा पाने और इसकी चमक वापस लाने के लिए योग फायदेमंद हो सकता है. कुछ ऐसे योगासन हैं जिनके जरिए खूबसूरत और दमकती त्वचा पाने में मदद मिल सकती है. इन योगासनों का अभ्यास करने से सिर और चेहरे के हिस्से में ब्लड सर्कुलेशन को बढ़ाने में मदद मिलेगी, जो प्राकृतिक रूप से त्वचा में निखार लाएंगे. वहीं उल्टे या सिर के बल करने वाले आसन करने से मस्तिष्क में ऑक्सीजन और खून का बहाव ज्यादा होता है. इससे तंत्रिका तंत्र में सुधार होता है, मेटाबॉलिक दर बढ़ता है और ऊर्जा का स्तर ऊंचा होता है.

सर्वांगासन करने से त्वचा में ढीलापन और झुर्रियों को कम करने में मदद मिलती है. यह आसन सिर को रक्त की आपूर्ति करके डलनेस से छुटकारा पाने में मदद करता है. इससे मुंहासे से निपटने में मदद मिलती है. उर्ध्व धनुरासन को चक्रासन भी कहते हैं. इसमें शरीर धनुष के आकार में होता है. इस आसन में सिर को नीचे लटकाया जाता है जिससे रक्त का प्रवाह ज्यादा होता है. यह चेहरे पर निखार लाने में मदद करता है. यह आसन कठिन जरूर है लेकिन इसका नियमित रूप से अभ्यास करने पर कमर में लचीलापन आता है. यह आसन फेफड़ों में ऑक्सीजन के प्रवाह को बढ़ाता है, जिससे पाचन तंत्र में सुधार आता है.

शीर्षासन को सभी आसनों का राजा माना जाता है. इसे करना शुरुआत में कठिन जरूर है लेकिन इसके बहुत लाभ है. यह सुंदरता और त्वचा के स्वास्थ्य को बनाए रखता है. इस आसन को करने से सिर नीचे की ओर मुड़ जाता है, जिसकी वजह से ऑक्सीजन चेहरे की तरफ संचारित होता है और खून का संचार अच्छा होता है. इससे चेहरे पर चमक आती है और इसके अभ्यास से झुर्रियां गायब होती हैं. खड़े-खड़े आगे झुकने वाले इस आसन में चेहरे पर रक्त प्रवाह बढ़ता है जो त्वचा को चमकाने का काम करता है. यह आसन त्वचा की नई कोशिकाओं को बनाने में मदद करता है.शरीर में ज्यादा गर्मी होने से मुंहासे की परेशानी होती है और इससे त्वचा पर असर पड़ता है. प्राणायाम शरीर को ठंडक देता है. चमकदार त्वचा के लिए अनुलोम-विलोम, शीतली और शीतकारी प्राणायाम व कपालभाती किया जा सकता है. ये नाड़ियों में शुद्ध ऑक्सीजन प्रवाहित करते हैं जिससे त्वचा की चमक बनी रहती है.

हेल्थ का खजाना खजूर

सर्दियों के मौसम में आपने खजूर तो खाया ही होगा. खजूर न सिर्फ स्वादिष्ट बल्कि सेहत के खजाने से भरपूर भी होता है. खजूर की सबसे खास बात है इसमें उन तमाम विटामिन, मिनरल्स की भरपूर मात्रा, जो शरीर के लिए रामबाण औषधि की तरह काम करता है.भरपूर प्रोटीन (Protein) और विटामिन (Vitamins) से लैस खजूर संतुलित तरीके से वजन बढ़ाने में मदद कर सकता है. आप इसे घी के साथ खा सकते हैं और खीरे के साथ भी. सेवन विधि अलग है, क्योंकि ये शरीर के तीन प्रकार यानि वायु, कफ और पित्त प्रधान को देखकर तय किया जाता है. खजूर में आयरन भरपूर मात्रा में होता है. आयरन की कमी शरीर में कई तरह की परेशानियों को जन्म दे सकती है. जैसे सांस का छोटा होना, एनीमिया, थकान आदि. साथ ही ये आपके खून को साफ करने में भी मदद करता है.

खजूर के इस्तेमाल से गठिया रोग में लाभ मिलता है. खजूर में मौजूद मैंग्नीज, सेलेनियम, कॉपर, मैंग्नीशियम जैसे तत्व आपकी हड्डियों की तदंरुस्ती के लिए काफी कारगर होते हैं.

अगर आप रोजाना सुबह पानी भिगो के रखी खजूर का सेवन करते हैं तो इसमें मौजूद फाइबर आपके पाचन तंत्र को बेहतर करता है. कब्ज के रोगियों को खजूर के सेवन की सलाह दी जाती है.

खजूर में कोलेस्ट्रोल और यहां तक की शुगर की मात्रा भी बहुत कम होती है. जिससे दिल की सेहत अच्छी रहती है. शुगर की मात्रा कम होने से भी ये बेहद फायदेमंद है. खजूर दुनिया भर में सबसे ज्यादा इस्तेमाल किए जाने वाले फल में से एक है.

आयुर्वेद (Ayurveda) के अनुसार, खजूर एक चमत्कारी औषधि है और इससे कई रोगों का इलाज किया जा सकता है. शारीरिक कमजोरी हो या शरीर में खून की कमी, हृदय रोग हों. या ज्यादा प्यास लगने की समस्या. इन सबको ठीक करने में खजूर आपकी मदद कर सकता है.

मेष :

मेष राशि के जातकों के लिए दिसंबर माह की शुरुआत थोड़ी उतार-चढ़ाव लिए रह सकती है। इस दौरान आपको घर-परिवार से मध्यम सुख की प्राप्ति होगी। खराब सेहत भी आपकी चिंता का बड़ा विषय बन सकती है। रिश्तों को बेहतर बनाए रखने के लिए अपनी राय किसी पर न थोपें। इस दौरान किसी वरिष्ठ व्यक्ति की सलाह से आप अपनी तमाम परेशानियों का हल खोजने में कामयाब हो जाएंगे। यह समय राजनीतिज्ञों के लिए विशेष रूप शुभ साबित होगा। दिसंबर महीने का उत्तरार्ध आपके परिवारिक जीवन और लव लइफ के लिए बहुत ज्यादा शुभ रहेगा। आपसी प्रेम और विश्वास बढ़ेगा। किसी महत्वपूर्ण कार्य के बन जाने से खुशी प्राप्त होगी।

वृषभः

वृष राशि के जातकों के लिए माह के दूसरे सप्ताह में किसी बड़ी चिंता के कारण मन परेशान रहेगा। समय पर सोचे हुए काम नहीं पूरे होने और दिनचर्या अव्यस्थित रहने के कारण शारीरिक एवं मानसिक थकान रहेगी। इस दौरान अचानक से कुछ बड़े खर्च आ जाने के कारण बजट गड़बड़ा सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में सीनियर अथवा जूनियर से उलझने से बचना चाहिए। आपको किसी भी बड़ी योजना अथवा भूमि-भवन में बहुत सोच-समझकर ही धन निवेश करना चाहिए। प्रेम संबंध के लिए उत्तरार्ध का समय गुडलक लिए हुए है। इस दौरान सिंगल लोगों की जिंदगी में मनचाहे पार्टनर का प्रवेश हो सकता है।

मिथुनः

मिथुन राशि के जातकों के लिए साल का आखिरी महीना करियर-कारोबार की दृष्टि से अनुकूल लेकिन सेहत और संबंध की दृष्टि से थोड़ा प्रतिकूल कहा जाएगा। ऐसे में आपको पूरे महीने अपने रिश्ते-नातों को बेहतर बनाए रखने के साथ अपनी सेहत और खानपान पर पूरा ध्यान देना चाहिए। इस माह भूलकर भी कोई ऐसी बात मुंह से न निकालें जिसके कारण आपके वर्षों से बने-बनाए रिश्ते टूट जाएं। नौकरीपेशा लोगों के लिए दिसंबर महीने के मध्य का समय बेहद शुभ रहने वाला है। इस दौरान आपका प्रमोशन हो सकता है। यदि आप नौकरी में बदलाव के लिए प्रयासरत थे तो आपको किसी अच्छी जगह से ऑफर मिल सकता है। व्यवसाय से जुड़े लोगों को भी कारोबार में खासा मुनाफा और प्रगति होगी। इस दौरान आपको अभिमान और आलस्य से बचने की आवश्यकता रहेगी। सुखी दांपत्य जीवन के लिए भी अपने बिजी शेड्यूल से अपने लइफपार्टनर के लिए समय जरूर निकालें।

कर्कः

कर्क राशि के जातक दिसंबर के महीने में बेवजह के वाद-विवाद में न उलझें। पैतृक संपत्ति की प्राप्ति में अड़चनें आ सकती हैं। कार्यक्षेत्र में आपके विरोधी षडयंत्र रच कर आपकी छवि को धूमिल करने का प्रयास कर सकते हैं। व्यवसाय से जुड़े लोगों को माह की शुरुआत में उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन माह के मध्य में एक बाद फिर आपका कारोबार पटरी पर लौट आएगा। यह समय विदेश से जुड़े कारोबार तथा काम करने वाले नौकरीपेशा लोगों के लिए बेहद शुभ रहने वाला है। किसी प्रिय व्यक्ति से सरप्राइज गिफ्ट मिल सकत है। घर में धार्मिक-मांगलिक कार्यों में शामिल होने के अवसर प्राप्त होंगे।

सिंह :

सिंह राशि के जातकों के लिए दिसंबर का महीना शुभता और सौभाग्य को लिए हुए है। इस माह नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में विशेष सफलता और प्रगति के योग बनेंगे। उनकी अतिरिक्त आय के साधन बनेंगे। संचित धन में वृद्धि होगी। कार्य विशेष को पूरा करने अथवा बिगड़ा काम बनाने में कोई मित्र या प्रभावी व्यक्ति काफी मददगार साबित होगा। माह के उत्तरार्ध में सिंह राशि के जातकों का मन धर्म-अध्यात्म में खूब रमेगा। इस दौरान किसी धार्मिक स्थान पर जाने या फिर किसी धार्मिक कार्यक्रम में सहभागिता का अवसर प्राप्त होगा। परीक्षा-प्रतियोगिता की तैयारी में जुटे छात्रों को शुभ समाचार की प्राप्ति होगी। इस दौरान भूमि-भवन, वाहन आदि की प्राप्ति के योग बनेंगे। प्रेम संबंध की दृष्टि से यह सप्ताह अनुकूल है। लव पार्टनर के साथ प्रेम और विश्वास बढ़ेगा। परिवार के संग हंसी-खुशी समय बिताने के अवसर प्राप्त होंगे। दांपत्य जीवन सुखमय बना रहेगा।

कन्याः

कन्या राशि के जातकों के लिए माह की शुरुआत में नौकरीपेशा व्यक्ति को कामकाज से जुड़ी कुछेक मुश्किलें आ सकती हैं। काम में आने वाली अड़चन के साथ सेहत भी आपकी परेशानी का बड़ा सबब बन सकती है। व्यवसाय से जुड़े लोगों को बाजार में अपनी साख को बनाए रखने के लिए अपने कंपटीटर से कड़ा मुकाबला करना पड़ सकता है। कन्या राशि के जातकों को इस पूरे माह किसी भी प्रकार के जोखिम भरे निवेश से बचना चाहिए। यदि आप पार्टनरशिप में व्यवसाय करते हैं तो भूलकर भी दूसरों के भरोसे

अपना कारोबार न छोड़ें अन्यथा आपको खासा आर्थिक नुकसान उठाना पड़ सकता है। माह के मध्य का समय आपके लिए राहत भरा सकता है। इस दौरान आपके शुभचिंतक, मित्र और परिजन आपके लिए काफी मददगार साबित हो सकते हैं। प्रेम संबंध में सावधानी के साथ कदम आगे बढ़ाएं और अपने साथी के प्रति ईमानदार रहें अन्यथा न सिर्फ बने बनाए संबंध टूट सकते हैं बल्कि आपको बदनामी भी झेलनी पड़ सकती है।

तुला :

तुला राशि के जातकों के लिए दिसंबर का महीना मिलाजुला रहने वाला है। इस दौरान आपके विरोधी आपके मान-सम्मान को ठेस पहुंचाने का काम कर सकते हैं। किसी बात को लेकर अपनों की नाराजगी भी झेलनी पड़ सकती है। इस महीने आप किसी से कोई ऐसा वादा न करें जिसे पूरा करने के लिए आपको बाद में बड़ी परेशानी का सामना करना पड़े। पारिवारिक मसले आपसी सहमति से सुलझेंगे। प्रोफेशनल काम करने वालों के लिए यह समय विशेष रूप से शुभ रहने वाला है। विभिन्न स्रोतों से धन की प्राप्ति होगी लेकिन साथ ही साथ खर्च भी खूब होगा। वैवाहिक जीवन सुखमय बना रहेगा।

वृश्चिकः

दिसंबर महीने की शुरुआत में घर-परिवार से जुड़े मसले आपकी परेशानी का सबब बनेंगे। इस दौरान आपको अपने कागज संबंधी काम सही रखना होंगे अन्यथा बेवजह की परेशानियां झेल नी पड़ सकती हैं। यदि आप किसी नई योजना पर काम करने की सोच रहे हैं तो आपको उसे जल्दबाजी में शुरु करने की बजाय सही समय आने का इंतजार करना उचित रहेगा। दिसंबर महीने के मध्य का समय आपके लिए थोड़ा राहत भरा रह सकता है। करियर-कारोबार में अनुकूल ता बनी रहेगी। नौकरीपेशा लोगों की आमदनी के साधनों में वृद्धि होगी। अचानक धन प्राप्ति योग प्रबल है। किसी योजना या फिर बाजार में फंसा पैसा अप्रत्याशित रूप से निकल आएगा। प्रेम-प्रसंग के मामले में अनुकूलता बनी रहेगी। एकल जीवन जी रहे लोगों का माह के मध्य में विपरीत लिंगी व्यक्ति के प्रति आकर्षण बढ़ेगा।

धनुः

माह के दूसरे सप्ताह में धन लाभ के योग बनेंगे। इस दौरान नौकरीपेशा लोगों की अतिरिक्त आय के स्रोत बनेंगे और उनके संचित धन में वृद्धि होगी। उत्सव आदि में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। समाजसेवा से जुड़े लोगों के मान-सम्मान में वृद्धि होगी। माह के मध्य में आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूरे होंगे। नौकरीपेशा लोगों के अधिकारी उनके कामकाज को लेकर संतुष्ट रहेंगे। युवाओं का अधिकांश समय मौज-मस्ती करते हुए बीतेगा। माह के उत्तरार्ध में आपको अपनी वाणी और व्यवहार पर बहुत ज्यादा नियंत्रण रखने की जरूरत होगी क्योंकि उसी के जरिए आपके काम बनेंगे भी और बिगड़ेंगे भी। प्रेम संबंध के लिए यह माह मिलाजुला रहने वाला है। शादीशुदा लोगों को अपने जीवनसाथी की भावनाओं को इग्नोर नहीं करना चाहिए।

मकरः

यदि आप नौकरीपेशा व्यक्ति हैं तो आपके सिर पर इस माह कामकाज का अतिरिक्त बोझ आ सकता है, जिसे पूरा करने के लिए अधिक परिश्रम और प्रयास करना होगा। कार्यक्षेत्र में परिश्रम के अनुपात में कम फल की प्राप्ति होगी। शारीरिक थकान या फिर पेट संबंधी परेशानियां झेलनी पड़ सकती हैं। माह के मध्य में खुद की सेहत के साथ घर के किसी बुजुर्ग की सेहत भी आपकी चिंता का विषय बनेगी। यदि आप भूमि-भवन या वाहन खरीदने का प्लान कर रहे हैं तो इसके लिए दिसंबर महीने के उत्तरार्ध का समय ज्यादा शुभ रहेगा। इस दौरान यदि आप परिजन को विश्वास में लेकर उनके सहयोग और समर्थन से कोई बड़ा फैसला लेते हैं तो उसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे। प्रेम-प्रसंग के लिए यह समय आपके लिए ज्यादा अनुकूल रहने वाला है। पति-पत्नी के बीच संबंध मधुर बने रहेंगे।

कुंभः

कुंभ राशि के जातकों के लिए दिसंबर महीने की शुरुआत थोड़ी चुनौती भरी रह सकती है। इस नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में सीनियर और जूनियर का सहयोग कम मिल पाएगा तो वहीं विरोधी षडयंत्र रचते हुए नजर आएंगे। उच्च शिक्षा या फिर विदेश में जाकर पढ़ाई करने की कामना में विलंब हो सकता है। इस दौरान आपके सामने कुछेक बड़े खर्च सामने आ सकते हैं, जिसके कारण आपका बना-बनाया बजट गड़बड़ा सकता है। इस दौरान अपने कारोबार पर विशेष ध्यान दें और किसी के बहकावे में आकर पास के फायदे में दूर का नुकसान करने की गलती न करें। रिश्ते-नाते की दृष्टि से माह का पूर्वार्ध थोड़ा चिंताजनक रह सकता है। इस दौरान संतान या परिवार के किसी अन्य सदस्य के साथ मतभेद हो सकता है। यदि आप अपने प्रेम संबंध को विवाह में तब्दील करना चाह रहे थे तो माह के उत्तरार्ध में परिजन इसके लिए स्वीकृति दे सकते हैं। इस दौरान आपको अपनी किसी भी मनोकामना को पूरा करने के लिए पिता या किसी वरिष्ठ व्यक्ति का पूरा समर्थन और सहयोग मिलेगा। आपका जीवनसाथी कठिन समय में आपका संबल बनेगा।

मीनः

महीने की शुरुआत में आपको अपनी सेहत और संबंध आदि को लेकर बहुत ज्यादा सतर्क रहने की आवश्यकता रहेगी। इस दौरान किसी बात को लेकर स्वजनों के साथ मतभेद या बहस हो सकती है। जिससे बचने के लिए आपको अपनी वाणी और व्यवहार पर नियंत्रण रखने की आवश्यकता रहेगी। नौकरीपेशा लोगों को कार्यक्षेत्र में अपने विरोधियों से खूब सतर्क रहना होगा क्योंकि वे आपके काम में बाधा डालने और आपकी छवि को धूमिल करने के लिए साजिश रच सकते हैं। हालांकि कठिन समय में आपके सीनियर और आपके शुभचिंतक सहयोगी आपके साथ खड़े रहेंगे। दिसंबर महीने के दूसरे सप्ताह में घर की किसी महिला सदस्य की सेहत को लेकर आपका मन चिंतित रहेगा। माह के मध्य में नौकरीपेशा लोगों को बड़ा शुभ समाचार मिल सकता है। मनचाहे पद या तबादले की कामना पूरी हो सकती है। बेरोजगार लोगों को रोजगार की प्राप्ति हो सकती है। यदि आप अभी तक सिंगल हैं तो आपके जीवन में मनचाहे व्यक्ति की इंट्री हो सकती है। प्रेम संबंध के लिए यह माह आपके लिए अनुकूल रहने वाला है। लव पार्टनर के साथ आपकी अच्छी ट्यूनिंग बनी रहेगी और उसके साथ आपके रिश्ते प्रगाढ़ होंगे। इस दौरान घर में विशेष धार्मिक अनुष्ठान अथवा तीर्थ यात्रा के योग बनेंगे। माह के उत्तरार्ध में आपके सोचे हुए कार्य समय पर पूर होंगे, जिसके कारण आपके भीतर अलग ही उत्साह और उर्जा बनी रहेगी, लेकिन इस दौरान आपको जोश में आकर होश खोने तथा किसी से गलत व्यवहार करने से बचना होगा।

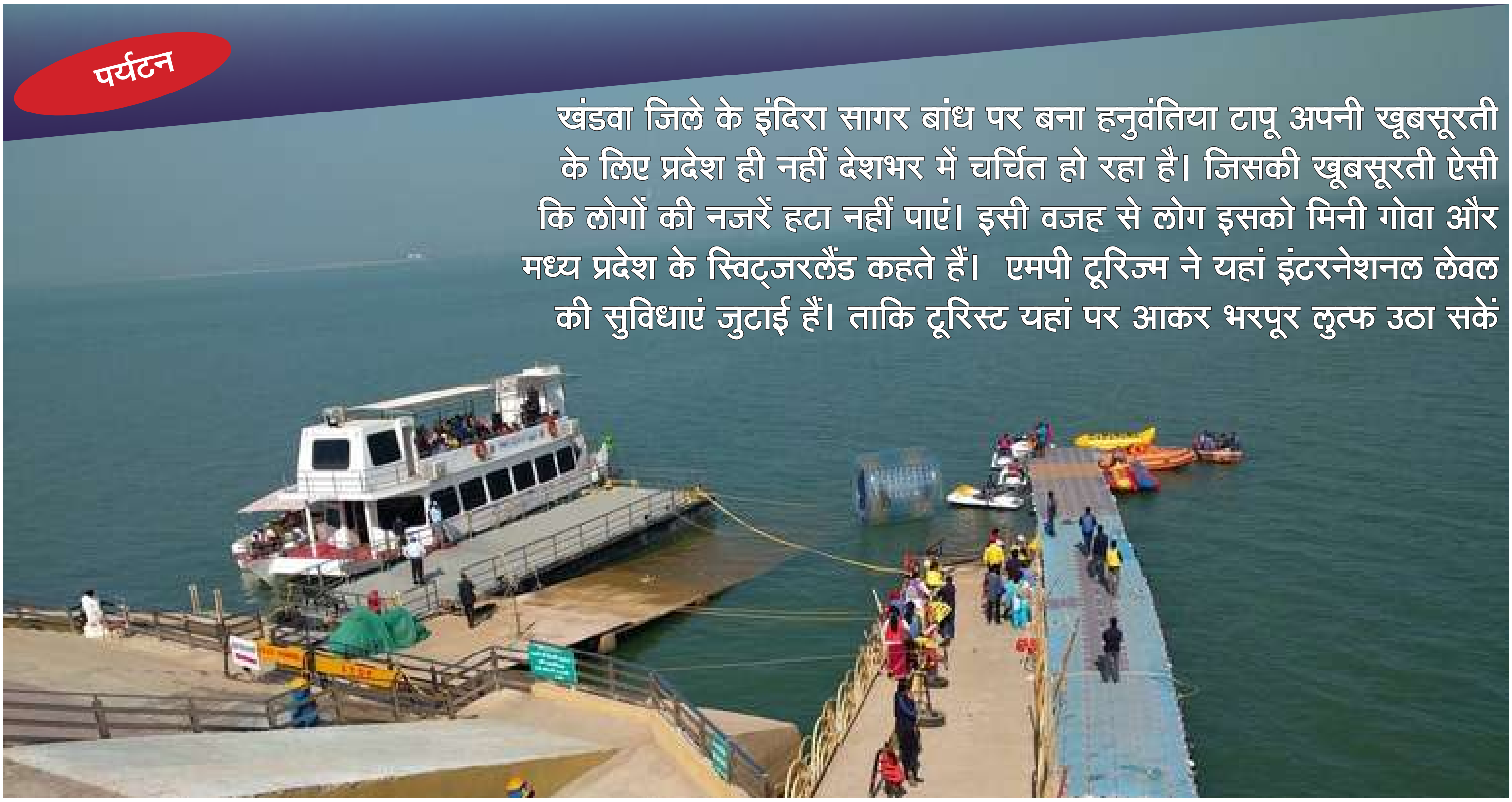

खंडवा जिले के इंदिरा सागर बांध पर बना हनुवंतिया टापू अपनी खूबसूरती के लिए प्रदेश ही नहीं देशभर में चर्चित हो रहा है। जिसकी खूबसूरती ऐसी कि लोगों की नजरें हटा नहीं पाएं। इसी वजह से लोग इसको मिनी गोवा और मध्य प्रदेश के स्विट्जरलैंड कहते हैं। एमपी टूरिज्म ने यहां इंटरनेशनल लेवल की सुविधाएं जुटाई हैं। ताकि टूरिस्ट यहां पर आकर भरपूर लुत्फ उठा सकें

मिनी गोवा और मध्य प्रदेश के स्विट्जरलैंड कहे जाने वाला

हनुवंतिया टापू

हनुवंतिया टापू मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में स्थित बेहद खूबसूरत जगह है। यह द्वीप खंडवा के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक है जो अपने खुबसूरत दृश्यों और वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज के लिए फेमस है, और अपने इसी सुरम्य वातावरण और स्पोर्ट्स एक्टिविटीज हर साल हजारों पर्यटकों को अपनी और अट्रेक्ट करने में कामयाब होता है। बता दे हनुवंतिया द्वीप को हनुमंतिया द्वीप के नाम से भी जाना जाता है जिसे हाल ही में, मध्य प्रदेश पर्यटन विकास केंद्र द्वारा इस जगह को एक बेहतरीन दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित किया गया है। जब भी आप यहाँ आयेंगे तो यह द्वीप आपको बिभिन्न वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज, फ्लोटिंग, ट्रेकिंग, बर्ड वॉचिंग और वनस्पति निशान रोमांच के साथ आश्चर्यचकित करता है। इस आइलैंड में हर साल एक जल महोत्सव का आयोजन भी किया जाता है जिसमे देश के विभिन्न हिस्सों से पर्यटक शामिल हो सकते है। हनुवंतिया टापू कोई प्रकृति द्वारा निर्मित टापू नही है। वास्तव में हनुवंतिया टापू या हनुमंतिया द्वीप का निर्माण इंदिरा सागर बांध के बैकवाटर से हुआ है जिसे मध्य प्रदेश पर्यटन विकास केंद्र द्वारा लगभग २० करोड़ की लागत से तैयार किया गया है।

खंडवा से लगभग ४७ किलोमीटर दूरी पर मुंदी नामक तहसील में स्थित हनुवंतिया टापू का इतिहास कुछ बर्षो पुराना ही है। इस खूबसूरत द्वीप का निर्माण इंदिरा सागर बांध के निर्माण से उत्पन्न हुई झील के कारण हुआ है। जबकि इस टापू को अपना नाम स्थानीय गाँव के नाम से प्राप्त हुआ है। हनुवंतिया टापू में वाटर स्पोर्ट्स से लेकर ट्रेकिंग तक वह सभी एक्टिविटीज अवेलेवल है जो यहाँ आने वाले पर्यटको को कभी निराश नही करती है।

वाटर स्पोर्ट्स : यदि आपको वाटर स्पोर्ट्स एन्जॉय करना पसंद है तो हनुवंतिया टापू में वाटर स्पोर्ट्स की एक लम्बी श्रंखला मौजूद है। जब भी आप यहाँ आयेंगे तो स्कूबा डाइविंग, स्नोर्कलिंग, वॉटर ज़ोरिंग, वॉटर पैरासेलिंग, बनाना बोट, मोटर बोट और जेट स्की, वाटर सर्फिंग, हाउसबोट जैसे विभिन्न वाटर स्पोर्ट्स एक्टिविटीज को एन्जॉय कर सकते है।

लैंड एक्टिविटीज : हनुवंतिया आइलैंड वाटर स्पोर्ट्स के साथ साथ क्लब हाउस, काइट फ्लाइंग, जिप लाइनर, क्लाइंबिंग वॉल, किड्ज जोन, बैलगाड़ी की सवारी जैसी लैंड एक्टिविटीज से भी यहाँ आने वाले पर्यटकों को काफी अट्रेक्ट और मनोरंजित करता है।

एयर एक्टिविटीजः हनुवंतिया आइलैंड लैंड पैरासेलिंग, हॉट एयर बैलून, पैरामोटर्स जैसी एयर एक्टिविटीज के लिए भी काफी फेमस है जिन्हें आप अपने फ्रेंड्स के साथ हनुवंतिया आइलैंड की ट्रिप में एन्जॉय कर सकते है।

ट्रेकिंग : हनुमंतिया ट्रेकर्स के बीच खंडवा के सबसे लोकप्रिय जगहें में से एक है। हनुवंतिया टापू के आसपास एक विशाल जंगल फैला हुआ जहाँ आप प्राकृतिक सौंदर्य के मध्य ट्रेकिंग करते हुए कुछ स्थानीय और विदेशी फूलों और कुछ वन्यजीवों को देख सकते हैं।

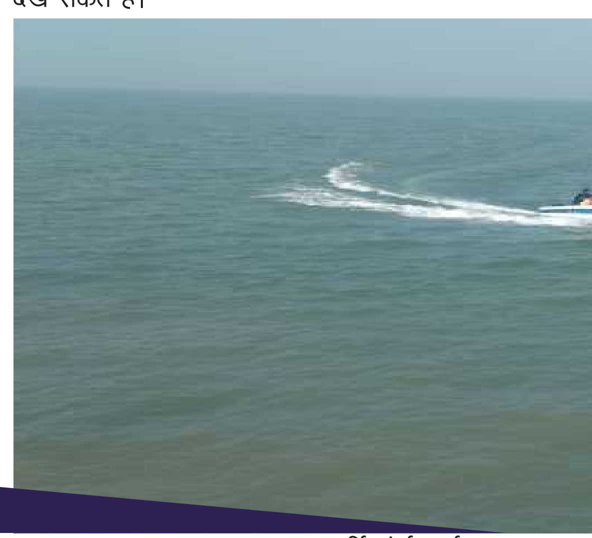

बर्ड वॉचिंगः हरे भरे पेड पौधों से घिरा हुआ हनुवंतिया टापू बर्ड वाचेर्स के लिए भी स्वर्ग के समान है। मोर, काले सारस, एक छोटे से कॉर्मोरेंट और यूरोपीय ऑस्ट्रे यहां पाई जाने वाली प्रजातियां हैं जिन्हें आसानी से देखा जा सकता है। इनके अलावा आप यहां कुछ विदेशी सेंट्रल इंडियन बर्ड प्रजातियां भी देख सकते हैं।

हनुवंतिया आइलैंड में एक्टिविटीज की टाइमिंगस

वाटर एक्टिविटीज का टाइम : सुबह ९.०० बजे से शाम ६.०० तक

एयर एक्टिविटीज का टाइम : सुबह ६.०० बजे से शाम ९.०० तक और शाम ४.०० बजे से शाम ६.०० तक

बैलगाड़ी की सवारी का समय : शाम ४ बजे से शाम ६ बजे तक

सांस्कृतिक कार्यक्रम का समय : शाम ७ बजे से शाम ८ बजे तक

नागचून बांध खंडवाः नागचून बांध खंडवा के प्रमुख पर्यटक स्थल में से एक है। यह बांध घनी हरियाली के शांत वातावरण से घिरा हुआ है जो इसे खंडवा में घूमने के लिए सबसे सुरम्य जगहें में से एक बनाती है।

घंटाघर खंडवाः घंटाघर खंडवा के प्रमुख ऐतिहासिक स्थान में से एक है जिसका निर्माण सन १८८४ में अंग्रेजों द्वारा किया गया था। बता दे यह प्रसिद्ध स्थान सूरज कुंड, पद्म कुंड, भीम कुंड और रामेश्वर कुंड जैसे कुंड के लिए प्रसिद्ध है जो चारों ओर चार दिशाओं में फैले हुए हैं। यदि आप खंडवा में हनुवंतिया टापू घूमने आने वाले है तो आपको अपना कुछ समय निकालकर घंटाघर जरूर आना चाहिये।

दादा धुनी वाले दरबारः दादा धुनी वाले दरबार खंडवा के सबसे प्रसिद्ध धार्मिक स्थलों में से एक है। वास्तव में यह दरबार श्री दादाजी की समाधि है, जो यहाँ आने वाले भक्तो की मनोकामना पूर्ण करने और लोगों के दुखों को दिव्य तरीके से ठीक करने के रूप में जाने जाते है।

गौरी कुंज खंडवाः भारत के सबसे प्रतिष्ठित गायकों में से एक, किशोर कुमार गांगुली को समर्पित, गौरी कुंजा, खांडवा के प्रसिद्ध पर्यटक स्थल में से एक है। राजेश खन्ना द्वारा उद्घाटित, गौरी कुंजा खंडवा में बॉलीवुड प्रेमियों के लिए एक विशेष स्थान है। गौरी कुंज अक्सर विभिन्न कला और सांस्कृतिक प्रदर्शनों की मेजबानी भी करता है जिस दौरान स्थानीय लोगो और काफी संख्या में पर्यटक हिस्सा लेते है।

तुलजा भवानी माता मंदिर खंडवाः तुलजा भवानी माता मंदिर खंडवा के प्रसिद्ध मंदिर और भारत में स्थापित ५१ शक्तिपीठों में से एक है। जहाँ हर दिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु माता तुलजा भवानी को आश्रीर्वाद लेने के लिए यहाँ आते है।

ओंकारेश्वर मंदिर खंडवा : पवित्र नर्मदा नदी के तट पर स्थित ओंकारेश्वर मंदिर भारत में स्थापित १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है। ओंकारेश्वर मंदिर मध्य प्रदेश में हिंदुओं के लिए एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है जहाँ प्रत्येक बर्ष देश के विभिन्न हिस्सों से लाखो श्रद्धालु पवित्र नर्मदा नदी में डुबकी लगाने और भगवान शिव के दर्शन के लिए यहाँ पहुचते है। इसीलिए आप जब भी हनुवंतिया टापू की यात्रा पर आयें तो अपना कुछ समय निकालकर ओंकारेश्वर मंदिर के दर्शन के लिए जरूर आयें।

नव चांदनी देवी धाम : नव चंडी देवी धाम खंडवा में देवी शक्ति को समर्पित एक लोकप्रिय तीर्थ स्थान है। यहां पर नव चंडी के रूप में पूजा की जाती है, देवी शक्ति इस मंदिर की मुख्य देवता हैं। यहां आने का सबसे अच्छा समय फाल्गुन के त्योहारी सीजन के दौरान फरवरी और मार्च के महीने में होता है। इस दौरान एक विशाल मेले का आयोजन किया जाता है जिसे कई सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियां भी होती हैं।

इंदिरा सागर बांध खंडवाः खंडवा में नर्मदा नदी पर बना इंदिरा सागर डेम महत्वपूर्ण परियोजना के साथ साथ खंडवा का एक आकर्षक पर्यटक स्थल और पिकनिक स्पॉट है जो प्रत्येक बर्ष बड़ी मात्रा में पर्यटकों की मेजबानी करता है। यदि आप खंडवा में हनुवंतिया टापू की ट्रिप पर आ रहे हैं तो आप इंदिरा सागर डेम की यात्रा के बारे में भी जरूर सोचना चाहिये।

सैलानी रिजॉर्ट खंडवाः इंदिरा सागर बांध के बैकवाटर में स्थित सैलानी रिजॉर्ट शहर की भीड़ भाड़ से दूर आराम करने के लिए खंडवा की सबसे अच्छी जगहें में से एक है। खूबसूरत जगह भव्य आवास का दावा करती है, जहाँ आप अपनी फैमली के साथ क्वालिटी टाइम स्पेंड करते हुए स्पीड बोटिंग, सर्फिंग, पैडल बोटिंग और क्रूजिंग जैसी कई गतिविधियों का आनंद ले सकते हैं।

Image Credit : Ganesh Kumar Arumugam

अंबानी फैमिली के फंक्शन में बॉलीवुड स्टार्स ने लगाए चार चांद...

३ दिन की प्री-वेडिंग भले ही रविवार को खत्म हो गई हो, लेकिन जामनगर से आए वीडियो और तस्वीरें अभी भी सोशल मीडिया पर छाए हुए हैं। ऐसा ही एक वीडियो है बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान का, जहां होने वाले दूल्हे अनंत अंबानी उन्हें उठाने की कोशिश कर रहे थे।अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट के तीन दिवसीय मेगा प्री-वेडिंग इवेंट में कई बॉलीवुड सितारों का अलग अंदाज देखने को मिला। तीनों खानों के नातू नातू हुक स्टेप से लेकर मां बनने वाली दीपिका पादुकोण के डांडिया खेलने तक, अनंत-राधिका का विवाह पूर्व उत्सव निश्चित रूप से इस साल के सबसे अच्छे आयोजनों में से एक था। ३ दिन की प्री-वेडिंग भले ही रविवार को खत्म हो गई हो, लेकिन जामनगर से आए वीडियो और तस्वीरें अभी भी सोशल मीडिया पर छाए हुए हैं। ऐसा ही एक वीडियो है बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान का, जहां होने वाले दूल्हे अनंत अंबानी उन्हें उठाने की कोशिश कर रहे थे।

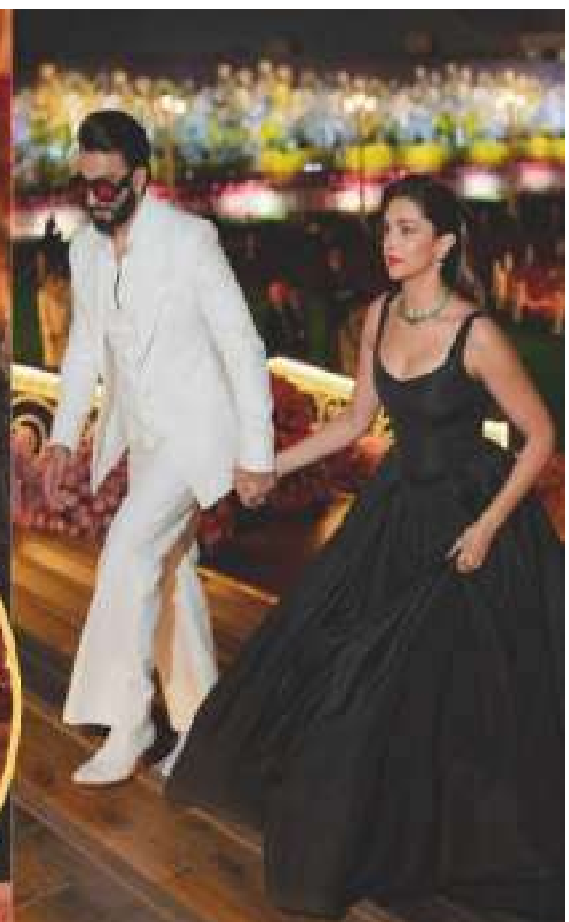

Kangana Ranaut ने उड़ाया अंबानी के फंक्शन में डांस करने वाले स्टार्स का मजाक

अनंत अंबानी और राधिका मर्चेंट की प्री-वेडिंग फंक्शन का जश्न काफी ग्रैंड हुआ है. हर तरफ बस अंबानी परिवार के इस इवेंट के ही चर्चा हो रही है. अनंत-राधिका के फंक्शन में पूरा बॉलीवुड शामिल हुआ था. अमिताभ बच्चन से लेकर सलमान खान, शाहरुख खान तक हर बड़ा नाम स्टार्स इस पार्टी में नजर आया. कई स्टार्स ने अंबानी की पार्टी में परफॉर्म भी किया. हालांकि, कंगना रनौत इस प्री-वेडिंग से नदारत रहीं. अब एक्ट्रेस ने अंबानी की पार्टी में डांस करने वाले सेलेब्स का मजाक उड़ाया है. कंगना रनौत ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक आर्टिकल शेयर किया है. इस आर्टिकल में लिखा हुआ है कि स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने कैसे एक इंटरव्यू में कहा था कि वो कभी भी पैसों के लिए किसी शादी में परफॉर्म नहीं करेंगी. कंगना ने उनकी इस बात की तारीफ करते हुए इंडायरेक्टिली सेलेब्स पर तंज कसा है.

कंगना ने लिखा- 'मैं कई आर्थिक पपरेशानियों से गुजर चुकी हूं. लेकिन लता जी और मैं केवल दो लोग ऐसे हैं जिनके गाने बेहद हिट हैं (फैशन का जलवा, घनी बावली हो गई, लंदन ठुकमदा, साडी गली, विजय भवा) हमारे नाम हैं. लेकिन चाहे मुझे कितना भी लालच दिया गया हो. मैंने कभी शादियों में डांस नहीं किया.'

आगे एक्ट्रेस ने लिखा - कई सुपरहिट आइटन सॉन्ग भी मुझे ऑफर किए गए. जल्द ही मैंने अवॉर्ड शो से भी दूरी बना ली. पॉपुलैरिटी और पैसे को ना कहने के लिए मजबूत चरित्र और गरिमा की जरूरत होती है. शॉर्ट कट की दुनिया में युवा पीढ़ी को ये समझने की जरूरत है कि सिर्फ ईमानदारी का धन अर्जित किया जा सकता है. बता दें कि कगंना रनौत हमेशा ही अपने बेबाक बयानों के लिए जानी जाती हैं. उनकी ये अदा किसी पसंद आती है तो कई लोग उन्हें इसी वजह से ट्रोल भी करते हैं. वर्क फ्रंट की बात करें तो कंगना हाल ही में फिल्म तेजस में नजर आई थीं. इस फिल्म में एक्ट्रेस एयरफोर्स पायलट तेजस की भूमिक भी थीं. हाल ांकि, फिल्म को दर्शकों की तरफ से बिल्कुल अच्छा रिस्पॉन्स नहीं मिला था. वहीं अब कंगना अपनी फिल्म इमरजेंसी में नजर आने वाली हैं. ये फिल्म १४ जून को सिनेमाघरों में रिलीज होगी.

मडगांव एक्सप्रेस का ट्रेलर देख खड़े हुए रोंगटे

कुणाल खेमू की डायरेक्टोरियल डेब्यू 'मडगांव एक्सप्रेस' का ट्रेलर रिलीज हो गया है. फिल्म में प्रतीक गांधी, अविनाश तिवारी और दिव्येंदु तीन दोस्तों के रोल में हैं, जो बचपन से गोवा घूमने का सपना देख रहे हैं, लेकिन जब वे वहां सच में पहुंचते हैं, तो उनका सपना एक बुरे सपने में तब्दील हो जाता है. ट्रेलर में फिल्म के कई रोंगटे खड़े करने वाले सीन हैं. ट्रेलर में दिखाया गया है कि तीन दोस्तों को भारतीय रेल के स्लीपर कोच में यात्रा करने पर कैसा तजुर्बा होता है, जिनकी नींद तब उड़ जाती है, जब उनके होटल के कमरे में कॉकेन मिलता है. पुलिस और गैंगस्टर उनके पीछे पड़ जाते हैं. वे फिर किसी तरह इस जंजाल से निकलने की कोशिश करने लगते हैं. फिल्म में नोरा फतेही, उपेंद्र लिमाय और छाया कदम भी हैं.

'मडगांव एक्सप्रेस' का ट्रेलर लोगों को बहुत पसंद आ रहा है. एक यूजर कहता है, 'मैं कुणाल खेमू पर शर्त लगा सकता हूं. यह हैरान करने वाला है.' दूसरा यूजर लिखता है, 'मजा आ गया, इसका सीक्वल भी आना चाहिए. कास्टिंग सुपर से ऊपर है.' जब मेकर्स 'गो गोवा गोन' का सीक्वल नहीं बना रहे हों, तो यह झुंझलाहट खत्म करने का सबसे अच्छा तरीका है और हम कुणाल खेमू का गोवा देखने के लिए रोमांचित हैं.' फिल्म 'मडगांव एक्सप्रेस' २२ मार्च को रिलीज होगी.

व्यक्तित्व

बिल गेट्स को प्रदान किया गया सम्मानजनक कीस मानवतावादी पुरस्कार २०२३

माइक्रोसॉफ्ट के सह-संस्थापक और बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन के सह-अध्यक्ष बिल गेट्स को उनके उल्लेखनीय एवं परोपकारी कार्यों के लिए उन्हें कीस मानवतावादी पुरस्कार २०२३ से सम्मानित किया गया। अग्रणी वैश्विक परोपकारी श्री बिल गेट्स को उनके परोपकारी कार्यों का यह एक महत्त्वपूर्ण मान्यता है। २८ फरवरी को वैश्विक स्वास्थ्य और शिक्षा को बढ़ाने और असमानता को कम करने के उद्देश्य से नवीन प्रौद्योगिकी समाधानों के माध्यम से जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने में श्री गेट्स के अद्वितीय योगदान के लिए उन्हें सम्मानित किया गया।

कीट-कीस और कीम्स के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत ने अपने संबोधन में कहा, 'बिल गेट्स को कीस मानवतावादी पुरस्कारः२०२३ से सम्मानित करना न केवल उनके असाधारण योगदान का सम्मान करता है अपितु इस मान्यता की प्रतिष्ठा को भी बढ़ाता है। उनकी स्वीकृति विश्व स्तर पर मानवीय कार्यों के लिए एक नया मानदंड स्थापित करता है। यह हमारे लिए अत्यंत सम्मान की बात है कि बिल गेट्स हमारे पुरस्कार विजेताओं की सम्मानित सूची में शामिल हो रहे हैं।''

अपने आभार प्रदर्शन भाषण में, श्री गेट्स ने मान्यता

बिल गेट्स को कीस मानवतावादी पुरस्कार २०२३ प्रदान करना विश्व स्तर पर जीवन को बेहतर बनाने के उनके असाधारण प्रयासों का जश्न है जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए अधिक न्यायसंगत दुनिया के लिए लड़ाई जारी रखने के लिए एक प्रेरणा के रूप में कार्य करता है।

के लिए आभार व्यक्त किया और डॉ. सामंत और कीस के परिवर्तनकारी कार्यों पर विचार किया। 'इस अद्भुत पुरस्कार के लिए और यहां मेरा स्वागत करने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। हालाँकि आपने जो कुछ भी हासिल किया है उसके लिए मुझे आपको बधाई देनी चाहिए,' श्री गेट्स ने कहा। उन्होंने जनजातीय समुदायों को गुणवत्तापूर्ण फ्री शिक्षा प्रदान करने के लिए डॉ. सामंत के दृष्टिकोण और समर्पण की सराहना की और नागरिक भागीदारी और शिक्षा के लिए समुदाय-प्रथम दृष्टिकोण के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

डॉ. अच्युत सामंत द्वारा २००८ में शुरू किया गया कीस मानवतावादी पुरस्कार कीट और कीस का सर्वोच्च सम्मान है जो दुनिया भर में मानवीय कार्यों की भावना को मूर्त रूप देने वाले व्यक्तियोंऔर संगठनों को मान्यता देने के लिए प्रदान किया जाता है। पुरस्कार में एक प्रशस्ति पत्र और एक सोने की परत वाली ट्रॉफी शामिल है जो कीस में एक सार्वजनिक समारोह में दिए गए एक महान सामाजिक संदेश को दर्शाती है।

प्रोफेसर अमरेश्वर गल्ला, प्रो-चांसलर, केआईएसएस डीम्ड यूनिवर्सिटी और यूनेस्को के अध्यक्ष समावेशी संग्रहालय और सतत विरासत विकास ने केआईएसएस की ओर से श्री गेट्स के प्रति आभार व्यक्त किया।

बिल गेट्स को कीस मानवतावादी पुरस्कार २०२३ प्रदान करना विश्व स्तर पर जीवन को बेहतर बनाने के उनके असाधारण प्रयासों का जश्न है जो भविष्य की पीढ़ियों के लिए अधिक न्यायसंगत दुनिया के लिए लड़ाई जारी रखने के लिए एक प्रेरणा के रूप में कार्य करता है।

पुरस्कार समारोह में पूर्व छात्रों के साथ-साथ कीट और कीस के कर्मचारियों और छात्रगण आदि उपस्थित थे। इस आयोजन का एक उल्लेखनीय क्षण लैंगिक समानता पर एक सार्थक बातचीत में श्री गेट्स की भागीदारी थी, जो कीस के पूर्व छात्रा के एक प्रश्न से प्रेरित था।

'विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका महत्त्वपूर्ण': पी के मिश्र

डॉ. मिश्र ने प्रधानमंत्री के २०४७ तक विकसित भारत के दृष्टिकोण की पुष्टि की जिसमें पिछले दशक में एक मजबूत नींव रखने, तेजी से तकनीकी प्रगति करने और युवाओं के लिए नए अवसरों के उद्भव पर जोर दिया गया है। उन्होंने छात्रों से आत्मनिर्भरता के महत्त्व, भ्रष्टाचार, जातिवाद और सांप्रदायिकता में कमी लाने और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए इस दिशा में कड़ी मेहनत करने का आग्रह किया।

भुवनेश्वर, १ मार्चः प्रधानमंत्री के प्रधान सचिव डॉ. पी.के. मिश्र ने शुक्रवार को कीट और कीस का दौरा किया जहां उन्होंने छात्रों के साथ एक इंटरैक्टिव सत्र किया जिसमें २०४७ तक प्रधानमंत्री के विकसित भारत के दृष्टिकोण को प्राप्त करने में शिक्षा की भूमिका पर जोर दिया गया।

कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोसल साइंसेज (कीस) की अपनी यात्रा के दौरान, डॉ. मिश्र ने महिला सशक्तिकरण के महत्त्व और सामाजिक और आर्थिक विकास में शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कड़ी मेहनत, टीम भावना और विकसित भारत के सपने को साकार करने में छात्रों की महत्त्वपूर्ण भूमिका के महत्त्व पर जोर दिया। एक मिशन जो महिला सशक्तिकरण और भागीदारी पर विशेष ध्यान देने के साथ २०४७ तक भारत को एक विकसित राष्ट्र में बदलने की कल्पना करता है। डॉ. मिश्र ने कीट और कीस के संस्थापक डॉ. अच्युत सामंत के साथ पूरे परिसर का दौरा किया। संस्थापक ने डॉ. मिश्र की उनके नेतृत्व और कई परिवर्तनकारी नीतियों में सबसे आगे रहने के लिए उन्मुक्त रूप से प्रशंसा की।

नॉलेज ट्री पहल के तहत कीट के छात्रों के साथ एक उत्साहवर्धक चर्चा करते हुए डॉ. मिश्र ने संस्थान की उल्लेखनीय असाधारण यात्रा की प्रशंसा की और कहा कि वह कीट शैक्षणिक समूह संस्थानों में समावेशी वास्तुकला और छात्र आबादी की विविधता से प्रभावित हैं जिसमें कई आदिवासी और पिछड़े शामिल हैं। और पहाड़ी क्षेत्र, आदिवासी संस्कृति और मूल्यों की समावेशिता और संरक्षण की दिशा में एक सराहनीय प्रयास को दर्शाते हैं।

उन्होंने कहा कि एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति के बारे में बात करना जो सभी को समान पहुंच प्रदान करती है, शिक्षा को और अधिक समावेशी बनाने और पहले से ही कई उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में काम करने के लिए कीट और कीस की प्रशंसा की।

डॉ. मिश्र ने प्रधानमंत्री के २०४७ तक विकसित भारत के दृष्टिकोण की पुष्टि की जिसमें पिछले दशक में एक मजबूत नींव रखने, तेजी से तकनीकी प्रगति करने और युवाओं के लिए नए अवसरों के उद्भव पर जोर दिया गया है। उन्होंने छात्रों से आत्मनिर्भरता के महत्त्व, भ्रष्टाचार, जातिवाद और सांप्रदायिकता में कमी लाने और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए इस दिशा में कड़ी मेहनत करने का आग्रह किया।

उन्होंने आने वाले दशकों में स्टार्ट-अप के लिए अनुकूल पारिस्थितिकी तंत्र का संकेत देते हुए आकांक्षाओं को सरकारी नौकरियों से उद्यमिता की ओर स्थानांतरित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। समग्र विकास को प्रोत्साहित करते हुए डॉ. मिश्र ने छात्रों से बड़े पैमाने पर समाज में योगदान देने के लिए खेल और योग सहित शिक्षा से परे गतिविधियों में शामिल होने का आग्रह किया।

पतंजलि को सुप्रीम कोर्ट का कंटेंप्ट नोटिस

बीमारी ठीक करने के दावा करने वाले विज्ञापनों पर रोक

पतंजलि के खिलाफ इंडियन मेडिकल एसोशिएसन यानी IMA ने २०२२ में मामला दाखिल किया था। आरोप था कि बाबा रामदेव सोशल मीडिया पर एलोपेथी के खिलाफ गलत जानकारी फैला रहे हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को बाबा रामदेव की कंपनी पतंजलि आयुर्वेद के गुमराह करने वाले दवा विज्ञापनों पर रोक लगा दी है। दरअसल, कोर्ट ने पिछले साल कंपनी को ऐसे विज्ञापन नहीं देने का निर्देश दिया था। कंपनी ने इसे नजरअंदाज किया। इस पर कोर्ट ने कंपनी और मैनेजिंग डायरेक्टर (श्रु) आचार्य बालकृष्ण को अवमानना नोटिस जारी किया है। सुप्रीम कोर्ट इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (IMA) की ओर से १७ अगस्त २०२२ को दायर की गई याचिका पर सुनवाई कर रही थी। इसमें कहा गया है कि पतंजलि ने कोविड वैक्सीनेशन और एलोपैथी के खिलाफ निगेटिव प्रचार किया। वहीं खुद की आयुर्वेदिक दवाओं से कुछ बीमारियों के इलाज का झूठा दावा किया। केस की अगली सुनवाई १९ मार्च को होगी।

१० जुलाई, २०२२ को पब्लिश पतंजलि वेल नेस का विज्ञापन। एडवर्टाइजमेंट में एलोपैथी पर 'गलतफहमियां' फैलाने का आरोप लगाया गया था। इसी विज्ञापन को लेकर IMA ने १७ अगस्त २०२२ को याचिका लगाई थी। जस्टिस हिमा कोहली और अहसानुद्दीन अमानुल्लाह की बेंच ने कहा- पतंजलि भ्रामक दावे करके देश को धोखा दे रही है कि उसकी दवाएं कुछ बीमारियों को ठीक कर देंगी, जबकि इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं है। पतंजलि ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडीज (आपत्तिजनक विज्ञापन) एक्ट में बताई गई बीमारियों के इलाज का दावा करने वाले अपने प्रोडक्ट्स का विज्ञापन नहीं कर सकती।

कोर्ट ने सरकार से पूछा कि पतंजलि के विज्ञापनों के खिलाफ ड्रग्स एंड मैजिक रेमेडीज (आपत्तिजनक विज्ञापन) अधिनियम १९५४ के तहत क्या कार्रवाई की गई है। केंद्र की तरफ से एडिशनल सॉलिसिटर जनरल (ASG) ने कहा कि इस बारे में डेटा इकट्ठा किया जा रहा है। कोर्ट ने इस जवाब पर नाराजगी जताई और कंपनी के विज्ञापनों पर नजर रखने का निर्देश दिया।

आईएमए ने दिसंबर २०२३ और जनवरी २०२४ में प्रिंट मीडिया में जारी किए गए विज्ञापनों को कोर्ट के सामने पेश किया। इसके अलावा २२ नवंबर २०२३ को पतंजलि के CEO बालकृष्ण के साथ योग गुरु रामदेव की एक प्रेस कॉन्फ्रेंस के बारे में भी बताया। पतंजलि ने इन विज्ञापनों में मधुमेह और अस्थमा को 'पूरी तरह से ठीक' करने का दावा किया था।

ये प्रेस कॉन्फ्रेंस सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई के ठीक एक दिन बाद की गई थी। २१ नवंबर २०२३ को हुई सुनवाई में जस्टिस अमानुल्लाह ने कहा था- पतंजलि को सभी भ्रामक दावों वाले विज्ञापनों को तुरंत बंद करना होगा। कोर्ट ऐसे किसी भी उल्लंघन को बहुत गंभीरता से लेगा और हर एक प्रोडक्ट के झूठे दावे पर १ करोड़ रुपए तक जुर्माना लगा सकता है।

कोर्ट ने निर्देश दिया था कि पतंजलि आयुर्वेद भविष्य में ऐसा कोई विज्ञापन प्रकाशित नहीं करेगा और यह भी तय करेगा कि प्रेस में उसकी ओर से इस तरह के कैजुअल स्टेटमेंट न दिए जाएं। बेंच ने यह भी कहा कि वह इस मुद्दे को 'एलोपैथी बनाम आयुर्वेद' की बहस नहीं बनाना चाहती बल्कि भ्रामक चिकित्सा विज्ञापनों की समस्या का वास्तविक समाधान ढूंढना चाहती है। इससे पहले हुई सुनवाई में तत्कालीन चीफ जस्टिस एनवी रमन्ना ने कहा था, 'बाबा रामदेव अपनी चिकित्सा प्रणाली को लोकप्रिय बना सकते हैं, लेकिन उन्हें अन्य प्रणालियों की आलोचना क्यों करनी चाहिए। हम सभी उनका सम्मान करते हैं, उन्होंने योग को लोकप्रिय बनाया, लेकिन उन्हें अन्य प्रणालियों की आलोचना नहीं करनी चाहिए।'

रामदेव बाबा ने दावा किया था कि उनके प्रोडक्ट कोरोनिल और स्वसारी से कोरोना का इलाज किया जा सकता है। इसके अलावा भी पतंजलि अपने कुछ अन्य प्रोडक्ट्स को लेकर विवादों में रही है। २०१५ में कंपनी ने इंस्टेंट आटा नूडल्स लॉन्च करने से पहले फूड सेफ्टी एंड रेगुलेरिटी अथॉरिटी ऑफ इंडिया (FSSAI) से लाइसेंस नहीं लिया था। इसके बाद पतंजलि को फूड सेफ्टी के नियम तोड़ने के लिए लीगल नोटिस का सामना करना पड़ा था।

त्योहार

सांस्कृतिक, धार्मिक और पारंपरिक त्योहार होली...

होली हिंदू धर्म का प्रमुख पर्व है। बसंत का महीना लगने के बाद से ही इसका इंतजार शुरू हो जाता है। फाल्गुन शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा की रात होलिका दहन किया जाता है और इसके अगले दिन होली मनाई जाती है। हिंदू धर्म के अनुसार होलिका दहन को बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माना गया है। होली एक सांस्कृतिक, धार्मिक और पारंपरिक त्योहार है। पूरे भारत में इसका अलग ही जश्न और उत्साह देखने को मिलता है। होली भाईचारे, आपसी प्रेम और सद्भावना का त्योहार है। इस दिन लोग एक दूसरे को रंगों में सराबोर करते हैं। घरों में गुझिया और पकवान बनते हैं। लोग एक दूसरे के घर जाकर रंग-गुलाल ल गाते हैं और होली की शुभकामनाएं देते हैं। ऐसे में आइए जानते हैं इस साल होली की सही तारीख और शुभ मुहूर्त क्या है...

फाल्गुन पूर्णिमा को होलिका दहन और इसके अगले दिन होली मनाई जाती है। इस साल फाल्गुन पूर्णिमा तिथि २४ मार्च को सुबह ०९ बजकर ५४ मिनट से शुरू होगी। वहीं इस तिथि का समापन अगले दिन यानी २५ मार्च को दोपहर १२ बजकर २९ मिनट पर होगा। २४ मार्च को होलिका दहन है। इस दिन होलिका दहन के लिए शुभ मुहूर्त देर रात ११ बजकर १३ मिनट से लेकर १२ बजकर २७ मिनट तक है। ऐसे में होलिका दहन के लिए आपको कुल १ घंटे १४ मिनट का समय मिलेगा।

होलिका के अगले दिन होली मनाई जाती है, इसलिए इस साल २५ मार्च को होली है। इस दिन देशभर में धूमधाम से होली मनाई जाएगी।

होलिका दहन की पूजा करने के लिए सबसे पहले स्नान करना जरूरी है।

स्नान के बाद होलिका की पूजा वाले स्थान पर उत्तर या पूरब दिशा की ओर मुंह करके बैठ जाएं।

पूजा करने के लिए गाय के गोबर से होलिका और प्रहलाद की प्रतिमा बनाएं।

वहीं पूजा की सामग्री के लिए रोली, फूल, फूलों की माला, कच्चा सूत, गुड़, साबुत हल्दी,.मूंग, बताशे, गुलाल नारियल, ५ से ७ तरह के अनाज और एक लोटे में पानी रख लें।

रंगों का जीवंत और आनंदमय त्योहार होली २५ मार्च २०२४ को मनाया जाएगा। यह दो दिवसीय उत्सव है जो वसंत के आगमन और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। सभी उम्र, लिंग और सामाजिक पृष्ठभूमि के लोग रंगीन पाउडर फेंकने, गाने, नृत्य करने और स्वादिष्ट भोजन का आनंद लेने के लिए एक साथ आते हैं। हिंदुओं में होली का अपना बड़ा धार्मिक महत्व है। यह त्यौहार हिन्दू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है। हिंदू होली का त्योहार बेहद खुशी और उत्साह के साथ मनाते हैं। यह त्यौहार लगातार दो दिनों तक मनाया जाता है, एक दिन छोटी होली और दूसरे दिन दुल्हेंडी जिसे बड़ी होली या रंग वाली होली के नाम से भी जाना जाता है। छोटी होली के दिन लोग अलाव जलाते हैं, उस होलिका की पूजा करते हैं, उसकी ७ सात बार परिक्रमा करते हैं और फिर रात में होलिका दहन किया जाता है। दुल्हेंडी के दिन लोग रंग और पानी से पूजा करते हैं। वे एक-दूसरे के घर जाते हैं और उनके चेहरे पर रंग या गुलाल लगाते हैं और इस रंगीन त्योहार को बेहद खुशी के साथ मनाते हैं। वे मिठाइयाँ भी बाँटते हैं, नाश्ता करते हैं और संगीत बजाते हैं और अपने प्रियजनों के साथ इस त्योहार का आनंद लेते हैं।

इसके बाद इन सभी पूजन सामग्री के साथ पूरे विधि-विधान से पूजा करें। मिठाइयां और फल चढ़ाएं।

होलिका की पूजा के साथ ही भगवान नरसिंह की भी विधि-विधान से पूजा करें और फिर होलिका के चारों ओर सात बार परिक्रमा करें।

होली को रंगों का त्योहार कहा जाता है क्योंकि यह एक ऐसा उत्सव है जहां लोग एक-दूसरे पर चमकीले रंग का पाउडर, जिसे 'गुलाल' कहते हैं, फेंकते हैं। इस परंपरा को 'होली खेल ना' के रूप में जाना जाता है और यह त्योहार के सबसे महत्वपूर्ण अनुष्ठानों में से एक है। होली के दौरान इस्तेमाल किए जाने वाले रंग आमतौर पर फूलों और जड़ी-बूटियों जैसी प्राकृतिक सामग्रियों से बनाए जाते हैं और उनके अलग-अलग प्रतीकात्मक अर्थ होते हैं। उदाहरण के लिए, लाल प्रेम और उर्वरता का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि हरा नई शुरुआत और विकास का प्रतिनिधित्व करता है। ऐसा माना जाता है कि रंग लोगों की विभिन्न भावनाओं और मनोदशाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें वे त्योहार के दौरान व्यक्त करते हैं। कुल मिल ाकर, उत्सव की रंगीन और आनंदमय प्रकृति ने होली को रंगों के त्योहार का खिताब दिला दिया है।

होली उत्सव एक सप्ताह से अधिक समय तक चलता है, जहां प्रतिभागी नृत्य करते हैं, गाते हैं और रंग में डूब जाते हैं, साथ ही कभी-कभार ठंडाई का भी सेवन करते हैं - होली के त्योहार का पर्याय एक पारंपरिक पेय है।

होलिका दहन क्या है?

होलिका दहन, जिसे छोटी होली भी कहा जाता है, होली उत्सव का पहला दिन है। यह होली से पहले शाम को मनाया जाता है, और यह होलिका नामक राक्षसी को जलाने का प्रतीक है, जिसने भगवान विष्णु के भक्त प्रह्लाद को मारने की कोशिश की थी। होलिका दहन बुराई का प्रतीकात्मक दहन और बुराई पर अच्छाई की जीत का उत्सव है। होलिका दहन किसी के जीवन से अहंकार, नकारात्मकता और बुराई को जलाने का प्रतीक है। यह एक अनुस्मारक है कि बुराई पर हमेशा अच्छाई की जीत होती है। होलिका दहन की अग्नि को पवित्र माना जाता है और इसका उपयोग अगले दिन होली जलाने के लिए किया जाता है।

होली के मुख्य दिन को धुलेटी, रंगवाली होली या धुलंडी के नाम से जाना जाता है। यह होलिका दहन के अगले दिन मनाया जाता है, और यह वह दिन है जब लोग खेल-खेल में एक-दूसरे पर रंगीन पाउडर और पानी फेंकते हैं। होल ी संकोच त्यागने, दूसरों को क्षमा करने और जीवन की खुशियाँ मनाने का समय है।

लठ्ठमार होली क्यों मनाई जाती है?

यह त्यौहार एक प्रसिद्ध हिंदू कथा का मनोरंजन माना जाता है, जिसके अनुसार, भगवान कृष्ण (जो नंदगांव गांव के रहने वाले थे) ने अपनी प्रिय राधा के शहर बरसाना का दौरा किया था। यदि किंवदंती पर विश्वास किया जाए, तो कृष्ण ने राधा और उनकी सहेलि यों को चिढ़ाया, जिन्होंने बदले में उनकी प्रगति पर क्रोधित होकर उन्हें बरसाना से बाहर निकाल दिया। किंवदंती के अनुरूप, नंदगांव के पुरुष हर साल बरसाना शहर जाते हैं, लेकिन वहां की महिलाओं की लाठियों (उर्फ लाठियों) से उनका स्वागत किया जाता है। महिलाएं पुरुषों पर लाठियां बरसाती हैं, जो जितना संभव हो सके खुद को बचाने की कोशिश करते हैं।

बदकिस्मत लोगों को उत्साही महिल ाओं द्वारा पकड़ लिया जाता है, जो फिर पुरुषों को महिलाओं के कपड़े पहनाती हैं और सार्वजनिक रूप से नृत्य करती हैं। उत्सव बरसाना में राधा रानी मंदिर के विशाल परिसर में होता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह देश का एकमात्र मंदिर है जो राधा को समर्पित है।

लठमार

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-८९

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 1,000/- का नकद इनाम!

१. शारदा एक्ट , जो हरविलाश शारदा द्वारा प्रस्तावित किया , किससे सम्बन्धित है ?

२. धरती का एयर कंडीशनर क्या है?

३. स्वैने फ्लू किस वायरस से होता है?

४. संसार का चीनी का कटोरा (दैंत) कोनसा राष्ट्र कहलाता है ?

५. संसार की सबसे लम्बी नदी कौनसी है ?

६. संसार की सबसे खारी पानी की झील कोंसी है ?

७. संसार की सबसे ऊची पर्वत चोटी कोनसी है ?

८. संसार का सबसे ठंडा स्थान कोनसा है ?

९. संसार का सबसे बड़ा द्वीप (ग्रैंह्) कोनसा है ?

१०. संसार की कोनसी नदी सबसे ज्यादा पानी समुद्र में पहुचाती है ?

११. उगते हुऐ सूर्य का देश के नामसे कोनसा देश जान जाता है ?

१२. संसार का सबसे बड़ा महासागर कोनसा है ?

रेड क्रॉस की स्थापना किसने की ?

१४.अर्ध रात्री का सूर्य’ कोनसा सा देश कहलाता है ?

१५. संसार का वह देश जिसने सबसे पहले महिलाओ को मतदान का अधिकार दिया ?

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in, mangsom@rediffmail.com
Website: swarnimumbai.com

नामः...

पूरा पताः ....

....

....

....

फोन नं.: ....

बाल-कथा

बगुला भगत

एक वन प्रदेश में एक बहुत बडा तालाब था। हर प्रकार के जीवों के लिए उसमें भोजन सामग्री होने के कारण वहां नाना प्रकार के जीव, पक्षी, मछलियां, कछुए और केकडे आदि वास करते थे। पास में ही बगुला रहता था, जिसे परिश्रम करना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था। उसकी आंखें भी कुछ कमज़ोर थीं। मछलियां पकडने के लिए तो मेहनत करनी पडती हैं, जो उसे खलती थी। इसलिए आलस्य के मारे वह प्रायः भूखा ही रहता। एक टांग पर खडा यही सोचता रहता कि क्या उपाय किया जाए कि बिना हाथ-पैर हिलाए रोज भोजन मिले। एक दिन उसे एक उपाय सूझा तो वह उसे आजमाने बैठ गया।

बगुला तालाब के किनारे खडा हो गया और लगा आंखों से आंसू बहाने। एक केकडे ने उसे आंसू बहाते देखा तो वह उसके निकट आया और पूछने लगा 'मामा, क्या बात है भोजन के लिए मछलियों का शिकार करने की बजाय खडे आंसू बहा रहे हो?'

बगुले ने ज़ोर की हिचकी ली और भर्राए गले से बोला 'बेटे, बहुत कर लिया मछलियों का शिकार। अब मैं यह पाप कार्य और नहीं करुंगा। मेरी आत्मा जाग उठी हैं। इसलिए मैं निकट आई मछलियों को भी नहीं पकड रहा हूं। तुम तो देख ही रहे हो।' केकडा बोला 'मामा, शिकार नहीं करोगे, कुछ खाओगे नहीं तो मर नहीं जाओगे?'

बगुले ने एक और हिचकी ली 'ऐसे जीवन का नष्ट होना ही अच्छा है बेटे, वैसे भी हम सबको जल्दी मरना ही है। मुझे ज्ञात हुआ है कि शीघ्र ही यहां बारह वर्ष लंबा सूखा पडेगा।'

बगुले ने केकडे को बताया कि यह बात उसे एक त्रिकालदर्शी महात्मा ने बताई हैं, जिसकी भविष्यवाणी कभी ग़लत नहीं होती। केकडे ने जाकर सबको बताया कि कैसे बगुले ने बलिदान व भक्ति का मार्ग अपना लिया हैं और सूखा पडने वाला हैं।

उस तालाब के सारे जीव मछलियां, कछुए, केकडे, बत्तखें व सारस आदि दौडे-दौडे बगुले के पास आए और बोले 'भगत मामा, अब तुम ही हमें कोई बचाव का रास्ता बताओ। अपनी अक़्ल लडाओ तुम तो महाज्ञानी बन ही गए हो।'

बगुले ने कुछ सोचकर बताया कि वहां से कुछ कोस दूर एक जलाशय हैं जिसमें पहाडी झरना बहकर गिरता हैं। वह कभी नहीं सूखता। यदि जलाशय के सब जीव वहां चले जाएं तो बचाव हो सकता हैं। अब समस्या यह थी कि वहां तक जाया कैसे जाएं? बगुले भगत ने यह समस्या भी सुलझा दी 'मैं तुम्हें एक-एक करके अपनी पीठ पर बिठाकर वहां तक पहुंचाऊंगा क्योंकि अब मेरा सारा शेष जीवन दूसरों की सेवा करने में गुजरेगा।'

सभी जीवों ने गद्-गद् होकर 'बगुला भगतजी की जै' के नारे लगाए।

अब बगुला भगत के पौ-बारह हो गई। वह रोज एक जीव को अपनी पीठ पर बिठाकर ले जाता और कुछ दूर ले जाकर एक चट्टान के पास जाकर उसे उस पर पटककर मार डालता और खा जाता। कभी मूड हुआ तो भगतजी दो फेरे भी लगाते और दो जीवों को चट कर जाते तालाब में जानवरों की संख्या घटने लगी। चट्टान के पास मरे जीवों की हड्डियों का ढेर बढने लगा और भगतजी की सेहत बनने लगी। खा-खाकर वह खूब मोटे हो गए। मुख पर लाली आ गई और पंख चर्बी के तेज से चमकने लगे। उन्हें देखकर दूसरे जीव कहते 'देखो, दूसरों की सेवा का फल और पुण्य भगतजी के शरीर को लग रहा है।'

बगुला भगत मन ही मन खूब हंसता। वह सोचता कि देखो दुनिया में कैसे-कैसे मूर्ख जीव भरे पडे हैं, जो सबका विश्वास कर लेते हैं। ऐसे मूर्खों की दुनिया में थोडी चालाकी से काम लिया जाए तो मजे ही मजे हैं। बिना हाथ-पैर हिलाए खूब दावत उडाई जा सकती है संसार से मूर्ख प्राणी कम करने का मौक़ा मिलता है बैठे-बिठाए पेट भरने का जुगाड हो जाए तो सोचने का बहुत समय मिल जाता हैं।

बहुत दिन यही क्रम चला। एक दिन केकडे ने बगुले से कहा 'मामा, तुमने इतने सारे जानवर यहां से वहां पहुंचा दिए, लेकिन मेरी बारी अभी तक नहीं आई।'

भगतजी बोले 'बेटा, आज तेरा ही नंबर लगाते हैं, आजा मेरी पीठ पर बैठ जा।'

केकडा खुश होकर बगुले की पीठ पर बैठ गया। जब वह चट्टान के निकट पहुंचा तो वहां हड्डियों का पहाड देखकर केकडे का माथा ठनका। वह हकलाया 'यह हड्डियों का ढेर कैसा है? वह जलाशय कितनी दूर है, मामा?'

बगुला भगत ठां-ठां करके खूब हंसा और बोला 'मूर्ख, वहां कोई जलाशय नहीं है। मैं एक- एक को पीठ पर बिठाकर यहां लाकर खाता रहता हूं। आज तू मरेगा।'

केकडा सारी बात समझ गया। वह सिहर उठा परन्तु उसने हिम्मत न हारी और तुरंत अपने जंबूर जैसे पंजों को आगे बढाकर उनसे दुष्ट बगुले की गर्दन दबा दी और तब तक दबाए रखी, जब तक उसके प्राण पखेरु न उड गए।

फिर केकडा बगुले भगत का कटा सिर लेकर तालाब पर लौटा और सारे जीवों को सच्चाई बता दी कि कैसे दुष्ट बगुला भगत उन्हें धोखा देता रहा।

सीख- १. दूसरों की बातों पर आंखें मूंदकर विश्वास नहीं करना चाहिए। २. मुसीबत में धीरज व बुद्धिमानी से कार्य करना चाहिए।

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY
₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY
₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS
MRP ₹ 699
MEGABUY
₹ 599

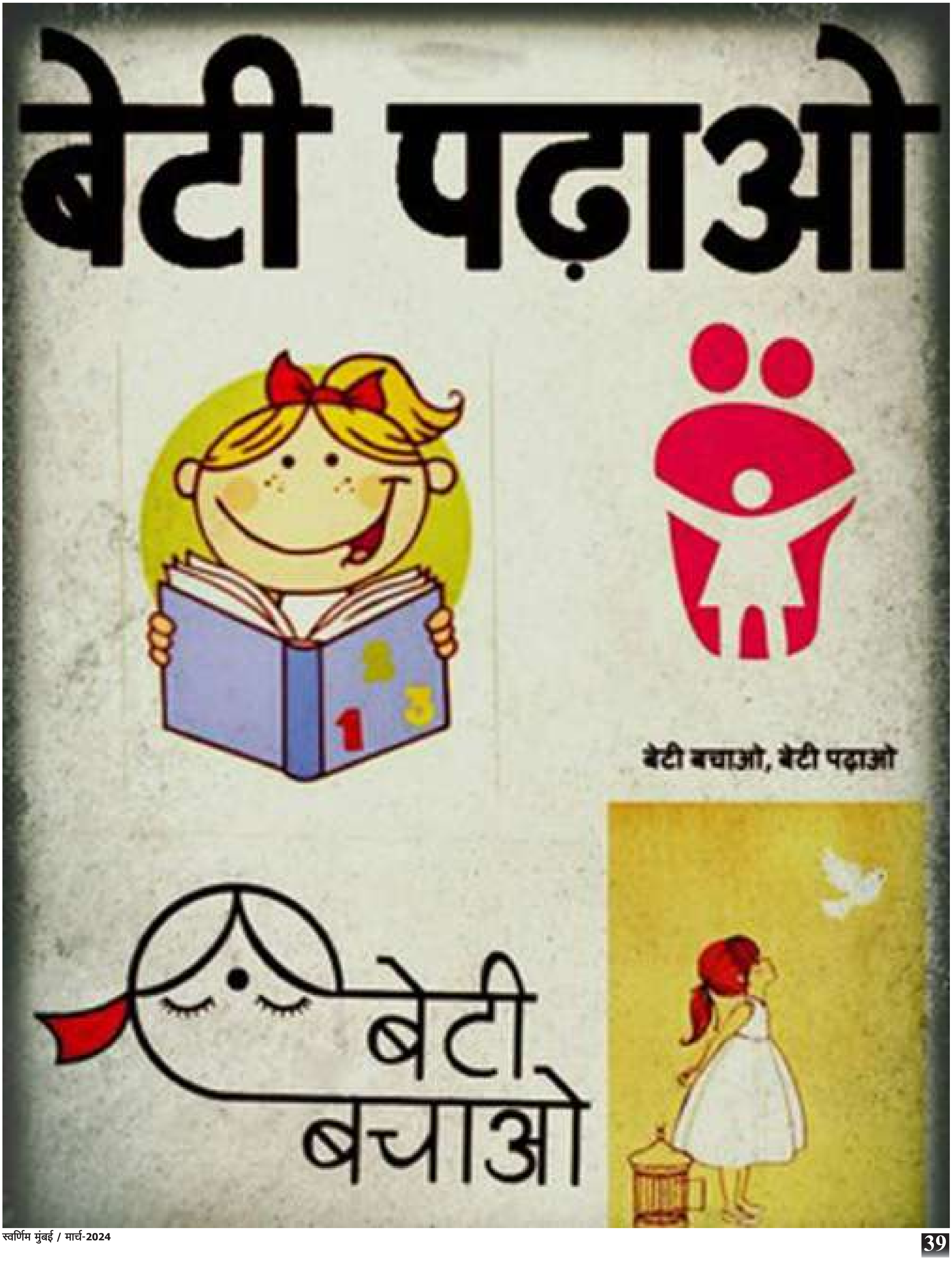
बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी
बचाओ

मानपत्र

बेटी की तारीफों में उस्ताद की आवाज़ मृदंग - सी धिनक रही थी। ल जाकर भागी थी आयशा, तुम्हारी चोर - नजरें परदे तक पीछा करती रहीं थीं उसका। तुम ट्रेन के थके - मांदे सोये तो ऐसे सोये कि वक्त तक का खयाल न रहा। उस्ताद ने ही जगाया था, '' उठो दीपंकर, आओ चलें, वरना नसीब से मिली वो मुबारक घडी, क्या कहतें हैं, हां, शुभ घडी हाथ से निकल जायेगी। सूरज डूबने के पहले ही पहुंच जाना है देवी के मन्दिर में और अब ज्यादा वक्त नहीं रह गया है सूरज के डूबने में - फकत घण्टे भर! '' उस्ताद वाद्य यन्त्रों की ही भाषा जानते थे, सो वाक्य गढने , संवारने में देर लगती उन्हें। पहाड पर अच्छा - खासा रास्ता बन गया था। उस्ताद को सहारा देने को कोई आगे बढता मगर उन्होंने मना कर दिया, हालांकि चढने में उन्हें खासी मशक्कत उठानी पड रही थी। मन्दिर नीचे से ही छोटा लग रहा था, जैसे तुम आगे बढते गये, पत्थरों, पेडों - लताओं से आंख - मिचौनी खेलता हुआ वह बडा होता गया। मौसिकी का यह काफिल I जब ऊपर पहुंचा तो सूरज डूबने की तैयारी कर रहा था। उसकी लाली से दिशाओं के रोसनदान सुर्ख हो रहे थे और उसका गुलाल पहाडों और घाटियों में बिखर रहा था। परिन्दे अपने - अपने बसेरों की ओर उडे आ रहे थे और उनकी मिली - जुली चहचहाहट से फज़ा/ गुलजार थी।

संगीत के शिखर पर दीप की तरह दीपित हे दीपकंर! तुम्हें सैंकडों मानपत्र मिले होंगे, एक मानपत्र और! यह अवाज विन्ध्य की उन घिसी हुई पहाडियों, दिल की तरह हजारों पान के पत्तों को छुपाए पनवाडियों, सूखते चश्मों और इंतजार में थके - बुढाए कस्बे से आ रही है, तुम्हारे स्पर्श मात्र से जिनमें कभी जान आ गयी थी। कामयाबी की इस बुलन्दी पर पहुंच जाने के बाद, क्या पता तुम उसे पहचान भी पाओगे या नहीं, मगर वह भले ही तुम्हारे दृष्टि - पथ से ओझल हो, तुम एक बार भी उसकी नजरों से ओझल नहीं हो पाए दीपंकर!

वह कौन - सा दिन था, कौन - सी बेला, कौन - सा मुहूर्त, जब बागेश्वरी के स्टेशन पर पहली बार तुम्हारे मुबारक कदम पडे थे! याद आ रहा है कुछ - स्टेशन से ही दिखता हुआ पर्वत के कलश पर वह शुभ्र मन्दिर, जिसे देखकर तुमने कहा था, '' ऐसा लग रहा है, मानो काले - नीले गजराज के मस्तक पर किसी ने श्वेत शंख रख दिया हो।'' घिसी हुई पहाडियों से अनेक राहें जाती थीं ऊपर को, मगर ऊपर तक पहुंचने के लिये पहले नीचे के मुकाम तय करने होते हैं न!

इक्केवाला घाटी के उन चंदोवे ताने हुई पनवाडियों और आगे कस्बे की तंग गलियों से गुजर रहा था और दूर ही से घाटियों में घुंघरू की आवाज सुनायी दे रही थी किसी को। तांगेवाला तनिक चढाई पर बने एक अलग - थलग मकान पर ले आया था तुम्हें। तुमने ऊपर से नीचे देखा और नीचे से ऊपर - अगर मन्दिर वीणा का एक तम्बूरा था तो वह मकान दूसरा, जिन्हें पहाडी रास्तों के तार जोड रहे थे। सहसा झन्न - सा बजा तुम्हारे कानों में, '' आप दीपंकर जी हैं न? एक सोलह - सत्रह साल की ल. डकी सवाल कर रही थी।

'' हां।''

'' अब्बू, आपका ही इंतजार कर रहे हैं, आइए! ''

सादा - सा बैठकखाना, दाढी - मूंछे सब सफेद, उस्ताद की आंखें चहक उठीं, '' दीपंकर! ''

तुमने पांव छूकर प्रणाम किया था

'' मेरा खत मिल गया था गुरु जी?''

'' पूरा घर तुम्हारे स्वागत में, क्या कहतें हैं, हां पलक - पांवडे यूं ही बिछाए बैठा है? '' दो शब्दों पर जोर दिया था उन्होंने - पूरा घर और पलक - पांवडे बिछाने के धराऊं शब्द! तुम तनिक झेंप से गये थे, मगर झेंपने की बारी तो अब थी -

'' वो तो कहो, कैसे - कैसे तो मैं तुम्हें पहचान गया, वरना तुम तो कहां वो मलमल, मखमल - जरी और किमखाब ! कहां यह खद्दर का कुर्ता - धोती! '' वो तुम्हारी बदली हुई हुलिया को मुग्ध भाव से निहार रहे थे, '' अब तुम सीख लोगे, दीपंकर। वो क्या कहा था कबीर ने, सीस उतारे भुंई धरे तब पैठे घर माहि! खैर छोडो वो बातें तो होती रहेंगी, पहल े यह बताओ, कोई परेशानी तो नहीं हुई यहां तक पहुंचने में?''

'' परेशानी काहे की परेशानी? आप ही के दम पर तो आबाद है बागेश्वरी।''

'' तुम्हारे घरानेवालों में खुशामद की ऐसी बू भी क्या बर्खुरदार कि नाक ही फटी जाये है। अरे हम तो हम, ये कस्बा, ये स्टेशन - सब के सब बागेश्वरी देवी के दम से ही तो आबाद हैं - आज से नहीं सदियों से।''

तब तक वह लडक़ी चाय - नाश्ता ले आई थी।

'' लो चाय पियो। यह मेरी बेटी आयशा है। यहां तशरीफ लाने वाले सारे उस्तादों ने मिलकर इसका दिमाग सातवें आसमान पर चढा रखा है कि यह वीणा बहुत अच्छा बजाती है। खैर तुम अपनी राय में तरफदारी न करना। चाय पी लो, गुसल - वुसल कर लो फिर बताते हैं।''

बेटी की तारीफों में उस्ताद की आवाज़ मृदंग - सी धिनक रही थी। लजाकर भागी थी आयशा, तुम्हारी चोर - नजरें परदे तक पीछा करती रहीं थीं उसका।

तुम ट्रेन के थके - मांदे सोये तो ऐसे सोये कि वक्त तक का खयाल न रहा। उस्ताद ने ही जगाया था, '' उठो दीपंकर, आओ चलें, वरना नसीब से मिली वो मुबारक घडी, क्या कहतें हैं, हां, शुभ घडी हाथ से निकल जायेगी। सूरज डूबने के पहले ही पहुंच जाना है देवी के मन्दिर में और अब ज्यादा वक्त नहीं रह गया है सूरज के डूबने में - फकत घण्टे भर! '' उस्ताद वाद्य यन्त्रों की ही भाषा जानते थे, सो वाक्य गढने , संवारने में देर लगती उन्हें।

" थू ! थू !! थू !!!" वीणा ने हंस कर थू थू किया, जैसे नजर उतार रही हो, किस नशे में तुम पण्डित से मुल्ला बन बैठे यकायक? आयशा मर चुकी म्यां दीपंकर। यह जो औरत तुम्हारे सामने खडी है, वीणा है वीणा! अमां, उत्ती कवायद करने की क्या जरूरत है, प्रेमी या पति की निगाह से गिर जाना ही काफी होता है एक हिंदुस्तानी औरत के लिये। मैं ने तुम्हें मां की तरह पाला है, बहन की तरह नेह से नवाजा है, पत्नी बन कर तुम्हारे प्यार पर परवान चढी - आज से नहीं, वर्षों से। यूं ही तुम्हें उजाले में लाने के लिये अंधेरों में गुम नहीं हुई मैं। मुझसे प्यार का ढोंग रचाकर मुसलमान से हिन्दु बनाकर पतिव्रता का लबादा ओढा दिया तुमने, मैं ने जब लबादा हटा कर तुम्हारे आचरण पर टीका - टिप्पणी करनी शुरु की तो चिढक़र मुसलमान की तरह तलाक दे डाला। तुम्हारी हवस किसी एक धर्म की खाल में समा ही नहीं सकती, तुम्हें चार नहीं, चार सौ नहीं, चार सहस्त्र औरतें भी कम पडेंग़ी। वही प्रेरणास्त्रोत है तो बन जाओ सहस्त्रयोनि। मैं इन्तजार कर लूंगी। उम्र और देह की कोई तो हद होगी। सहस्त्रयोनि से कभी तो सहस्त्राक्षु बन कर लौटोगे!"

पहाड पर अच्छा - खासा रास्ता बन गया था। उस्ताद को सहारा देने को कोई आगे बढता मगर उन्होंने मना कर दिया, हालांकि चढने में उन्हें खासी मशक्कत उठानी पड रही थी। मन्दिर नीचे से ही छोटा लग रहा था, जैसे तुम आगे बढते गये, पत्थरों, पेडों - लताओं से आंख - मिचौनी खेलता हुआ वह बडा होता गया। मौसिकी का यह काफिला जब ऊपर पहुंचा तो सूरज डूबने की तैयारी कर रहा था। उसकी लाली से दिशाओं के रोसनदान सुर्ख हो रहे थे और उसका गुलाल पहाडों और घाटियों में बिखर रहा था। परिन्दे अपने - अपने बसेरों की ओर उडे आ रहे थे और उनकी मिली - जुली चहचहाहट से फज़ा/ गुलजार थी।

देवी को प्रणाम कर सामने के चबूतरे पर बैठ कर उस्ताद ने पहले नमाज अता की, फिर वीणा संभालने लगे। तुम्हें उनकी मशक्कत पर रहम आ रहा था, तभी उन्होंने टोका था, " पहले तुम कुछ सुनाओ दीपकंर।"

तुम सकुचाए, " मैं भला क्या सुना सकता हूं? "

" कुछ भी, जो भी जंचे।"

" उस्ताद, सबसे अच्छा तो विहाग ही बजा सकता हूं, लेकिन इस वक्त? "

हंस पडे थे उस्ताद, " कहीं परिन्दों को वहम हो गया तो? वैसे तुम्हारा कसूर नहीं, अभी - अभी ही तो जगे हो नींद से।"

फिर तो उस्ताद जैसे खुद में ही खो गये। तारों को कसकर समताल करने के बाद ठीक सूर्यास्त को उन्होंने राग यमन का आलाप साधा। जोड पर करामत ने तबले पर थाप दी। तब तक तुम्हें यकीन न था कि झाला तक सब कुछ निर्विघ्न निभ जायेगा। लेकिन झाला तक आते - आते तुम चकित रह गये थे। जो शख्स पहाड पर ठीक से चढ भी नहीं पा रहा था, उसके हाथ किस तरह उठती - गिरती उंगलियों के साथ ऊपर नीचे दौड रहे थे। इन बूढी उंगलियों में क्या इत्ता कमाल अभी छुपा पडा है। पहाड क़ा जर्रा - ज़र्रा, फुनगी - फुनगी, पत्ते - पत्ते कान उठा कर कनमनाकर ताकने लगे थे। एक रूहानी झंकार थी कि पहाड से उतरते झरने की तरह पूरी घाटी में बह रही थी और अग - जग डूब - उतरा रहा था। घण्टे भर तक धरती गमकती रही फिर उस्ताद ने वीणा सिर पर रख कर एक साथ ही साज और बागेश्वरी दोनों को प्रणाम किया था।

" आप कमाल के बीनकार हैं।"

उस्ताद हांफ रहे थे। बोले - " अब बुढापे में मुझसे नहीं होता। बागेश्वरी मेरी बेटी बजाएगी।"

और जब उस दुधमुंही लडक़ी ने राग बागेश्वरी बजाया तो " जैसे अंधेरे की परतों को चीर कर तारे छिटकने लगे - अगणित निहारिकाएं खुल - खुल कर बिछने लगीं।" यह तुम्हारी ही टिप्पणी थी, याद है?

उस्ताद को सहारा देकर उतरने लगी आयशा, तो जैसे तुम्हारा कर्तव्यबोध जागा। आगे बढक़र तुमने दूसरी बांह पकड ली थी। उस्ताद ने अचकचाकर तुम्हें देखा और बोले, " लगा, जैसे तुम्हारी जिल्द में मेरा बेटा निसार ही लौट आया है विदेश से।"

रात दस्तरखान पर उस्ताद ने फिर वही बात उठा ली थी, " जब वीणा बजाता हूं(उस्ताद की निगाह में वीणा और सितार एक ही थे। उनका बस चलता तो सरोद को भी वीणा ही कहते) तो पैंसठ - सत्तर का बूढा नहीं, बीस - पच्चीस का जवान हो जाता हूं और वीणा बन्द हुई नहीं कि भेडिये की तरह दुबका हुआ बुढापा अपने पंजों और दांतों से घायल करने लगता है। अब बुढापे में मुझसे बागेश्वरी देवी की सेवा नहीं होती, जी चाहता है, कोई इस सेवा और इस बेटी दोनों का भार थाम ले और मैं सुकून से रुखसत ले सकूं। या अल्लाह!

दिन भर उस्ताद लोगों को लेकर व्यस्त रहते - विन्ध्य के लुप्त होते साज, लुप्त होती स्वर सम्पदा। दूर - दूर से आये प्रशिक्षु। वे बारह - बारह घण्टों तक एक - एक सुर का रियाज क़रते। तुम्हें हैरानी होती।

फिर वह शाम! बूंदा - बांदी शुरु हो गई थी। उस्ताद को रोक लिया था आयशा ने। बागेश्वरी के पूजन के लिये सिर्फ आयशा थी, तुम थे टप - टप बरसती बूंदे थीं और भीगी - भीगी पुरवाई के साथ थी जंगली फूलों की भीनी - भीनी मदमस्त गन्ध! आते समय तुम जानबूझ कर फिसले थे कामिनी - कुंज के पास। संभाल लिया था आयशा ने तुम्हें।

" शुक्रिया।"

" किस बात का?"

" वो कविता है न, सखि हौं तो गई जमुना जल को इतने में आइ विपति परी पानी लेने गई थी यमुना में, इतने में घटा घिर गई, दौडी बारिश से बचने को मगर बच न सकी। गिरी लेकिन भला हो नन्द के लाल का जिसने इस गरीब की बांह पकड ग़िरने से बचा लिया - चिर जीवहुं नन्द के लाल अहा, धरि बांह गरीब के ठाडि क़री" फिसले हुओं को संभालने में आपका कोई सानी नहीं।"उत्साह में पूरी कविता का ही पाठ कर डाला था तुमने।तुम्हें उम्मीद रही

COMPLETE SOLUTION FOR KNEE PAIN BY
Dr.Ortho
M.R.P.
OFFER PRICE
₹449

FW16 PACK OF 3
MEN'S SANDAL
MRP ₹ 999/-
SHOP NOW
₹499/-

36 PCS
DESIGNER DINNER SET
MRP ₹ 2,600/-
SHOP NOW ₹999/-

NELCON
10 PCS STEEL
PUSH & LOCK BOWL SET
- Transparent Lid
SHOP NOW
MRP ₹ 1,500/- ₹499/-
•Air Tight Containers •Keeps Your Food Fresh
•Multipurpose food storage option
•100 % Food Grade Stainless Steel
•See through transparent Lid •Easy Grip
•Leak Proof •Carry As lunch Box •Fridge Friendly

पेड़ लगाओ, जीवन बचाओ

होगी कि आयशा कह उठेगी ''हजूर की जर्रानवाजी है, वरना मैं नाचीज क़िस काबिल हूं!''

मगर वह तो लत्ते की गुडिया - सी सिमट गयी - एकदम घरेलू किस्म की सपाट - भोली लडक़ी!

इतनी भोली तो नहीं थी आयशा! तुम्हें शायद आज भी न पता हो कि अकेले में कितनी बार चूमा था उसने कामिनी के उस दरख्त को। उसके नन्हें चबूतरे पर बैठ कर कितने ही सुरभीले सपने बुने थे उसने।

गति और दिशा के हिसाब किताब में तुम शुरु से सजग थे। एक दिन जा पहुँचे उस्ताद के पास, '' उस्ताद मुझे शागिर्द बनाइयेगा? ''

'' तुम मेरे शिष्य बनोगे दीपकंर? '' चकित वात्सल्य से छलछला उठी थीं उस्ताद की आंखें, '' देखो, घरानों की बातें हैं, यहां तो सभी कुद को दूसरों से ऊंचा मानते आये हैं। ईगो टसल! ''

'' लेकिन बीनकार तो आपसे ऊंचा कोई है नहीं ! फिर घराने किसी फन से कैसे बडे हो सकते हैं? ''

'' सोच लो, बहुत कठिन है डगर पनघट की! ''

'' सोच लिया।''

'' अच्छी बात है। फिर देर किस बात की? पण्डित हो ही, सगुन करो।''

और ठीक गुरुपूर्णिमा को बाबा ने गुरुवन्दना के - '' अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं तद् पदं दर्शितं येन्, तस्मै श्री गुरवे नमः ।'' के बीच तुम्हारी कलाई में हरी - हरी दूब के साथ शिष्यत्व का काला धागा बांधा। तुमने कहीं से कर्ज लेकर एक नारियल, पांच सुपाडियां, शाल और एक सौ एक रूपए उनके कदमों पर रख दिये।

'' यह क्या? '' तनिक संजीदा हो आये उस्ताद, '' पौद को जिन्दा रहने के लिये पानी तो चाहिये, मगर वह पानी इतना ज्यादा भी न हो कि पौद सड - ग़ल ही जाये।'' फिर हंस पडे उदास से, '' बागेश्वरी में पंचम वर्जित है और पंचम ही तुम्हारा आधार है।''

हे बागेश्वरी के पंचम! पता नहीं कब बाबा ने क्या कहा और तुमने क्या सुना। जो भी हो शुरु हो गया विद्यादान। बाबा सैध्दान्तिक बातें बताते जाते, आयशा उसे बजाकर दिखाती।

उस दिन उस्ताद तुम्हें बता कर किसी काम से राजा साहब के यहां निकल गये। घर में आयशा थी और तुम थे। वह तुम्हें सिखा रही थी और तुम उसके चेहरे से लेकर नाखून तक सारी शख्सियत को मुग्ध - भाव से देख रहे थे। अचानक ही बोल पडे - '' आप बहुत सुन्दर बजाती हैं।''

'' झूठ! '' शरमा जाती है आयशा।

'' ओह! ये उठती - गिरती उंगलियां, ये ऊपर - नीचे दौडते हाथ, यह पूरी देह से निकलती झंकार, जैसे कोई धारा पत्थरों पर ऊपर से नीचे बहती जाये - तरंगायित, उच्छ्वसित, उल्लसित, उद्दाम यौवन से मदमाती''

'' अगर मुझी पर सारी तारीफ खर्च कर डालेंगे तो बाबा के लिये क्या बचेगा?''

'' बाबा में भी यही क्वालिटी है; मगर उनका बजाना पहाड क़े सीने से फूटती धारा है।''

'' और मेरा?''

'' आपका? आप जहां - जहां पोरों से गत को दबाती हैं, वहां - वहां रंगीन फौव्वारे फूट निकलते हैं। रक्स करती हैं, बेशक पैरों से नहीं, हाथ की उंगलियों से। कहां छुपी रहती है इत्ती मस्ती इन पोरों में?''

तुमने एकान्त पाकर आयशा की हथेलियों को अपने हाथों में ले लिया था। तारों के साथ निरन्तर छेडछाड से खुरदुरी हो आई उंगलियों की पोरों को सहलाने लगे थे तुम।

'' लेकिन आप सिखाती नहीं ठीक से।''

'' और आप? आप सीख रहे हैं ठीक से?''

'' पहले मिजराब (नखी) लगाइये उंगलियों में।''

'' वह ताके पर रख छोडा था, फिर मिला नहीं।''

'' मैं बन जाऊं मिजराब?'' और तुमने आयशा की उंगलियों को चूम लिया था। याद है?

लुक - छिप कर मिलने लगे थे तुम और आयशा - कभी मन्दिर में, कभी पनवाडियों में, कभी पहाड पर और जिस दिन अब्बू को इसकी भनक मिल गई, उस दिन?

भरे - भरे से बैठे थे बाबा! पखावज लेकर बैठ गये थे।

धम्म!

लगा कोई ईंट गिरी हो किले की बुर्ज से!

एक ईंट, फिर दूसरी, फिर तीसरी! खण्ड - खण्ड टूट कर गिरने लगे थे पत्थर, अर्राकर ढह रहीं थी बुर्जियां, मेहराबें, अटारियां। थमते - थमते थम गया था कोलाहल। श्मशानी शांति।

तुम सकते में आ गये। सहारे के लिये तुमने आयशा को देखा। वह खुद सहमी हुई थी।

ढम्म! अचानक फिर थाप पडी। स्वर बदला हुआ था इस बार। प्रलय के बाद सृष्टि का सुर! एक - एक ईंट चिनी जाने लगी खडा होता गया किला। सजती गईं अटारियां, खिलती गईं मेहराबें, चमकने लगे कंगूरे!

आयशा की रुकी सांस फिर चलने लगी। तुम्हारी जान में जान आई। पखावज का ऐसा बजाया जाना पहली बार सुना था तुमने।

'' साक्षात शिव हैं अब्बू! नाराज हो जायें तो संहार! ताण्डव! खुश हो जायें तो निर्माण के वरदान!'' आयशा ने कहा था।

'' मगर मैं पखावज का दूसरा अनुभव नहीं लेना चाहता।'' बाप रे! मेरी तो रूह ही चाक हो गय।''

'' तब तो आपको सीधे अब्बा से बात करनी पडेग़ी। उनकी रजा के बगैर अब मैं नहीं मिल सकती।''

बिस्तर पर क्लान्त लेटे थे बाबा। तुमने जाते ही उनके पांव पकड लिये। परदे की ओट में खडी थी आयशा।

'' क्या बात है पण्डित? पांव तो छोडो।''

'' छोड दूंगा।बस एक बात कहने की इजाजत दे दें।''

'' अमा इजाजत की क्या बात! कह भी डालो अब।''

'' आपने कभी कहा था कि जी चाहता है, कोई बागेश्वरी देवी की सेवा और बेटी आयशा दोनों का भार थाम ले।''

'' होगा।''

'' मैं दोनों का दायित्व संभालने को तैयार हूं, अगर आप चाहें।''

'' हूंऽऽ!'' एक छोटी सी हुंकारी के बाद लम्बी चुप्पी पसर गई थी उनके होंठों पर।

'' क्या मेरे हिन्दू होने की वजह से आप सोच में पड ग़ये? '' तुमने उन्हें हौले से जगाया।

'' हां भी और ना भी! '' उस्ताद धीरे से उठ कर बैठ गये, '' मुसलमानों ने काफी पहले ही मुझे काफिर मान लिया है। मैं इस बात से परेशान नहीं हूं कि ऐसा करने से उनकी राय पर ठप्पा लग जायेगा। धरम यहां क्या कहता है और मजहब के फतवे क्या कहते हैं - मुझे नहीं मालूम, जानना भी नहीं है। मौसिकी मेरे लिये सिर्फ मौसिकी है, फन सिर्फ फन। बागेश्वरी होती होंगी हिन्दुओं की कोई देवी, मेरे लिये वे सिर्फ मौसिकी की देवी हैं। चाहता मैं सिर्फ इतना हूं कि जिन हाथों में बेटी का हाथ दूं, उन हाथों में उसका फन और उसकी खुशी दोनों सलामत रहें। कहां तुम ऊंचे खानदान के पण्डित और कहां आयशा? उस्ताद की शक्ल में हमें सर पे

बिठाते हैं हिन्दू, मगर एक दूरी से ही। फिर इस्लाम कुबूल करने से पहले हम भी तो छोटी कौम के हिन्दू ही थे। इन चीजों को तुम्हारा हिन्दूपना कतई बर्दाश्त नहीं करता। यानि एक के लिये एक मलेच्छ, दूसरे के लिये काफिर! इनसे भाग कर मैं मौसिकी की पनाह में आया हूं तो यहां महफूज हूं, मगर कब तक? जब तक नीचे न उतरूं! अभी तो जवानी है, जज्बा है, जुनून है, जीत लोगे जंग, मगर इनके उतरने के बाद?''

'' आप मुझ पर भरोसा कर सकते हैं, उस्ताद! ''

'' आयशा से पूछ ही लिया होगा? '' एक लम्बी खामोशी के बाद बोले उस्ताद।

'' जी।''

'' मां तो अब नहीं रही, अपने बाकि लोगों से?''

'' पूछने की जरूरत नहीं है।''

'' इसे हिन्दुआनी बनाओगे? ''

'' मेरे लिये तो ये सिर्फ वीणा है।''

शब्दों के सटीक उपयोग तो कोई तुमसे सीखता, दीपंकर! बाबा को रिझाने के लिये तुम्हारे लिये सितार और वीणा, वीणा और आयशा के लिये अलग - अलग सम्बोधन नहीं - सिर्फ एक सम्बोधन था वीणा। बडा रोमान्टिक है न यह सम्बोधन!

ह्यऔर उसी बागेश्वरी के मन्दिर में आयशा वीणा बन कर हो गयी तुम्हारी पत्नी! याद है न वो दिन, उस्ताद ने दुआ दी तुम्हारे ही पुराने अन्दाज में, '' तुम दोनों दो तम्बूरों की तरह प्रेम के तारों से जुड ग़ये आज - इसी तरह बंधे रहें तार, इसी तरह उठती रहे झंकार!

और उस मधु चन्द्रिका की मिलन यामिनी की सेज पर याद है वह मधु सम्वाद ?

'' देखूं कितनी राग - रागिनियां सोई पडी हैं मेरी वीणा में?'' यह तुम्हारा प्रश्न था।

'' जितनी तुम जगा पाओ।'' यह वीणा का उत्तर था।

तो हे वीणा वादक ! शुरु - शुरु में तुमने अपनी साधना में कोई कोताही नहीं बरती। मगर गुरूकुल की शिक्षा पूरी होते ही तुम्हें ऐसे लगा, जैसे बन्दीगृह से निजात मिल रही हो। उस्ताद का अहसास भी अब पहाड क़ी तरह खडा था तुम्हारी राह में। तुम्हें जगह - जगह से बुलावे आ रहे थे। उस्ताद कहते - ''चले जाओ''

'' मगर देवी पूजा?''

'' ओह वीणा है न!'' उस्ताद भी अपनी बेटी को आयशा नहीं वीणा ही कह कर पुकारने लगे थे अब! कलकत्ते वाले ही थे कि अड ग़ये, '' हमें दीपंकर तो चाहिये ही, साथ में वीणा भी चाहिये।''

'' ठीक है वीणा जायेगी।''

तुमने मुडक़र देखा, वीणा के पैर चलने से पहले तनिक कांपे थे, इस उम्र में घर से मन्दिर तक घिसटना पडेग़ा अब्बू को। मगर हुक्म भी अब्बू का ही था, सो वह गई, मगर उसका जाना!

कलकत्ते के उस संगीत समारोह में वीणा ने मालकोंश बजाया था और तुमने चन्द्रकोंश, फिर योगकोश पर दोनों की जुगलबन्दी। तालियों की गडग़डाहट से गूंजता रहा ऑडिटोरियम!

दूसरे दिन अखबारों में वीणा ही वीणा छाई हुई थी, दीपंकर की चर्चा महज रस्मी तौर पर हुई थी। तुमने एक उडती हुई नजर डाली, फिर सुबह - सुबह ही सज धज कर तैयार पत्नी पर आकर टिक गई तुम्हारी नजर। नजरों में सवाल था।

'' वो अखबार वाले आ रहे हैं इम्टरव्यू के लिये।'' वीणा ने सफाई देनी चाही।

'' हूंऽऽ!'' यह हूंऽऽ न कोई ध्रुपद था, न धमार, यह कुछ और ही था। इस हूंऽऽ की गूंज - अनुगूंज में बहुत कुछ सुन लिया था वीणा ने।

वीणा को आश्चर्य होता, आखिर तुम चाहते क्या थे। पहले तुम्हें वीणा से यह शिकायत थी कि वह नितान्त घरेलू औरत है, उसे तुम्हारी पत्नी के अनुरूप ढालना चाहिये, तनिक आधुनिक होना चाहिये। अब, जबकि वह हो रही थी तो तुम उसे घरेलू बनाने पर आमादा थे।

जैसे - तैसे समय बीता। बनारस के दो टिकट पकडाते हुए तुमने वीणा से कहा, '' इन्हें पर्स में रख लो''

'' बनारस ?'' वीणा हैरान थी।

'' क्यों ''

'' क्यों बनारस के नाम पर ऐसे क्यों चौंक गईं जैसे तुम्हें मणिकर्णिका घाट ही भेज रहा हूं।''

चौंक गईं वीणा, '' मैं ने ऐसा कब कहा?''

'' फिर?''

'' वो बागेश्वरी में अकेले होंगे अब्बा''

'' तो फिर तुम बागेश्वरी चली जाओ, मुझे तो बनारस ही जाना है।''

'' मैं तुम्हारी छाया हूं, तुम जहां - जहां जाओगे, मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी; लेकिन खुदा के लिये कम से कम यह तो बता दो कि बनारस में क्या कम है, कहीं भाई साहब के पास तो नहीं?''

तुमने जवाब देना जरूरी नहीं समझा, खुद ही पता किया वीणा ने कि तुम्हारे भाईसाहब की तबियत खराब चल रही है। मान धुल गया। द्रवित हो आया मन। मां का साया पहले ही तुम पर से उठ चुका था, ले - दे कर एक भाईसाहब ही तो बचे थे जो बीमार थे।

'' तब तो मुझे भी बनारस चलना चाहिये।रास्ते में ही तो पडता है। पहले हम बनारस चलते हैं, फिर बागेश्वरी।''

भाईसाहब की हालत वाकई में नाजुक़ थी। वीणा अभी बनारस रुकना चाहती थी मगर तुम उसे बागेश्वरी जाने पर जोर दे रहे थे, '' मैं इन्हें संभाल लूंगा, तुम जाकर उन्हें संभालो।

''यह इन्हें और उन्हें कब से हो गये? क्या बाबा सिर्फ और सिर्फ मेरे हैं, और भाईसाहब सिर्फ और सिर्फ तुम्हारे?'' वीणा को ठेस लगी लेकिन प्रकटतः उसने कुछ कहा नहीं, लौट आई बागेश्वरी।

अखबारों से ही पता लगा कि बाद में तुमने बनारस और इलाहाबाद में कई कार्यक्रम किये। और इन पर प्रतिक्रिया उधर तुम्हारे भाई साहब तुम्हें सीख दे रहे थे कि तुम्हें अभी बाबा के पास रहना चाहिये था, इधर बाबा वीणा को सीख दे रहे थे कि तुम्हें दीपंकर के साथ ही रहना चाहिये था।

तुम बागेश्वरी आए तो कलकत्ते की काली छाया को धो - पौंछ कर। इलाहाबाद ने नई चमक भर दी थी। सबको बताते फिर रहे थे कि कलकत्ते में क्या था, गुणी, जानकार तो दरअसल इलाहाबाद में ही थे।

पांव छूते ही बाबा ने अपने अस्वस्थ घर्राते गले से पूछा, '' कैसे हो बर्खुरदार?''

'' जी ठीक।''

'' भाईसाहब?''

'' वो भी ठीक हैं।''

'' तो इलाहाबाद फतह कर आये?''

'' जी, आपका आर्शिवाद है।''

'' रेडियो में नौकरी करने जा रहे हो?''

'' हां मिल तो रही है, मगर मैं खुद दुविधा में हूं।''

'' कैसी दुविधा?''

'' वचनबध्दता - बागेश्वरी देवी और वीणा के प्रति दायित्व निर्वाह की।''

रीझ रहे थे उस्ताद तुम्हारी कर्तव्य पारायणता पर।

वीणा से मिलतो ही तुमने उसे बांहों में कस लिया और चुम्बनों की बौछार कर दी।

'' कैसे हैं भाईसाहब?''

'' चंगे।''

'' तुम्हारी संगीत - चिकित्सा से? ''

'' इतनी क्रूर न बनो मलिका - ए - मौसिकी! तुम्हारे बिना मैं नहीं रह सकता। जानती हो, इलाहाबाद में जब पण्डित गुदई महाराज ने पूछा, आज क्यों तेरी वीणा मौन? तो मुझ पर क्या गुजरी! भाईसाहब ने तो सीधे छडी उठाई और यहां खदेड क़र दम लिया।''

वीणा को थकाकर तुम थक कर सो रहे थे और वीणा तुम्हारे सुन्दर सलोने चेहरे को देख - देख कर रीझ रही थी और तुम्हें सम्बोधित करते हुए सोलहवीं शताब्दी की नायिका की तरह मौन संलाप कर रही थी, '' मेरे नटखट शिशु, कलकत्ते में जो हुआ, उससे तुम रूठ गये न? रूठना ही था। एक तो एक ही विधा के लोग, प्रतियोगी भी न हों तो तमाशबीनों द्वारा बना दिये जाते हैं, दूजे मैं नारी तुम पुरुष। इगो की चरमराहट! अच्छा हुआ कि बनारस और इलाहाबाद ने भरपाई कर दी और तुम फिर ऊपर आ गये। तुम्हीं जीते, मैं ही हारी। ये लो मैं हारी पिया हुई तेरी जीत रे, काहे का झगडा बालम नई नई प्रीत रे खुश? तुम पर वारी जाऊं मेरे सलोने राजकुमार। तुम जैसे खुश रहो, मैं वही करुंगी बस एक ही इल्तजा ही मेरी, मुझसे रूठो मत!''

बाबा भी खुश थे अपनी बुढापे की बीमारी के बावजूद! और एक दिन मन्दिर जाने से रोक लिया उन्होंने तुम्हें। स्नेह से गाढे हो रहे थे, बोले- '' बेटे, मैं एक पका आम हूं, कब टपक पडूं कोई ठीक नहीं। जाने से पहले मैं चाहता हूं कि तुम्हें देवी की मूरत गढने के हुनर में उस्ताद बना दूं। तुम जानते हो कि यह हुनर कोई उस्ताद सिर्फ अपने खासमखास शागिर्द को ही देता है। गौर से सुनो, जिस तरह एक नायाब मूरतसाज माटी से मूरत गढता है देवी की - पांव, कमर, सीना, गर्दन, हाथ, उंगलियां, होंठ, कान, नाक, आंखउसी काम को एक मौसिकार अपनी मौसिकी से अंजाम देता है।'' और उस्ताद ने वीणा की सहायता से तुम्हें मूर्ति गढना सिखलाना शुरु कर दिया।

चोरी - चोरी प्रेम के सुरभीले दिनों के बाद वे सबसे सुन्दर दिन थे वीणा की जिन्दगी के। मन्दिर परिसर में पति - पत्नी मूर्ति गढ रहे होते - तिन - तिन्न! धिन्न- धिन्न! की झंकार दूर - दूर की पहाडियां सूद सहित लौटा देतीं - ध्वनि भी प्रतिध्वनि भी! जैसे पूरी प्रकृति, पूरे विश्व, पूरे ब्रह्माण्ड में सिर्फ मूर्ति रची जा रही थी उन दिनों।

'' मुझे लगता है मूर्ति का हाथ - पांव, चेहरा साफ हो गया, बस जरा आंखें नहीं सध पा रहीं हैं अभी। तुम सिखाने में कोताही बरतती हो।''

'' आंख ही तो सबसे आखिर में खुलती है न?''

'' बहुत जानकार हो गई हो।''

'' एक मूरत खुद भी गढ रही हूं जो इन दिनों।'' वीणा का चेहरा गुलाबी हो उठा था।

'' अरे बाप! ''

उस्ताद ने परीक्षा ली तो बोले, '' अभी खुरदुरापन है, वीणा के साथ रियाज क़रते रहोगे तो बाकी बारीकियां भी आ जायेंगी।'' तुमने खीज कर ताका था वीणा की ओर, जो दांतो - तले जीभ दबा रही थी।

''फन और हुनर की कोई इन्तहां नहीं होती, दीपंकर।तुम इसे हमेशा आगे बढाते रहोगे, दूसरों के फन को भी।'' इसके साथ ही उन्होंने अपनी उखडी सांस को सम किया। तुम उनका सीना सहलाने लगे थे। उन्होंने अपना दाहिना हाथ तुम्हारे सिर पर रख दिया, '' इसके साथ ही मैं अपने पहले वचन से तुम्हें आजाद करता हूं- अब बागेश्वरी देवी की सेवा के लिये यहां बैठे रहना तुम्हारे लिये कतई जरूरी नहीं है, लेकिन दूसरा वचन। इसे चाहो तो एक बाप की कमजोरी कह लो, वीणा को खुश रखना वही मेरी सच्ची गुरुदक्षिणा होगी, तुम्हारा, वो क्या कहते हैं, पत्नीव्रत और प्रेमिकाव्रत भी।''

हे पत्नीव्रती! यह तुम्हारे जीवन का नया अध्याय था, वीणा के जीवन का भी। संगीत समारोहों का दौर - दौरा फिर शुरु हो गया। वीणा की भूमिका तुम्हें सजा - सवांर कर मंच पर भेज देने की और सबसे पीछे तानपूरा लेकर बैठने तक ही सीमित हो गयी। फिर हुआ कला का जन्म, मगर यह कोई उल्लेखनीय घटना न बन सकी। इलाहबाद, बम्बई, कलकत्ते, दिल्ली में बंधकर रहने वाले जीव तुम थे नहीं, सो जैसे ही मौका मिला, तुम उड ग़्ये अमरीका, साथ ही वीणा और कला भी। वह तुम्हारा पत्नीव्रत नहीं तुम्हारी अनिवार्यता थी, कारण, कौनसी पोशाक किस महफिल को लिये मौजूं है, यह सिर्फ वीणा को पता था - कभी मुगलिया, कभी नवाबी, कभी देसी रजवाडों की तो कभी साफ शफ्फाक सूफियाना, पर सुरुचिपूर्ण।कब क्या खाना है, क्या पीना है, क्या बजाना है, पुराने शास्त्रीय संगीत मैं किस हद तक देसी पंच करना है - यह भी। तुम्हें दूल्हे की तरह या कहूं जादूगर दूल्हे की तरह मंच पर सजा - संवार कर बैठा देती और खुद तानपूरा लेकर पीछे बैठ जाती - स्वरों का आधार बनाती, उसकी उंगलियां तानपूरे के तारों पर फिसल रही होतीं, मिजराब के अभाव में खुरदुरे होते पोर, मगर अब तुम्हें उन्हें चूमने को कौन कहे, देखने की भी फुरसत न होती। मिलने वाले काफी हो गये थे, खासकर गोरी, चाकलेटी औरतें, जिनके सम्पर्क में आते ही तुम्हारा चेहरा खिल जाता। वीणा ने महसूस किया कि तुम उससे दूर होते जा रहे हो, मगर एक अजीब किस्म का ठण्डापन उसे घेरने लगा था।

वीणा चुपचाप देख रही थी कि तुम संगीत पर कम, उसके मायावी प्रदर्शन पर ज्यादा ध्यान देने लगे थे - मंच से लेकर लिबास तक। फिर तुमने समारोह के पूर्व अंग्रेजी, फ्रेंच या जर्मन में एक वक्तव्य रखना शुरु किया जिससे तुम्हारे पाण्डित्य की धाक जमने लगी। निसार बीच - बीच में आते रहते। तुम दोनों की जुगलबन्दी भी हुई जो कि खासी चर्चित हुई। ये वे दिन थे जब लोकप्रियता पर तुम छोटे - मोटे प्रयोग करते ही रहते। उद्देश्य सिर्फ एक होता, मंच पर छा जाना, भले ही बाकि कलाकार अंधेरे में चले जायें। वीणा को उस दिन तुम्हारा लाइफ में इंटरव्यू पढ क़र कोई हैरानी नहीं हुई जब तुमने एक तरह से खुद को स्वनिर्मित प्रतिभा के रूप में पेश किया। प्रचार की चंग पर चढक़र तुम भारतीयता के प्रतीक बनते जा रहे थे। हे भारतीयता के महान प्रतीक! पत्नी न सही, भ्राता न सही, गुरु के लिये हमारी संस्कृति में बहुत ही ऊंचा स्थान है , शिष्यत्व स्वीकार करते हुए तुम्हें अपनी गुरूवन्दना याद है -

गुरूर्बह्मा, गुरूर्विष्णु, गुरूर्देवो महेश्वरः
गुरूत्साक्षात् परमब्रह्म, तस्मै श्री गुरवे नमः।

उसी गुरू ने कई बार कांपते हाथों से कलम उठाई होगी तुम्हें, वीणा या निसार को खत लिखने को, फिर रख दी होगी। कई बार उडी- उडी ख़बर मिली कि उनकी हालत नाजुक़ है, लेकिन तुमने उसे नजर अन्दाज क़िया।

यह तो निसार थे जो तुम सबों को जबरन वापस ले आये बागेश्वरी।

तुम्हें वीणा, एवं निसार के बीवी - बच्चों को देखकर बूढे ग़ुरिल्ला की तरह, अबूझ की तरह ताकने लगे थे बाबा। फिर बताये जाने पर एक - एक की कुशलक्षेम पूछने लगे । आखिर में टिक गई वीणा पर नजर, '' क्या बात है वीणा अखबारों में दीपकंर और निसार का नाम तो कभी - कभी झलक जाता है लेकिन तुम्हारा नहीं!''

'' अब कला के चलते फुरसत कहां मिलती है अब्बू! ''

'' बजाना तो नहीं छोडा न?''

'' नहीं बाबा वो कैसे छोड सकती हूँ।''

'' मेरा पूरा कुनबा मेरे सामने है। क्या पता, कल क्या हो। मेरी ख्वाहिश है कि आज रात एक महफिल हो जाए देवी के मन्दिर में।

पालकी पर ले जाया गया उस्ताद को। सबने कुछ न कुछ पेश किया मगर वीणा ने गायकी में अमीर खुसरो की वो ठुमरी उठायी, काहे को ब्याही बिदेस अरे लखिया बाबुल मोरे तो स्वर टूट रहा था। उस्ताद ने थोडी देर तक आंखों पर पलकों के परदे डाल लिए, बूंदों की धार बिंधती रही दाढी में। गीत बन्द हुआ तो धीरे - धीरे पलकें खोली उन्होंने। कोई कुछ नहीं बोल रहा था। देखते - देखते आंखों की रंगत बदली, शिशु - सा चकित हो उठे, '' निसार, शमा, दीपंकर, आयशा - जरा देखो तो हवा से हिल ते पत्तों की झुरमुट में से झांकता चांद। दुनिया के तमाम फरेबों, तमाम गलाज़तों के ऊपर पाकीजग़ी के नूर - सी बरसती चांदनी, चकमक करते पत्ते, क्या खुदा की इस नेमत को मौसिकी में नहीं ढाल सकते? तुम, तुम? नहीं तू'' निसार और दीपंकर के बाद वीणा से इसरार और उस रात वीणा ने अपनी सारी कला लगा दी प्रकृति के उस छन्द को स्वर देने में

वीणा रखकर वीणा ने जब सर उठाया तो फिर वही अब्बू की चकित शिशु सी चितवन!

'' अब्बू?''

'' अब्बूऽऽ?''

अब्बू जा चुके थे।

' गोरी सोवै सेज पर मुख पर डारे केस, चल खुसरो घर आपने रैन हुई चहुं देस। चार कहार मिल डोलिया उठाए बागेश्वरी बैंड की करुण धुन पर महाप्रयाण! '' उस्ताद तो महायात्रा पर निकल गये।'' तुमने कहा था। वीणा ने खोई - खोई पलकें ऊपर उठाईं थीं।

'' चलो पैक कर लो, परसों वापस चलना है।''

वीणा ने आहत नजरों से तुम्हें देखा। वह गई तो जरूर, मगर कहीं जी न लगता था उसका। ये वे दिन थे जब तुम पॉप सिंगर्स से मिलकर अपने प्रायोजक ढूंढते फिर रहे थे। तुम्हारा एक पांव अमरिका के ल ॉस एंजिल्स में, दसरा भारत में बीच में पूरी दुनिया थी और वीणा थी कि उसे अमरीका भी सूना ल ग रहा था, भारत भी और बाकी दुनिया भी।बहुत तेजी से बदल रहे थे तुम। अब तुम्हारी दुनिया बाख, बीथोवन, मोत्जार्ट और मैनहन तक फैल रही थी। अब तुम्हें बीथोवन के मूनलाइट सोना में रात में समुद्री लहरों के टूटने जैसा नाद ज्यादा सम्मोहित करने लगा था और उसमें तुम्हें रवीन्द्र संगीत की सी दिव्यता दिखाई देने लगी थी, साथ ही बाबा की पत्तों के झुरमुट से झांकती चांदनी और चकमक करते पत्ते भी किस चीज क़ो कब, कहाँ इस्तेमाल कर ज्यादा से ज्यादा लाभ बटोरा जा सकता है, इस पर तुम सदा सतर्क रहते। शास्त्रीय संगीत की समझ से रहित पश्चिम के दर्शकों, श्रोताओं में अपने संगीत को लोकप्रिय बनाने के लिये तुमने आलाप की बोरियत से पल्ला झाडा, जोड क़ो समृध्द किया और सीधा उतर शए झाले पर । इसी तरह पश्चिमी और पूरबी श्रोताओं को लुभाने के लिये तुमने कई पगडण्डियां तलाशीं और सवाल - जवाब जो यहां फूहड और छिछला माना जाता रहा, को ज्यादा से ज्यादा महत्व देने लगे।

वीणा ने एक दिन टोका भी, '' हमारे यहां राग, ताल, लय या सुर एक दूसरे को समृध्द करते हैं। मिलित हंसध्वनि हो या जुगलबन्दियां, यहां एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के बावजूद मुख्य उद्देश्य परस्पर सहायक का ही होता है, प्रतिस्पर्धा का नहीं। इसी तरह भारतीय संगीत की बाकी महान परंपराओं की भी तुम अनदेखी करने लगे हो। क्या तुम्हें नहीं ल गता कि कहीं कुछ गलत हो रहा है।''

हंस कर टाल गये तुम।बाद में प्रदर्शन के पूर्व वक्तव्यों में तुमने इसका खुलासा किया, '' कुछ शुध्दतावादियों को लगता है, भारतीय संगीत इतना महान है कि उसे साधारण जनता के बीच उतारा गया तो अपवित्र हो जायेगा। पर मैं पूछता हूँ कि संगीत या कला या साहित्य सिर्फ मुट्ठी भर पण्डितों के लिये है? जब तक कोई कला जनता के बीच नहीं उतरती वह सार्थक तो नहीं ही होती वह दीर्घजीवी भी नहीं हो सकती।''

बहुत तालियां बजी थीं तुम्हारे इस वक्तव्य पर। तुमने आगे कहा था - अब बात आती है प्रस्तुति पर - क्या पश करें।, कैसे पेश करें। प्रकृति को देखिए कि उसे एक फूल पेश करना है तो कैसे करती है। मान लीजिये बोगवेलिया है। मात्र लवंग जितने लम्बे यानि नन्हे - नन्हे सफेद फूल गिनती में तीन - तीन। उन्हें पेश करने के लिये वह अपनी तमाम जाड - झ़ाल ें, पत्ते - कांटे सबसे पिण्ड छुडा लेती है। यहां तक कि पुष्प को समोने वाली पत्तियां भी लाल, गुलाबी या श्वेत यानि इतनी रंगारंग रहती हैं कि उन्हीं को लोग फूल की पंखुरी मान बैठें - भव्य से भव्यतम प्रदर्शन।''

और इतनी शानदार व्याख्याओं पर भला हथियार न डाल दे वीणा?

फिर कुछ दिन पति के साथ साए की तरह डोलते रहने का सिलसिला। तुम्हें महफिलों में सजा - सवांर कर भेज देती और खुद अब्बू के रिकॉर्डस लगा कर बैठ जाती।

तुम कभी रातों को देर से लौटते, कभी सुबह। तुम्हारे अन्दाज में कहें तो शाम -ए - अवध को जुदा होते तो सुबह - ए - बनारस को ही लौटते।

'' आज किस घाट पर जल रहे थे? '' तल्ख पडती मानिनी वीणा। मगर उसके मान का तुम्हारी नजर में कोई मूल्य न होता। मन होता तो तटस्थ, निरपराध, बेगानी आवाज में सुना देते, '' आज डी एम पकड ले गये थे, आज मंत्री, आज फलां तो आज अलां! दम मारने की फुरसत नहीं।''

युनिवर्सिटी या राजकीय कार्यक्रमों, युध्दराहत या कल्याणकोशों के लिये तुम सदा तत्पर रहते, आयकर देने में प्रत्यक्षतः कोताही नहीं बरतते। ल ोगों की नजर में तुम्हारी छवि उज्ज्वल से उज्ज्वल तर होती रही। चीजों को अनुकूलित करने में तुम निरन्तर सफल रहे। अब उनकी नजर तुम्हारे व्यक्तिगत चरित्र और परिवार, सर्वोपरि फन के प्रति तुम्हारे एटीच्यूड पर न जाती, उलटे तुम महान से महानतम् घोषित किये जाते रहे, ठीक उन सेठों की तरह जा चींटियों को शक्कर के दाने देते हैं, और भिखारियों, बाह्मणों, विधवाओं, गरीब छात्रों, सामाजिक कल्याण की संस्थाओं को दान देते हैं, और अपनी मिल में अपने मजदूरों, घर में अपनी बीवी अपने नौकरों का शोषण करते हैं। व्यक्तिगत चरित्र में लम्पट और जातीय चरित्र के स्तर पर प्रथम श्रेणी के अपराधी! एक ही आदमी का बर्ताव एक स्थान पर एक जैसा, दूसरे स्थान पर दूसरे जैसा! क्या कोई लेखा - जोखा लेने आएगा कभी? कभी नहीं। नथिंग सक्सीड्स लाइक सक्सेज, नथिंग फेल्स लाइक फेल्योर!

वीणा ने अपने ढीले पडे तारों को फिर कसा, मगर वह सुर कहाँ, वह साज क़हाँ! नवीनाओं की तुलनाओं में कहाँ टिकती है प्रवीणा!

दूसरी विदेश यात्राओं में तो तुम साथ भी नहीं ल े गये उसे। पूरे चार महीने बागेश्वरी में अकेले गुजारे उसने - कभी अब्बू की कब्र पर, कभी बागेश्वरी देवी के मंदिर में। अकसर पहाड से देखा करती वह पश्चिम की ओर - कितनी दूर चले गये थे तुम! पनवाडियों को देख - देख कर पन्त की वह कविता याद आती, पत्रों के आनत अधरों पर सो गया निखिल वन का मर्मट, ज्यों वीणा के तारों में स्वर जिसे प्रेम के प्रारंभिक दिनों में दिलनुमा पान के पत्तों को देख - देख कर उस स्निग्ध आलोक छाया में तुम आवृति किया करते! वह कविता मारू विहाग के करुण रस में शिराओं में घुल करती अहरह!

लॉसएन्जिल्स, वियाना, लन्दन, पेरिस, म्युनिख, कहां - कहां नहीं जगमगाने लगा था तुम्हारा सितारा।

नए - नए कितने ही रागों का सृजन किया तुमने। प्राच्य और पाश्चात्य संगीत के मेल से कितने ही रागों का सृजन किया तुमने। प्राच्य और पाश्चात्य संगीत के मेल से कितनी ही प्यारी धुनें दी हैं तुमने। अनायास ही तुम लोगों के दिलों में छाते जा रहे थे मगर तुम्हें इतने - भर से संतोष नहीं मिला, तुम अनन्य, अद्वितीय होना चाहते थे। हिंदी के लोकप्रिय कवि ने अपनी कृति को स्थापित करने के लिये जनभाषा, मंचन, अंधविश्वास, ढोंग और चमत्कार का सहारा लिया था। दीपकराग से दीप का जल जाना, मेघमल्हार से वर्षा की झडी लग जाना - संगीत में कुछ अंधविश्वास पहले से चले आ रहे थे। तुम्हारे चेलों ने भी प्रचारित करवाया कि एक पेड ज़ो तेज पश्चिमी धुन पर जड से उखड ग़या था, तुम्हारा संगीत सुन कर फिर से खडा हो गया।

चमत्कार!

वैसे हे चमत्कारी बाबा! तुम्हारा असली चमत्कार तो वीणा खुद है। तुम्हारे मारन मन्त्र से जड - मूल से उखडी हुई वीणा, जहां अहर्निश अन्दर एक जलती हुई आग है और बाहर आंसुओं की झडी। पता नहीं कैसे लोग कहते हैं कि प्रत्येक सफल पुरुष के पीछे एक नारी होती है, जबकि हिंदी के उस सफल कवि ने भी अपनी उस पत्नी को वापस मुडक़र भी नहीं देखा, जिससे उसने कविताई का ककहरा सीखा(कुछ महापुरुषों को लें लें तो हरिश्चन्द्र, युधिष्ठिर या सिध्दार्थ ने भी नहीं)। तुमने भी नहीं। पत्नियां शायद इसीलिये होती हैं कि सफलता के लिये उनकी बलि दी जा सके! दोनों ही उत्कट प्रेमी थे। उत्कट प्रेम की यह कैसी परिणति? शायद पति - पत्नी के बीच कोई तीसरा आ जाता है - सफलताजनित अहम्मन्यता का प्रेत!

याद है विवाह - वार्षिकी की रात? तुम बम्बई में थे, किसी फिल्म संगीत के सिलसिले में। जब देर रात भी न आए तो स्टूडियो जाकर पता किया था वीणा ने। तुम वहां से कब के जा चुके थे। पता करते - करते वीणा जा पहुंची थी उस होटल में। अन्दर बेड पर कोई नंगी लडक़ी थी और बाहर दुल्हन सी सजी पत्नी! दरवाजे पर रास्ता रोककर खडे तुम हडबडा कर कमरे को फिर बोल्ट करने लगे थे। '' प्लीज ड़ोन्ट क्रिएट एनी सीन। अपने कमरे में चलो, मैं तुम्हारे कठघरे में खडा हो जाऊंगा।'' तुम गिडग़िडाए थे। वीणा उसी दम लौट आई बागेश्वरी। उसे मनाने के लिये निसार को साथ लेकर आये थे तुम। बहुत कुछ समझाते रहे थे निसार अपनी बहन को - '' जो हुआ उसे एक बुरे सपने की तरह भूल जाओ। इसी में तुम दोनों की भलाई है और तुम्हारी बेटी की भी।''

'' कैसे भूल जाऊं? '' बिफर पडी थी वीणा।

'' बताऊं ! फिर से वीणा उठा कर।''

निसार भाई के साथ आई एक महिला पत्रकार ने वीणा से अकेले में कहा, '' मैं भी एक औरत हूँ, इसलिये तुम्हारी पीडा को आसानी से समझ सकती हूँ। मगर सच कहूँ यह कला की दुनिया ही अजीब है, वीणा। पता नहीं कौन सी चीज क़िसका प्रेरणास्त्रोत या उद्दीपक बन जाये! पिकासो को जानती हो न! एक बार एक मॉडल उनसे मिलने आई। उसे देखता रह गया वह। कहते हैं दो घण्टे तक भोगता रहा उसे। बाद में जो पेन्टिंग की वह नायाब थी। तो वह था उसका उत्प्रेरक तत्व! लेखकों से लेकर कल ाकारों, इवन ऋषियों तक में ऐसे उदाहरण भरे पडे हैं लृसे एक आवश्यक बुराई के रूप में लगभग मान लिया गया हे। पश्चिम में तो कोई परवाह भी नहीं करता ऐसी बातों की।''

'' तो क्या एक कलाकार को एक हद के बाद स्वैराचार करने की छूट मिल जानी चाहिये सिर्फ इसलिये कि वह कलाकार

है? ''

'' करीब - करीब ऐसा ही। दीपंकर को भी तुम अगर एक महान कलाकार के रूप में देखना चाहती हो तो इतना कुछ बरदाश्त करना ही पडेग़ा। वो कहावत सुनी है न, लैला को प्यार करो तो उसके कुत्ते को भी प्यार करो।''

कोई तर्क नहीं उतर पा रहा था मानिनी वीणा के गले से। न तुम बाज आए, न वह। पता नहीं वह खुदी थी या बेखुदी, तुमने उसी कमरे में जहां कभी तुमने उस्ताद के पांव पकड क़र आयशा की भीख मांगी थी, कहा, '' आयशा मैं तुम्हें तलाक देता हूँ - तल ाक! तलाक!! तलाक!!!''

'' थू ! थू !! थू !!!'' वीणा ने हंस कर थू थू किया, जैसे नजर उतार रही हो, किस नशे में तुम पण्डित से मुल्ला बन बैठे यकायक? आयशा मर चुकी म्यां दीपंकर। यह जो औरत तुम्हारे सामने खडी है, वीणा है वीणा! अमां, उत्ती कवायद करने की क्या जरूरत है, प्रेमी या पति की निगाह से गिर जाना ही काफी होता है एक हिंदुस्तानी औरत के लिये। मैं ने तुम्हें मां की तरह पाला है, बहन की तरह नेह से नवाजा है, पत्नी बन कर तुम्हारे प्यार पर परवान चढी - आज से नहीं, वर्षों से। यूं ही तुम्हें उजाले में लाने के लिये अंधेरों में गुम नहीं हुई मैं। मुझसे प्यार का ढोंग रचाकर मुसलमान से हिन्दु बनाकर पतिव्रता का लबादा ओढा दिया तुमने, मैं ने जब लबादा हटा कर तुम्हारे आचरण पर टीका - टिप्पणी करनी शुरु की तो चिढक़र मुसलमान की तरह तलाक दे डाला। तुम्हारी हवस किसी एक धर्म की खाल में समा ही नहीं सकती, तुम्हें चार नहीं, चार सौ नहीं, चार सहस्त्र औरतें भी कम पडेंग़ी। वही प्रेरणास्त्रोत है तो बन जाओ सहस्त्रयोनि। मैं इन्तजार कर लूंगी। उम्र और देह की कोई तो हद होगी। सहस्त्रयोनि से कभी तो सहस्त्राक्षु बन कर लौटोगे!''

खैर तुम अपने उजालों में लौट गये, वीणा अपने अंधेरों में। तुम दोनों के अलावा घर में एक तीसरा भी था - काठ की मूरत सी खडी मासूम कला। उफ! ये पहाडियां थी या अभिशप्त अहिल्याएं! ये पनवाडियां थीं या बन्द ताबूत! यह दुनिया थी या बेजान पेन्टिंग! खैर धीरे - धीरे वक्त बीता।

उस दिन जैसे मन का सारा जहर उगल कर शान्त पड ग़यी थी वीणा और शिथिल भाव से तुम्हारे दूसरे पैंतरे की प्रतीक्षा करने लगी, मगर दिन पर दिन बीतते गए और तुम्हारी ओर से कोई वार न हुआ। उलटे इधर तुम्हारे साक्षात्कारों में बाबा की उच्छवसित प्रशंसाएं आने लगीं तो खुद पर पश्चाताप का झीना - झीना आवरण छाने लगा। एक दिन तुम्हारे नाम से कोई पैकेट डाक से मिला। शायद कहीं भूल गये थ और तुम्हारे स्थायी पते के बहाने वीणा के पास आ गया था। तो इसका मतलब अभी भी स्थायी पता यही है और जो बीच में घटित हुआ, वह मात्र दुःस्वप्न! मान को हल्के से सहलाया हो जैसे तुमने। खोलकर लगी देखने। तुम्हारी अखबारी रपटों, चित्रों, वी दी ओ कैसेट्स का पुलिन्दा था, तुम्हारी आत्मकथा की पुस्तक थी और एक सूची थी तुम्हें मिले पुरस्कारों और सम्मानों की। बहुत दिनों या कहें वर्षों से तुम्हें देखा न था, सो सबसे पहले वी सी आर पर कैसेट्स लगा दिये।

तुम्हारी वही मोहिनी मुद्रा, मानो तुम एक पहुँचे हुए महात्मा थे और वह एक समस्याग्रस्त नारी, '' बताइये महात्मन, ऐसे में मैं क्या करूं? ''

तुमने कहा, '' खूंटियों को इतना मत कसो कि तार ही टूट जायें।'' तुमने कहा, '' वीणा को देह मत बनाओ। उसकी आत्मा को खोल दो। साधना से कहो कि तू अपना सीना खोल दे, फजां में दूध घोल दे - दूध! दूध!! दूध!!!

तुमने कहा, '' शब्द की ज्योति से ही विश्व उद्भासित है। एक जीवित शब्द आत्मा को आह्लाद से भर देता है''

तुमने कहा, ब्रह्मनाद और संभोग का चरम - दोनों की आनन्दानुभूति एक है और यह अनुभूति अद्वितीय

स्पेशल ऑफर के साथ

क़ाजल फुट वेयर

हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है

कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)

आशापुरा ज्वैलर्स

सोने-चांदी के गहनों के व्यापारी

शिवाजी रोड, शहाड़ फाटक, उल्हासनहर-४

फोन: ०२५१-२७०९९६२

है। म्यूजिक़ इज ए सोल टू सोल रिफ्लेक्शन!

तुमने कहा, '' प्रकृति स्वायत्त रूप से रिद्मिक नृत्य कर रही है - तुम नृत्यरता, तुम ऊत्सवव्रता तरंगिणी! उसमें एक निश्चित लय या व्यवस्था है । उससे सामंजस्य करो। संगति बिठाओ। आप पाओगे कि आप उस अनहद् नाद को और सृष्टि किछन्द को अनुभूत कर पा रहे हो। आप देखोगे कि सुरों से सुरभि फूट रही है, प्रकाश फूट रहा है।''

बन्द कर दिया वी सी आर, लेकर बैठ गई तुम्हारी आत्मकथा। पूरी पढ ग़ई। उसमें वीणा का जिक्र सिर्फ एक जगह किया गया था, बाकि कहीं नहीं, जैसे न उसके साथ कोई तुम्हारा वर्तामान था, न अतीत और न भविष्य- एक उल्का पिण्ड की तरह जल कर बुझ गया था नाम! खारिज! '' चलो अच्छा ही हुआ,'' वीणा खुद पर हंसी, '' मन के किसी कोने में कोई लोभ था कि तुम्हारा कोई श्रेय स्वीकार मिल गया तो मैं अपने रीतने - बीतने को कुछ तो जस्टीफाइ कर सकूंगी, खुद को खुद के प्रति गुनहगार होने से थोडा तो बचा लूंगी, मगर नहीं! ''

तो हे परमहंस! तुम्हारद आप्त वचनों को ही आदर्श मान कर खुद को फिर से पा लेने की कितनी ही कोशिशें की वीणा ने मगर समय बीत चुका था और सब कुछ गलत होता चला गया। बाप का नाम भी बेच खाया। शराब तक पीने लगी, पीकर टुर्रऽऽ! बेटी कला तक के साथ न्याय न कर पायी। बुत बनती जा रही है बेचारी! वक्त का तकाजा था कि वीणा अग्निवीणा में तब्दील हो जाती मगर बन कर रह गई क्या - महज असाध्य वीणा!

तमाम उम्र का हिसाब मांगती है जिन्दगी! तुम्हारे हिसाब में क्या जायेगा - सीढी और सीढी! और उसके हिसाब में सांप और सांप! वह तुम्हारी सीढी तुम उसके सांप!

जमाने के लिये ये सारे अभियोग व्यर्थ हैं। इतिहास बडी विचित्र वस्तु है, जो कल, बल, छल, संयोग या सहयोग से फॉर फ्रंट पर आ जाता है, वही इतिहास बनता है बाकी सब कूडा। तुम्हारे जैसे लोग ही आज पद, पीठ, पुरस्कार बटोर रहे हैं। तुम इण्डिया टुडे (आज के भारत) हो।

हे आज के इण्डिया! हमें मालूम है, मानपत्र की यह भाषा नहीं है, कम से कम तुम तो इस भाषा (कहें, नाद) के अभ्यस्त नहीं। वह तो पुष्प, अगरु की गन्ध बोझिल हवा में शंख, घण्टे, घडियाल, तुरही और मंत्रों के गहगहाते घमासान में कंचन थाल में नाचती लौ की नीराजना होती है, मगर इन तमाम उल्लासमयी ध्वनियों के आतंक के बीच उस रक्तपंकिल बलि की वेदी के दोनों ओर कटकर तडपते बलि - पशु की डूबती धडक़नों का भी एक मौन नाद होता है, वह भी एक मानपत्र ही होता है, कोई सुने न सुने, बांचे न बांचे।

नहीं, अब न कोई रार - तकरार न कोई आरोप, न उलाहना! सात्र ने कहा था, पति - पत्नी दो नहीं बल्कि एक ही सत्ता हैं, एक को दूसरे में विसर्जित हो जाना पडता है। चलो ठीक है, विसर्जित हो गई वीणा दीपंकर में। घुल गई रंजक साबुन की तरह अपना सारा रंग तुम पर चढा कर। उसे जलाओगे या दफनाओगे? जला ही देना, नामो - निशान ही मिट जाये। और चिता के लिये लडकियां? याद है, कामिनी कुंज जहां तुम दोनों का प्यार अंकुरित हुआ था। काफी होगा वह कामिनी - कुंज चिता के लिये।

- तुम्हारी वीणा

पुनःश्च - सोचा था यह मानपत्र तुम्हें भेज दूंगी। इस बीच तुम आ गये। भेज न सकी। फिर सोचा, जाते समय तुम्हें हाथों - हाथ दे दूंगी। दे न सकी। कारण? इस बीच वह विस्फोट हो गया।

यह तो मालूम था कि तुमने फिर कोई शादी रचा ली है, मगर यह भी कोई बात नहीं। दिक्कत तो तब हुई जब तुम अचानक आ धमके और मुझसे कसम तोडक़र बोले, '' शादी का यह कतई मतलब नहीं है कि मैं तुम्हारी और कला के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से भागना चाहता हूँ। चाहता हूँ, उसकी शादी हो जाये। तुम उसके ज्यादा करीब रही हो, पहल तुम्हीं करो तो अच्छा हो।''

मैं ने बहुत सोचा, फिर तुम्हारी बात बाजिब लगी। कला कहीं बाहर जाने को तैयार हो रही थी कि पिछले दरवाजे से उसे पुकारा, '' बेटी, तुमसे एक बात कहनी थी।''

कला हमेशा की तरह मौन रही। धीरे - धीरे मैं अपने मकसद पर आयी, '' बेटी! मेरी जिन्दगी का कुछ भरोसा नहीं। तुम जवान हो चुकी हो। हम बूढे। मैं जीते - जी तुम्हारे हाथ पीले कर देना चाहती हूँ। तुम्हें कोई लडक़ा पसन्द हो तो बता दो, वरना हम खुद ढूंढ लेंगे।''

कला ने जैसे सुना ही नहीं। वह चुपचाप जूती पहनती रही, बैग सजाती रही फ़िर चल पडी, मगर उसे रुकना पडा, दूसरे दरवाजे पर तुम खडे थे रास्ता रोककर। एक दरवाजे पर मां थी, दूसरे पर पिता, दोनों तरफ से घेर रहे थे दोनों, जैसे वह कोई सिकार हो। ठिठक गई मां की ओर मुडी, '' इस खानदान की एक गौरवशाली परंपरा सुनी है, मां(पता नहीं क्यों सिखलाने पर भी उसने मम्मी, पापा नहीं कहा कभी!) कि बुजुर्ग जाते जाते अपनी सन्तानों को मूरत गढने की कला सिखाना नहीं भूलते। यह भी कुछ वैसा ही आयोजन है क्या?''

''यही समझ लो।''

'' कौन सी मूरत छिन्नमस्ता की?''

'' क्या कह रही हो?'' मैं जो पहली बार उसके खुलकर बोलने पर खुश हुई थी, सहसा चौंक पडी।

'' तो सुन लो मां, मैं वह मूरत गढने नहीं जा रही तुम्हारी तरह।''

लगा कला ने बाबा की पखावज उठा ली हो और किले की पहली ईंट गिरी हो हमारे सीने पर, ढम्म!

'' वह विवाह प्रथा, जो किसी को बीहड - बंजर बना दे उसे मैं जूती की नोक पर रखती हूँ, थूकती हूँ महानता के चोंचलों पर, कला के नाम पर चलाए जा रहे तमाम ढकोसलों पर। आय हेट! आय हेट!! आय हेट सच ऑल हीनियस हिप्पोक्रेसीज, दीज मेल एण्ड फीमेले शोवेनिज्म्स!''

'' पागल मत बनो बेटी! जरा सोचो, तुम्हारी सामाजिक सुरक्षा का क्या होगा? कहीं ऊंचे - नीचे पांव पड ग़या तो क्या होगा? '' प्राणपण से मैं ने रोकना चाहा उस विध्वंस को। '' सुरक्षा? यह तुम बोल रही हो मां? ऊंचे - नीचे पांव ? च्च! च्च्च!! इतनी फिक्र! नाहक दुबली हुई जा रही हो मां। जब जिसके साथ जी आयेगा रह लूंगी, जिसके साथ मन करेगा सो लूंगी। मुझे अहसास हो गया है कि देह ही ठोस सत्य है बाकी कला, प्रतिभा, सृजन देह की ऊर्जा का विस्तार! मुझे तुम दोनों की तरह न महान बनने का लोभ है, न अमर बनने का! सुनो मां, मैं अपनी एंटिटी से किसी भी खुदगर्ज को खिलवाड नहीं करने दूंगी - चाहे वह मां हो या बाप हो, पति हो या सन्तान हो या एक्स, वाई, जेड़, गैर कोई।''

बुर्जियां, मेहराबें, अटारियां, कंगूरे ही नहीं किले की एक - एक ईंट, एक - एक पत्थर ध्वस्त हो चुका था और उसकी जगह उभर कर आया था, वह क्या था! कितना हौलनाक! मैं सन्न रह गई थी।

तुम कांपे और लडख़डा कर गिर पडे।

ख़ट - खट जूतियां खटकाती हुई दरवाजे से बाहर निकल गई कला। पीछे मुडक़र ताका भी नहीं।

जानते हो, पता नहीं क्यों, इन बर्बादियों के बावजूद मुझे अपनी कला पर नाज आ रहा था।

याद आया सैंकडों वर्ष पहले सेंट अगस्टाइन ने कहा था, '' मैं ने फूलों से निकलती हुई ध्वनियां सुनी हैं और वे ध्वनियां देखी हैं जो जल रही थीं।''

-संजीव

नसीब का लिखा...

किसी एक गांव में बहुत ज्ञानी पंडित रहा करता था। पंडित आजू बाजू के सारे ही गावों मैं बहुत प्रख्यात था और इसी वजह से धनवान भी। पंडित का परिवार ज्यादा बड़ा नहीं था। पंडित अपनी पत्नी के साथ अपने बहुत बड़े घर में अकेला रहता था क्योंकि पंडित को कोई बेटा था नहीं और एक बेटी थी जिसका विवाह पास के गांव वाले एक श्रीमंत लड़के से हो चुका था।

पंडित ने शादी से पहले अपने होनेवाले दामाद की अच्छे से जांच पड़ताल की थी और अपनी बेटी का भविष्य भी ठीक से पढ़ा था तब जाकर उसने बेटी की शादी की थी। लेकिन चंद सालो में ही पंडित का दामाद बुरी आदतों के चंगुल में फंस गया। जुआ और शराब की बुरी लत ने उन्हें सड़क पर लाकर रख दिया था।

अपने बेटी की ऐसी दुर्दशा देखकर पंडित की पत्नी काफी दुखी होती थी और अक्सर पंडित को कहा करती थी तुम जाकर उनकी मदद कर आओ। पंडित हमेशा अपनी बीवी को यह कहकर उनकी मदद करने के लिए मना कर देता था कि अभी कुछ समय तक उनका बुरा वक्त चलना है। हम चाहे कितनी ही कोशिश कर ले जो उनके नसीब में नहीं है वह उन्हें नहीं मिल पाएगा।

पंडित की ऐसी बातों से उसकी पत्नी काफी दुखी हो जाया करती थी और मन ही मन सोचती थी कि,' कैसा स्वार्थी पिता है अपनी बेटी को इतने कष्टों में देखकर भी उसकी मदद करने के लिए मना करता है। आखिर भगवान ने जो इतना सारा धन धान्य दिया है उसका क्या करेंगे? हमें कोई और औलाद भी तो है नहीं ले देकर एक यही बेटी है और उसके लिए भी कुछ नहीं करेंगे तो किसके लिए करेंगे?'

पंडित ऐसा नहीं सोचता था। ऐसा नहीं है कि पंडित अपनी पुत्री से प्रेम नहीं करता था लेकिन उसने अपनी पुत्री की कुंडली इतने अच्छे से पढ़ी थी और वह यह पहले से ही जानता था की वह चाहे किसी भी लड़के से शादी करती लेकिन उसके जीवन में यह समय आने वाला ही था और बिना इसे भुगते उसको छुटकारा नहीं मिलने वाला था। एक दिन खाने पीने के लिए भी मोहताज हो चुके पंडित के बेटी और दामाद उसके घर पर आए। पंडित ने और उसकी बीवी ने दोनों का खूब आदर सत्कार किया और खूब अच्छा खाना खिलाया। बेटी और दामाद की पंडित से सहायता मांगने की हिम्मत ना हुई इसलिए वह बिना बोले ही वापस अपने घर को लौटने लगे।

लेकिन मां तो मां होती है पंडिताइन से रहा नहीं गया और बिना पंडित की इजाजत के उसने चोरी छुपे बूंदी के लड्डू बनाकर उसमें सोने के सिक्के रख दिए और बेटी और दामाद को दे दिए ताकि बेटी और दामाद की कुछ आर्थिक सहायता हो सके। पंडिताइन यह भी जान गई थी कि बेटी और दामाद शर्म के मारे उनसे मदद नहीं मांग रहे थे इसलिए उसने बेटी और दामाद को भी लड्डुओं में छिपे सिक्कों के बारे में कुछ नहीं बताया। 'जाहिर सी बात है कि जब वो लोग घर पर जाकर लड्डू खाएंगे तो उन्हें उसमें सोने के सिक्के मिल जाएंगे इस तरह बिना उनके मांगे ही उन तक मदद पहुंच जाएगी' सोच कर पंडिताइन मन ही मन अपने बेटी की मदद करने के लिए खुश होने लगी।

पंडित के दामाद और बेटी उन दोनों का आशीर्वाद लेकर अपने घर के तरफ रवाना हो गए। उन दिनों गाड़ियां तो होती नहीं थी घोड़ा गाड़ी या बेल गाड़ियां चलती थी। पैसे ना होते तो और चीजों की लेनदेन से भी व्यवहार होता था। बेटी और दामाद का गांव पंडित के घर से कोसों दूर था, फिर भी पैसों की कमी के चलते वह चलकर अपने गांव की तरफ निकल पड़े। थोड़े दूर ही चले थे कि पंडित की बेटी के पैर में मोच आ गई और अब उसको चलना भी मुश्किल हो गया।

पंडित के दामाद ने जब देखा कि उसकी बीवी अब बिल्कुल चलने में सक्षम नहीं है तो उसने एक टांगा अपने घर तक किराए पर ले लिया। दोनों पति पत्नी टांगे में बैठकर घर तक पहुंच गए लेकिन टांगे वाले को देने के लिए उनके पास पैसे थे नहीं इसलिए पंडिताईनने जो बूंदी के लड्डू उन्हे दिए थे वही किराया के तौर पर उस टांगे वाले को दे दिए।

टांगेवाला बूंदी के लड्डू को लेकर वहां से चला गया। टांगेवाला अपने घर की तरफ जा रहा था तब उसे एक हलवाई की दुकान दिखी। उसने सोचा कि थोड़े से बूंदी के लड्डूओ से मेरे घर के लोगों का पेट थोड़ी भरनेवाला है! इससे अच्छा मैं इन बूंदी के लड्डूओ को बेचकर उनसे कुछ चावल खरीद लेता हूं। टांगे वाले ने बूंदी के लड्डू हलवाई को बेच दिए।जिस गांव में वह हलवाई रहता था उसी गांव में एक आदमी ने अपने घर पर पूजा रखी थी और उसी पंडित को उस पूजा के लिए बुलवाया था। पूजा में लगने वाले प्रसाद के लिए उस आदमी ने उसी हलवाई से बूंदी के लड्डू लिए जहां पर उस टांगे वाल ने बेचे थे। हलवाई ने भी उस आदमी को टांगेवाले से खरीदे हुए लड्डू ही पहले दिए ताकि वह खराब ना हो जाए क्योंकि वह नहीं जानता था यह लड्डू कब बने हैं।

पूजा खत्म होने पर दक्षिणा और बूंदी के लड्डू लेकर जब पंडित अपने घर आया और खाना खाने बैठा तो प्रसाद में लाए बूंदी के लड्डू खाते वक्त लड्डू से सोने का सिक्का निकला! इस घटना को देखकर पंडिताइन की आंखों से आंसू बहने लगे। पंडित ने जब पंडिताइन से उसके रोने का कारण पूछा तो पंडिताइन ने पंडित को सब कुछ बताया और पंडित से उनकी बातों पर भरोसा ना करने के लिए माफी मांगी।

पंडित ने पंडिताइन के आंसू पोछे और कहा कि तुम्हारी तरह मैं भी हमारी बेटी को बहुत प्रेम करता हूं। लेकिन अगर हम उसकी अब मदद करते हैं तो दामाद हमसे हमेशा ऐसे ही मदद की अपेक्षा रखेगा और अपनी बुरी आदतों को कभी नहीं छोड़ेगा। पंडिताइन भी अब पंडित की बातों से सहमत हो गई। दो-तीन महीने बीत गए। पंडित के दामाद और बेटी फिर से एक बार उसके घर आए और इस बार उनकी परिस्थिति पहले से बेहतर थी क्योंकि पिछली बार खाली हाथ जाने के बाद दामाद ने नया काम शुरू किया था और अपनी सारी बुरी आदतें भी छोड़ दी थी।

-Pravin Kate

पूजा खत्म होने पर दक्षिणा और बूंदी के लड्डू लेकर जब पंडित अपने घर आया और खाना खाने बैठा तो प्रसाद में लाए बूंदी के लड्डू खाते वक्त लड्डू से सोने का सिक्का निकला! इस घटना को देखकर पंडिताइन की आंखों से आंसू बहने लगे। पंडित ने जब पंडिताइन से उसके रोने का कारण पूछा तो पंडिताइन ने पंडित को सब कुछ बताया और पंडित से उनकी बातों पर भरोसा ना करने के लिए माफी मांगी। पंडित ने पंडिताइन के आंसू पोछे और कहा कि तुम्हारी तरह मैं भी हमारी बेटी को बहुत प्रेम करता हूं। लेकिन अगर हम उसकी अब मदद करते हैं तो दामाद हमसे हमेशा ऐसे ही मदद की अपेक्षा रखेगा और अपनी बुरी आदतों को कभी नहीं छोड़ेगा। पंडिताइन भी अब पंडित की बातों से सहमत हो गई।

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

3 Austrian Diamond
Jewellery Sets
(3AUD2)
M.R.P. : ₹1,999
Only At
₹499

PACK OF 5 V NECK T-SHIRT
M.R.P.
OFFER PRICE ₹599

NIRLON
12 CAVITY
NON- STICK APPAM PATRA
WITH LONG HANDLE & LID
MRP ₹999/-
SHOP NOW
₹399/-

10 BEDSHEET SETS
+ 15 PILLOW COVERS
MEGA COMBO
MRP
SHOP NOW
₹1,999/-

Easy Go Stylish
LEATHERITE TROLLY BAG
MRP
SHOP NOW
₹1,499/-

मसालों की रानी इलायची

इलाइची, भारत समेत पूरी दुनिया में लोकप्रिय है. इसका यूज अलग-अलग व्यंजनों में किया जाता है. यह अपने औषधीय गुणों के लिए भी मशहूर है. भारत में केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु में इलायची की खेती बड़े पैमाने पर की जाती है, इलाइची भारतीय व्यंजनों में यूज होने वाला एक जरूरी और महंगा मसाला है.

भारत के मसालों की प्रसिद्धि पूरी दुनिया में है. कई राज्यों में अलग-अलग मसालों की खेती बड़े पैमाने पर होती है. इन सबके बीच किसान इलायची की खेती से भी बढ़िया मुनाफा कमा रहे हैं. इसकी बाजार में काफी अच्छी कीमत मिलती है. इलायची की खेती करके किसान भाई काफी अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं. भारत में इलायची की खेती प्रमुख रूप से की जाती है. इसके अलावा इसका उपयोग मिठाई में खुशबू के लिए किया जाता है.

यदि सही तरीके से इसकी खेती की जाए तो इससे काफी अच्छा लाभ कमाया जा सकता है. बाजार में हमेशा इसका मांग बनी रहेती है. इसे ध्यान में रखकर किसान इस खरीफ सीजन में इलायची की आसान तरीके से खेती कर अच्छा उत्पादन और मुनाफा दोनों ले सकते हैं. इलायची, जिसे लोकप्रिय रूप से मसालों की रानी के रूप में जाना जाता है, हमारा वार्षिक उत्पादन लगभग ४०००० मीट्रिक टन है और इसका लगभग ६०% से अधिक देशों को निर्यात किया जाता है जिससे लगभग ६० मिलियन रुपये की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है। इलायची का उपयोग भोजन, कन्फेक्शनरी, पेय पदार्थ और शराब की विभिन्न तैयारियों को स्वादिष्ट बनाने के लिए किया जाता है।

मिट्टी और जलवायु

इलायची की खेती के लिए दोमट मिट्टी वाले घने छायादार क्षेत्र आदर्श होते हैं। यह फसल ६०० से १५०० मीटर की ऊंचाई पर उगाई जा सकती है। भारी हवाओं के संपर्क में आने वाले क्षेत्र अनुपयुक्त हैं। इसके खेत में जल निकासी की पर्याप्त व्यवस्था होनी चाहिए। यह जंगल की दोमट मिट्टी में उगाया जाता है जो आमतौर पर ५.० - ६.५ की पीएच सीमा के साथ प्रकृति में अम्लीय होती है। जून से दिसंबर तक का मौसम इसके उत्पादन के लिए बहुत अच्छा माना जाता है।

इलायची की प्रमुख किस्में

Malabar : मुदिगरी १, मुदिगरी २, PV १, PV-३, ICRI १, ICRI 3, TKD 4, IISR सुवर्ण, IISR विजेता, IISR अविनाश, TDK - ११, CCS - १, सुवासिनी, अविनाश, विजेता - १, अप्पानगला २, जलनि (Green gold), ICRI ८. इसकी बुवाई पुराने पौधों के सकर्स या बीजों का उपयोग करके किया जाता है। अच्छी तरह से सड़ी हुई गोबर की खाद, ल कड़ी की राख और जंगल की मिट्टी को बराबर मात्रा में मिलाकर क्यारियां तैयार करें। बीजों/सकर्स को क्यारियों में बोयें और महीन बालू की पतली परत से ढक दें।

इलायची की पौध उगाना

बीज क्यारियों को मल्चिंग और छायां प्रदान करनी जरुरी होती है। क्यारियों को नम रखना चाहिए लेकिन क्यारियों बहुत गीला नहीं होना चाहिए। अंकुरण आमतौर पर बुवाई के एक महीने बाद शुरू होता है और तीन महीने तक जारी रहता है। पौध को द्वितीय नर्सरी में ३ से ४ पत्ती अवस्था में रोपित किया जाता है।

दूसरी नर्सरी का निर्माण

दूसरी नर्सरी का निर्माण करते समय ये ध्यान रखे की जिस जगह आप नर्सरी का निर्माण कर रहे है उस जगह क्यारियों के ऊपर छाया अवशय होनी जरुरी है। पौधों की रोपाई २० x २० सेमी की दूरी पर करें। २० x २० सेमी आकार के पॉलीबैग का उपयोग किया जा सकता है। सकर आमतौर पर गैप फिलिंग के लिए उपयोग किए जाते हैं लेकिन सकर बड़ी संख्या में उपलब्ध नहीं हो सकते हैं। इसलिए, भारतीय मसाला अनुसंधान संस्थान, इलायची अनुसंधान केंद्र, अप्पंगला द्वारा विकसित एक तीव्र क्लोनल गुणन तकनीक बड़ी संख्या में गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री के उत्पादन के लिए त्वरित, विश्वसनीय और किफायती साबित हुई है।

इस विधि के लिए चुनी गई जगह का ढलान हल्का होना चाहिए और उसके आस-पास पानी का स्रोत होना चाहिए। ४५ सेमी चौड़ाई, ४५ सेमी गहराई और किसी भी सुविधाजनक लंबाई की खाइयाँ ढलान के पार या समोच्च के साथ १.८ मीटर की दूरी पर ली जा सकती हैं। ऊपर की २० सेंटीमीटर गहरी मिट्टी को अलग से खोदा जाता है और खाई के ऊपरी हिस्से में ढेर कर दिया जाता है।

निचले २५ सेमी की खुदाई की जाती है और खाइयों के निचले हिस्से में लाइन के साथ ढेर लगा दिया जाता है। शीर्ष मिट्टी को समान भागों के साथ मिलाया जाता है, ह्यूमस समृद्ध जंगल की मिट्टी, रेत और पशु खाद के समान अनुपात के साथ मिलाया जाता है और मिट्टी के मिश्रण को बनाए रखने के लिए मल्चिंग की सुविधा के लिए शीर्ष पर ५ सेमी की गहराई छोड़कर वापस भर दिया जाता है। मार्च-अक्टूबर के दौरान खाइयों में ०.६ मीटर की दूरी पर सकर, प्रत्येक में एक बड़ा टिलर और एक बढ़ता हुआ युवा शूट होता है। ६० दिनों के अंतराल पर ६ विभाजित खुराकों में १००:५०:२०० किलोग्राम एनपीके/हेक्टेयर की उच्च उर्वरक खुराक सहित २५० ग्राम/पौधे पर नीम की खली के साथ नियमित खेती की जानी चाहिए। सप्ताह में कम से कम दो बार सिंचाई करनी चाहिए।

खेत की तैयारी

६० सेंमी x ६० सेंमी x ६० सेंमी आकार के गड्ढे खोदकर खाद और ऊपरी मिट्टी से भर दें। ढालू क्षेत्रों में कंटूर प्लांटिंग की जा सकती है। ये विधि १८-२२ महीने पुराने पौधों की रोपाई के लिए उपयोग किया जाता है। बुवाई करते समय पौधों से पौधों के बीच की दुरी का अवश्य ध्यान रखे। बड़ी प्रकार की पौध के लिए २.५ x २.० m. की दुरी रखें और छोटे प्रकार २.० x १.५ m. की दुरी रखें।

सिंचाई प्रबंधन

मुख्य रूप से इलायची की खेती मानसून के मौसम में की जाती है। फसल की वर्षा से ही जल आपूर्ति हो जाती है। अगर गर्मी और वर्षा के बीच का समय लम्बा हो जाता है तो अच्छी ऊपज पाने के लिए स्प्रिंकल के माध्यम से सिंचाई अवश्य करें।

खाद और उर्वरक प्रबंधन

फसल में रोपाई से पहले १० टन प्रति एकड़ गोबर की खाद या कम्पोस्ट का इस्तेमाल करें। उर्वरक की बात करें तो अधिक ऊपज प्राप्त करने के लिए फसल में ३० -३५ किलोग्राम नाइट्रोजन, ३० -३५ किलोग्राम फॉस्फोरस और ६० -६५ किलोग्राम पोटाश प्रति एकड़ की दर से खेत में डालें। उर्वरकों को दो बार बराबर मात्रा में फसल में डालें। एक उर्वरक के भाग को जून या जुलाई में खेत में डालें, उर्वरक ड़ालते समय ये अवश्य ध्यान रखें की खेत में प्रचुर मात्रा में नमी हो। दूसरा उर्वरक का भाग अक्टूबर या नवंबर के महीने में डालें।

फसल में किट प्रबंधन

थ्रिप्स के रोकथाम के लिए निचे दिए गए किसी भी

इलायची का पौधा १ से २ फीट लंबा होता है. इस पौधे का तना १ से २ मीटर तक लंबा होता है इलायची के पौधे की पत्तियां ३० से ६० सेमी तक लंबाई की होती है व इनकी चौड़ाई ५ से ९ सेंटीमीटर तक होती है.इलायची दो प्रकार की होती है. एक हरी इलायची और दूसरी भूरी इलायची होती है. भारतीय व्यंजनों में भूरी इलायची का उपयोग बहुत किया जाता है. इसका उपयोग मसालेदार खाने को और अधिक स्वादिष्ट बनाने और इसका स्वाद बढ़ाने के लिए किया जाता है. वहीं छोटी इलायची का उपयोग मुखशुद्धि के लिए पान में किया जाता है. इसके साथ ही पान मसालों में भी इसका उपयोग होता है. चाय बनाने में भी इसका उपयोग किया जाता है. इस कारण दोनों प्रकार की इलायची की मांग बाजार में बनी रहती है. यदि आप इल ायची के पौधों को खेत की मेड पर लगाना चाहते हैं तो इसके लिए आपको एक से २ फीट की दूरी पर मेड बनाकर लगाना चाहिए. वहीं इलायची के पौधों को गड्ढों में लगाने के लिए २ से ३ फीट की दूरी रखकर पौधा लगाना चाहिए. खोदे गए गड्ढे में गोबर खाद व उर्वरक अच्छी मात्रा में मिला देना चाहिए.

इलायची के पौधों को खेत में लगाने से पहले इसे नर्सरी में तैयार किया जाता है. एक हैक्टेयर में नर्सरी तैयार करने के लिए एक इल ायची इलायची का बीज की मात्रा पर्याप्त रहती है. बारिश के मौसम में इसके पौधों को तब लगाना चाहिए जब उनकी लंबाई जब एक फीट नहीं हो जाए. रोपाई के दो साल बाद इसमे इसमे फल लगने लगते हैं. फल लगने के बाद हर १५-२५ दिनों के अंतराल पर तुड़ाई की जाती है. इस दौरान कोशिश करें उन इलायची की तुड़ाई करें जो पूरी तरह से पक चुके हो.जब इलायची पूरी तरह से सूख जाए तो इसे हाथों या कॉयर मैट या तार की जाली से रगड़ा जाता है. फिर उन्हें आकार और रंग के अनुसार छांट लिया जात छांटने की प्रकिया के बाद किसान इसे बाजार में बेचकर बढ़िया मुनाफा कमा सकते हैं. प्रति हैक्टेयर१३५ से १५० किलोग्राम तक इलायची की उपज हासिल की जा सकती बाजार में इलायची के भाव ११०० से लेकर २००० हजार रुपए प्रति किलोग्राम के बीच रहते हैं. ऐसे में किसान सालाना ३ लाख तक का मुनाफा आसानी से हासिल कर सकता है.

फसल में रोग प्रबंधन

मोज़ेक या कट्टे रोग यह इलायची की उत्पादकता को प्रभावित करने वाला एक गंभीर रोग है। यह बनाना एफिड द्वारा फैलता है जिसे मिथाइल डेमेटॉन २५ ईसी या डायमेथोएट ३० ईसी या फॉस्फोमिडोन ८६ डब्ल्यूएससी के साथ २५० मि.ल ी./एकड़ पर नियमित छिड़काव करके नियंत्रित किया जा सकता है।

कटाई और प्रसंस्करण

इलायची के पौधे आमतौर पर रोपण के दो साल बाद फल देने लगते हैं। अधिकांश क्षेत्रों में कटाई की चरम अवधि अक्टूबर-नवंबर के दौरान होती है। १५-२५ दिनों के अंतराल पर तुड़ाई की जाती है। उपचार के दौरान अधिकतम हरा रंग

प्राप्त करने के लिए पके कैप्सूल को काटा जाता है।

कटाई के बाद, कैप्सूल को या तो ईंधन भट्ठे में या बिजली के ड्रायर में या धूप में सुखाया जाता है। यह पाया गया है कि ताजी कटी हुई हरी इलायची के कैप्सूल को सुखाने से पहले १० मिनट के लिए २इ वाशिंग सोडा में भिगोने से सुखाने के दौरान हरे रंग को बनाए रखने में मदद मिलती है।

जब ड्रायर का उपयोग किया जाता है, तो इसे १४ से १८ घंटे के लिए ४५ से ५० डिग्री ए पर सुखाया जाना चाहिए, जबकि भट्ठा के लिए, ५० से ६० डिग्री ए पर रात भर सुखाने की आवश्यकता होती है। सुखाने के लिए रखे गए कैप्सूल को पतला फैलाया जाता है और एक समान सुखाने को सुनिश्चित करने के लिए बार-बार हिलाया जाता है। सूखे कैप्सूल को हाथों या कॉयर मैट या तार की जाल ी से रगड़ा जाता है और किसी भी बाहरी पदार्थ को हटाने के लिए फटक दिया जाता है। फिर उन्हें आकार और रंग के अनुसार छांटा जाता है, और भंडारण के दौरान हरे रंग को बनाए रखने के लिए काले पॉलीथीन बैग में रखा जाता है।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें।
सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं।
प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।
आप अपनी रचना ई-मेल एवं वॉटसअप *(whatsup)* द्वारा भेज सकते हैं।
स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।
किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. ,
Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: (W) 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	50,000/-
2.	Back inside full page	Colour	40,000/-
3.	Inside full page	Colour	25,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount

1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532